॥२१७॥

॥ रामकथा ॥

मोरारिबापू

मानस-सुकरात

एथेन्स (ग्रीस)

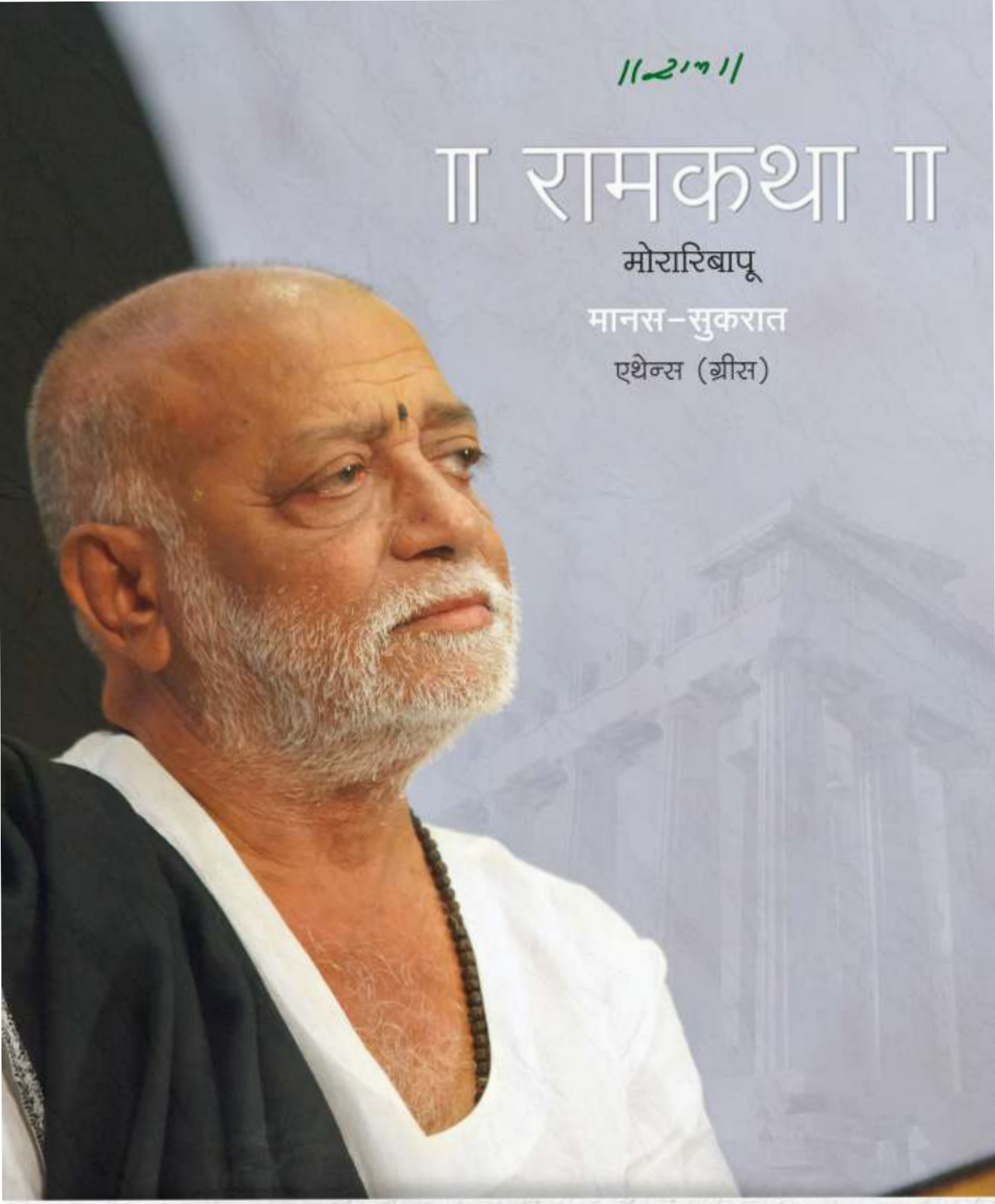

सुकृत पुंज मंजुल अलि माला । ग्यान बिराग बिचार मराला ।।
अरथ धरम कामादिक चारी । कहब ग्यान बिग्यान बिचारी ।।

।। **रामकथा** ।।
मानस-सुकरात

मोरारिबापू
एथेन्स (ग्रीस)
दिनांक : २३-७-२०१६ से ३१-७-२०१६
कथा-क्रमांक : ७९८

प्रकाशन :
मार्च, २०१८

प्रकाशक
श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट,
तलगाजरडा (गुजरात)
www.chitrakutdhamtalgajarda.org

कोपीराईट
© श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट

संपादक
नीतिन वडगामा
nitin.vadgama@yahoo.com

रामकथा पुस्तक प्राप्ति सम्पर्क-सूत्र :
ramkathabook@gmail.com
+91 704 534 2969 (only sms)

ग्राफिक्स
स्वर एनिम्स

प्रेम-पियाला

मोरारिबापू ने एथेन्स(ग्रीस) में सोक्रेटिस की बड़ी विचारवान भूमि पर दिनांक २३-७-२०१६ से ३१-७-२०१६ दरमियान रामकथा का गान किया। 'मानस-सुकरात' विषय पर हुई इस कथा में बापू ने विचार की विभूति सोक्रेटिस के विचारों के साथ 'मानस'के प्रसंगों-पात्रों और गोस्वामीजी के वक्तव्यों की कहां-कहां संगति है उसको उद्घाटित किया।

सुकृत पुंज मंजुल अलि माला।
ग्यान बिराग बिचार मराला।।

'बालकांड' की इस चौपाई के उत्तरार्ध पर अपने विचार को केन्द्रित करते हुए बापू ने कहा कि तुलसी ने तीन हंस गिनाये। पहला ज्ञान, जिसकी बात सुकरात ने कही। दूसरा बिराग, जिसकी बात सुकरात ने कही। और तीसरा बिचार मराला, जिस विचार की बात सुकरात ने कही। ज्ञान, विराग और विचाररूपी मराल-हंस की विभिन्न कोटि का विशिष्ट परिचय भी बापू ने दिया कि ज्ञान हंस है, विराग राजहंस है और विचार है परमहंस।

महावीर स्वामी ने बताये साधुपुरुष के लक्षणों के परिप्रेक्ष्य में बापू ने सुकरात को ग्रीस के महावीर का दर्जा भी दिया और कहा कि आप महावीर में हनुमान जोड़ो या तीर्थंकर, आप स्वतंत्र है। मेरी अंत:करण प्रवृत्ति में सुकरात महावीर है। वह आदमी के चेहरे पर प्रसन्नता का तेज है। चांद की शीतलता है। मणि की कांति है। सूर्य की प्रभा है। हाथी का स्वाभिमान है। सिंह का पराक्रम है। आकाश का निरालंबपना है। पवन की असंगता है। वृषभ की शालीनता है। मृग के नेत्र है। क्या नहीं है सुकरात में?

'सुकरात का मंत्र कौन-सा?' ऐसे एक श्रोता के प्रश्न के उत्तर में बापू ने कहा कि महापुरुषों के मंत्रों की खबर नहीं मिलती। सुकरात का मंत्र था विचार। मंत्र मानी विचार। सुकरात मंत्रों की मूर्ति है। उनके पास विचार है। बापू ने सुकरात के कई विचारों के संदर्भ में भी अपना दर्शन प्रकट किया। यद्यपि बापू ने कहा कि विचार एथेन्स के होंगे, प्रस्तुति तलगाजरडी होगी। बापू ने भारतीय दर्शन के साथ मिलते-जुलते सुकरात के कई विचारों का विशद विश्लेषण किया। बापू का कहना हुआ कि जैसे माँ का दूध हम पी लेते हैं ऐसे सुकरात के सरल सूत्र जो कभी वेद से भी छू लेता है; कभी 'वाल्मीकि रामायण' में दिखता है; कभी महावीर की वाणी में नज़र आता है। ज्ञान-विराग-विचार के रूप में 'मानस' के साथ जुड़ जाता है।

सुकरात की महिमा करते हुए बापू ने अपने अंदाज़ में कहा कि सुकरात को बराबर समझ लोगे तो रोज आप अपने भीतर को कहोगे, सुखरात; सुखमयी रात। सुकरात हमारे जीवन में सुखरात पैदा कर सकता है। सुखरात मानी एक विश्राम। सुकरात को अंजलि देने हेतु हुई इस रामकथा में बापू की व्यासपीठ से यूं नव दिन की विचारयात्रा हुई।

– नीतिन वडगामा

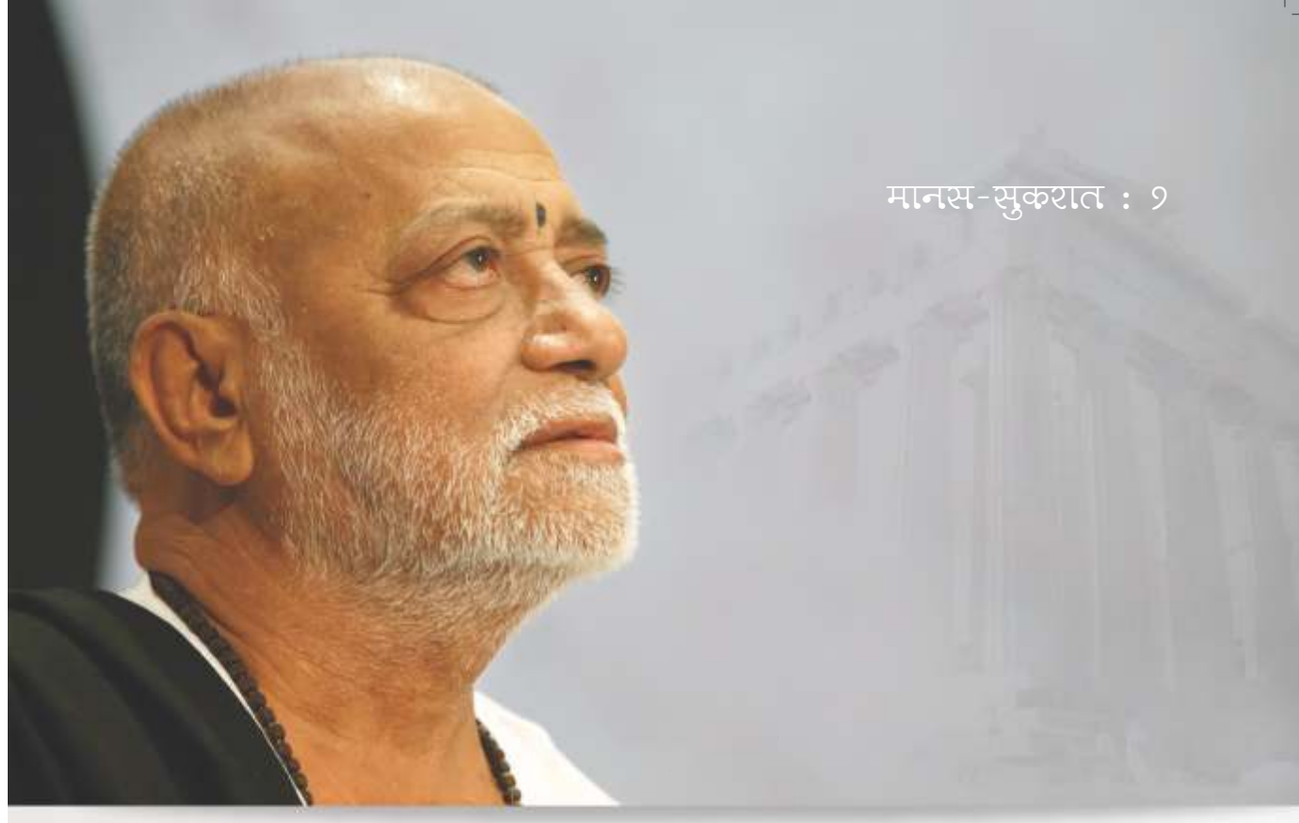

ज्ञान हंस है, विराग राजहंस है और विचार है परमहंस

सुकृत पुंज मंजुल अलि माला । ग्यान बिराग बिचार मराला ।।
अरथ धरम कामादिक चारी । कहब ग्यान बिग्यान बिचारी ।।

बाप! परमात्मा की बिलकुल अहेतु कृपा से हम सब आज एक महान ज्ञानी, जो पूरी ज़िंदगी कहता रहा कि मैं कुछ नहीं जानता, इसलिए ही एक देवी ने कह दिया था कि कुछ नहीं जानता इसलिए सबकुछ जानता है। विचारवान अस्तित्व की एक व्याख्या इस भूमि पर अवतरित हुई। जिसको हम सोक्रेटिस कहते हैं, सुकरात कहते हैं। बड़ी विचारवान भूमि पर हम आये हैं। दिल से कहता हूं, बहुत प्रसन्नता होती है। एथेन्स की सोक्रेटिस की भूमि पर मेरी व्यासपीठ आप सबका स्वागत करती है। मेरे परम स्नेही लोर्ड डोलरभाई पोपट, आपका पूरा परिवार। आपने भी कथा का आयोजन किया। आपके ज्येष्ठ पुत्र ने भी एक कथा का आयोजन किया। और जब वो तेरह साल का था तब वो लंडन की बहुत बड़ी कथा के आयोजन में जुड़ा था तब से मुझे लग रहा था, इस लड़के में कुछ है। डोलर की फोरम है उसमें। वो पावन ने इस कथा का सुंदर आयोजन किया है। मैं बहुत प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। आपका तीसरा बेटा वो भी जुड़ गया है इस व्यवस्था में। पावन के कुछ विदेशी फ्रेन्ड्स भी जुड़ गये हैं। सबके प्रति मैं बहुत शुभकामना व्यक्त करता हूं। मेरी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। पावन ने स्वयं कहा था। मेरे मन में तो कई बातें होती है। सबके मन में कई बातें होती है। लेकिन पावन ने एक बार मुझे कहा कि 'बापू, एथेन्स में सुकरात की भूमि पर कथा नहीं हो सकती?' मैंने कहा, तूने मेरे मन की बात की। और उसने ये बीड़ा उठाया। अपने पैरों पर, अपने माता-पिता का आशीर्वाद लेकर, अपने भाईयों का सहयोग लेकर, अपने युवा मित्रों का और आप बुज़ुर्गों का आशीर्वाद लेकर इस कथा का आयोजन किया। तो बीज तो पड़ा था। और पानी सिंचा पावन ने भाव में। आज कोंपलें फूटी। हम सभी यहां कथा में उपस्थित है।

ये मेरे सब विचार है। पूरा हो न हो अल्लाह जाने। अभी मुझे कथा लेबेनोन में करनी है, खलील जिब्रान को सुनानी है। कितना बड़ा महापुरुष! तो एक कथा हो तो मान मत लेना कि बापू करेंगे। बापू की अपनी मर्यादा है। हो तो हो, डोलरभाई आया तो। और प्यारो, एक मनोरथ यह भी है कि एक कथा मैं जलालुद्दीन रूमी के यहां कहूं। आप कहेंगे कि 'मानस' के साथ इसका मैल कैसे खाता है? जिसके साथ सभी का मैल खा जाये उसीका नाम 'मानस' है। तोड़-जोड़कर जोडुंगा नहीं। मेरा काम प्लम्बरिंग नहीं है। मेरा काम सीधा गंगाधारा से पानी लाना है। मेरे पास कई व्यासपीठ के समर्पित भाई-बहन हैं, जो कथा मांगते ही रहते हैं कि मुझे कथा दो। जहां जिसका योग होगा वहीं पकड़वा दूंगा। लेकिन कोई वादा नहीं। हुआ तो हुआ; न हुआ तो न हुआ। क्योंकि -

कोट रे कायाना बेली! खळभळ्या,
काळे चांपी रे सुरंगो,
खांगा थया रे कोठा कांगरा,
डूक्यां उधमाती अंगो। कोट रे...

हुआ तो हुआ न हुआ तो फिर कभी। तो एथेन्स में इतना बड़ा विचारक, इतना बड़ा ज्ञानी। मैंने तो बचपन में उसकी मूर्ति देखी थी, चित्र देखा था तब से मेरा मन उसके प्रति दौड़ता था, यह आदमी है कौन? जैसे मधर मेरी की मूर्ति मैं देखूं तो मेरा मन उसके प्रति दौड़ने लगता है। जिसस को मैं देखूं तो उसकी मासूमियत मुझे छूती है। महम्मद के बारे में एक स्मरण केवल कहूं तो उसके बोल सुनाई देते हैं। तो मन में था। आज कोई निमित्त बनता है और कोई युवक निमित्त बनता है यह विशेष प्रसन्नता की बात है।

गुरुपूर्णिमा के बाद के दिन एक प्रश्न मेरे पास आया कि 'बापू, आप कहते रहते हैं कि मुझे यह कथा करनी है, यह करनी है। यह सब पूरा करोगे क्या? यह विचार आते रहते हैं। मनोरथ करते हो और यह सब कर-कर के दौड़कर थक नहीं जाते? कौन सुधरेगा?' बड़ा प्यारा प्रश्न था सुमनभाई। मैंने उसको इतना ही जवाब दिया कि मेरे यह बोलने में मेरा यह जो वैश्विक अनुष्ठान चल रहा है उसके परिणाम के बारे में मैंने सोचा ही नहीं। थाक क्यों लगे? मैं यह सोचूं कि इतने लोग सुधर जाये, मेरी ओर से यह है ही नहीं। यद्यपि तीस-पैंतीस प्रतिशत जरूर होता जा रहा है। लेकिन न हो तो भी मेरे साथ उनका कोई लेना-देना नहीं कि कथाओं से इतना होना चाहिए। न हुआ तो मैं उदास हो जाऊं? मैं डिप्रेस हो जाऊं? न को। क्योंकि यह मेरा लक्ष्य ही नहीं है। मैं मेरा काम किये जा रहा हूं इसलिए रोज नई ऊर्जा प्राप्त करता हूं। नदी कभी कहती है कि एक घडा भरकर घर ले जाओ? तुम करो न करो तुम्हारी मरजी। नदी बहती है। कई लोगों के प्रश्न होते हैं कि बापू, थकावट नहीं लगती? थकावट क्यों लगे? मेरा कोई लक्ष्य हो तो थकावट लगे। ऐसा कुछ है ही नहीं। मैं अपना काम करता जा रहा हूं प्रसन्नता से। इसलिए आनंद आ रहा है और जरूर परिणाम दिख रहा है। न दिखे तो भी कोई चिंता नहीं। अपना काम अपनी ओर से हो रहा है।

पहले दिन मैं नाम-स्मरण कर लूं। मैंने बापा(नगीनबापा) को कहा, मुझे सुकरात के बारे में माहिती देना, तो बापा ने मेहनत करके कुछ पन्ने दिए। आदरणीय सुमनभाई ने भी कुछ प्रसाद दिया। खख्खरसाहब ने तो कहा, मेरी दृष्टि में सोक्रेटिस रुखड है। गांधी भी रुखड है। रुखड हुए बिना कोई ऋषि नहीं हो पाते। ये तो ऋषि जैसा आदमी लगता है। सलाम करता हूं। कहीं से मुझे मार्गदर्शन मिलता रहा। मुझे जितना स्मृति में रहेगा आपके सामने पेश करूंगा। मैंने भी पहले कुछ देखा था, पढ़ा था। ज्यादा पढ़ा तो नहीं लेकिन सोचा है बहुत। आपसे बात करूंगा। विचार एथेन्स के होंगे, प्रस्तुति तलगाजरडी होगी। और 'मानस' के साथ उसका मैल बैठता है इसलिए मैंने सोचा है यह विचार की विभूति सोक्रेटिस। उसको 'मानस' के साथ प्रसंगों में, पात्रों में या तो स्वयं तुलसी के वक्तव्य में कहां-कहां संगति है उसकी बातें गुरुकृपा से जितना स्मृति में आएगा मैं आपके सामने पेश करूंगा। सुकरात की अपनी अनोखी अदा थी। सुकरात कहता था, मैं किसीको सिखाता नहीं। मैं सोचने के लिए लोगों को तैयार करता हूं, तुम सोचो।

करहु बिचार सुजन मन माहीं ।

तुलसीजी कहते हैं, तुम सोचो, सोचो। भगवान कृष्ण कहते हैं, 'यथेच्छसि तथा कुरु।' मैंने अपनी बात रख ली, अब तू सोच। अब तू निर्णय कर, क्या करना है।

सुकरात के पास एक विद्यार्थी आया। उसने कहा, मुझे आपका शिष्य होना है। तो इस रुखड ऋषि ने उसका हाथ पकड़ा, मेरे साथ चलो। एक तालाब के किनारे ले गया और कहा, इसमें देख, क्या दिखता है? वो आया है बड़ी जिज्ञासा लेकर शिष्य होने के लिए, आश्रय करने के लिए। वो क्या बोलता है उसके उपर सुकरात उसका स्वीकार करे, अस्वीकार करे वो आधारित था। ये प्रयोग सुकरात ने कई बार किया। ले जाता था तालाब के पास। शास्त्र के पास न ले गया। मुझे अच्छा लगा। कोई जिज्ञासा करे तो उसे नदी के तट पर ले जाना चाहिए। कोई जिज्ञासा करे तो वृक्ष के पास, झील के पास ले जाना चाहिए। सूर्य उदित न हुआ हो वहां पूर्व दिशा की ओर ले जाना चाहिए। यह सब खुले शास्त्र हैं। उनका कोई रचयिता नहीं। कौन है, अल्लाह जाने! तो यह आदमी की रीत मुझे अच्छी लगती है। और करीब-करीब सब छात्र आकर कहते थे, उसमें मेरा प्रतिबिंब दिखता है। स्वाभाविक है। और सुकरात कहते, आप जा सकते हैं। आपके बारे में मैं कुछ नहीं कर सकता। आप जाईए। उदास मत होईएगा। क्षमा करिये, मैं कुछ नहीं कर पाऊंगा। लेकिन एक विद्यार्थी आया। उसने कहा, मुझे तैरती हुई मछलियां दिख रही है। सुकरात ने कहा, तू मेरे पास रह सकता है। क्योंकि हम प्रतिबिंब ही देखते हैं, जीवन को कहां देखते हैं? चेतना स्वयं नर्तन कर रही है। और जो जीवन को देखने के लिए राजी है वो ऋषि के पास जाए।

मुझे इस विषय पर बोलने का आनंद है। आपका क्या होगा, अल्लाह जाने! लेकिन मुझे तो आनंद आनेवाला है ऐसा मुझे सगुन हो रहा है। यहां आनंद आ रहा है। आपको निमंत्रित करता हूं, आप प्रसन्न चित्त से सुनना। हम बातें करेंगे; संवाद करेंगे। आपके विचार भी निकलने चाहिए। हमारी कितनी प्रवृत्तियां विचारहीन चलती है! थकावट उसकी है। प्रवृत्ति तो हम बहुत करते हैं लेकिन उसके पीछे विचार नहीं है। पांच किलो वजन शरीर पर उठाकर दो किलोमीटर चले तो आप थक जाते हैं लेकिन पांच किलो वजन के आपके बच्चे को उठाकर दस किलोमीटर जाओ तो भी आपको थकावट नहीं लगेगी। क्योंकि उसके साथ हमारा कुछ जुड़ा हुआ है।

सत्संग का अर्थ है जो गलत जुड़ गया है उसकी जगह सच जुड़ जाए। एक पंखा चले नहीं उसके कितने कारण हो सकते हैं? यह सुकरात की पद्धति है। सीधा नहीं कहेगा; बुलवाएगा। शोभितभाई ने कहा, पंखा बिगड़ गया हो, न चले। दूसरा कारण पावर नहीं है, ठीक है। प्लग ठीक नहीं है। स्विच न हो। चूहे ने वायर काट दिया हो। मुझे आप से कहना है, गलत स्विच दबाई हो। साहब! हमारे सबके भीतर परमात्मा का दिया हुआ प्रसन्नता का पंखा घूम रहा है। हमने शायद गलत स्विच ओन की है! कारण मात्र इतना है कि सही स्विच दबाई जाए तो काम हो जाये। तो कितनी वस्तु विचारहीन हो रही है दुनियाभर में! उसीका लोगों को श्रम लगता है। मैं आपको निमंत्रित करता हूं, हम साथ में बैठकर विचार करेंगे। यह विचार की भूमि है। यहां अभी भी आंदोलन है। दो-चार दिन पहले मेरे साथ बात हो रही थी, भगवान कृष्ण ने पांच हजार साल पहले 'गीता' कही वो कितने साल तक असर रहेगी? मैंने कहा, तूने सवाल ही गलत किया, क्योंकि उसके जो किरण है, फैल रहे हैं। सुकरात के विचार भी अभी है। उसको रिसीव करे प्रशांत चित्त से, प्रसन्न चित्त से। मैं तो कभी यही कहता ही नहीं कि एकाग्रता से कथा सुनो। क्योंकि एकाग्र होने में हम ज्यादा डिस्टर्ब होते जाते हैं। लोग क्या है कथा में आते हैं, आनंद-मौज करते हैं, खाते-पीते हैं और फ़िर कहे, पावन का खर्च कितना होगा? छोड़ने सब यह तू क्यों करता है? मौज कर! अकारण विचार चलते हैं! क्योंकि प्रसन्नता की स्विच गलत दबाई जाती है। ठीक से दबाई जाए। जो ठीक से स्विच दबाकर जीवन में प्रसन्न रहते हैं तो लोग उनको दीवाने कहते हैं! लोग पागल कहते हैं!

मौसम की मनमानी है!
आंखों-आंखों पानी है।

सत्संग क्या है? आंखों-आंखों पानी है।

सबको देखकर मुस्कुराते हैं।
फूल कितने नादानी है?

मेरी समझ में, मेरे अनुभव में थोड़ा उतरा है तो मैं कहना चाहूंगा कि जिसने भी करुणा का मार्ग लिया है उन्हें ज़हर पीना पड़ा है। यहां जिसने भी प्रेम का मार्ग लिया है, ज़हर पीना पड़ा है। जिसने भी सत्य का मार्ग लिया उन्हें ज़हर पीना पड़ा है। मीरां ने प्रेम का मार्ग लिया, ज़हर पीना पड़ा। महादेव शंकर ने करुणा का मार्ग लिया, ज़हर पीना पड़ा। तीनों क्षेत्र में जो-जो गये उसको ज़हर पीना पड़ा।

मेरे भाई-बहन यह अवसर है, प्रवास नहीं है। यह नव दिन एन्जोय करो, आनंद में रहो लेकिन ओर विचारों

को छोड़कर। मैं दूसरी बात भी कहना चाहूंगा कि जिस हेतु से आये हो वो हेतु केन्द्र में रखना। बाकी घूमना-फिरना। हेतु को मैं भी न चुकुं, आप भी न चुके। मैं समझता हूं और स्वीकार भी करता हूं कि मेरे से ज्यादा सोक्रेटिस के बारे में आपको पता होगा क्योंकि आप पढ़े हैं अंग्रेजी में। मेरे से ज्यादा आपके पास सोक्रेटिस के बारे में माहिती होगी। लेकिन मैंने कहा, प्रस्तुति मेरी होगी। जो सूत्र आएगा वो मेरी अदा में आपके पास आएगा। मुझे ख़बर है, मेरी अदा आपको पसंद है, वर्ना क्यों आते मेरे यार! बाप! हम ऐसे नहीं आये हैं, पावन और डोलरभाई परिवार; डोलरभाई मुझे कह रहे थे, आप सबको कहते हैं यह मेरे फ्लावर है, लेकिन मैं तो नामधारी फ्लावर हूं। और संयोग क्या हुआ कि डोलर का फूल मुझे प्रिय है सच में! और एक गुलाब का। मेरे दादा स्नान करके आते थे। तो जर्मन सिल्वर का पात्र उसमें पूजा के लिए पानी लाते तो पूजा के लिए वाडी से डोलर के फूल को उस लोटे के पानी में डालकर ले आते। मैंने कहा, आप तो मेरे पावन फूल हो! तो बाप! हम यहां आये हैं प्रसन्न होने। ओर विषयों में मत जाना। जो केन्द्र में हेतु को पकड़ता है उसको बहुत आनंद आता है। एक पंथ दो काज, यह व्यवहार नीतियां। एक पंथ में एक ही काम करो। सत्संग की महिमा बहुत मूल्यवान है। हम नौ दिन सुकरात के पास बैठने के लिए आये हैं, इस हेतु को चुके ना। इसलिए है रामकथा।

मैं सोच रहा था बाप कि कौन विषय पर बोलूं? 'मानस' की कौन पंक्ति का आधार बनाऊं कि मैं सुकरात को आपके सामने पेश करूं। मैंने दो पंक्तियां 'बालकांड' से उठाई है। 'बालकांड' में प्रसंग देखेंगे शुरूआत में तो जो 'मानस' का पारायण अध्ययन करते हैं उसको तुरंत पता लग जाएगा कि तुलसीदासजी ने 'रामचरित मानस' को मानसरोवर के साथ तुलना की। एक रूपक बनाया। हिमालय में मानसरोवर है, ऐसे यह 'मानस सरोवर' है। यह कविता है। उसी क्रम में यह दो पंक्ति मैं उठा रहा हूं।

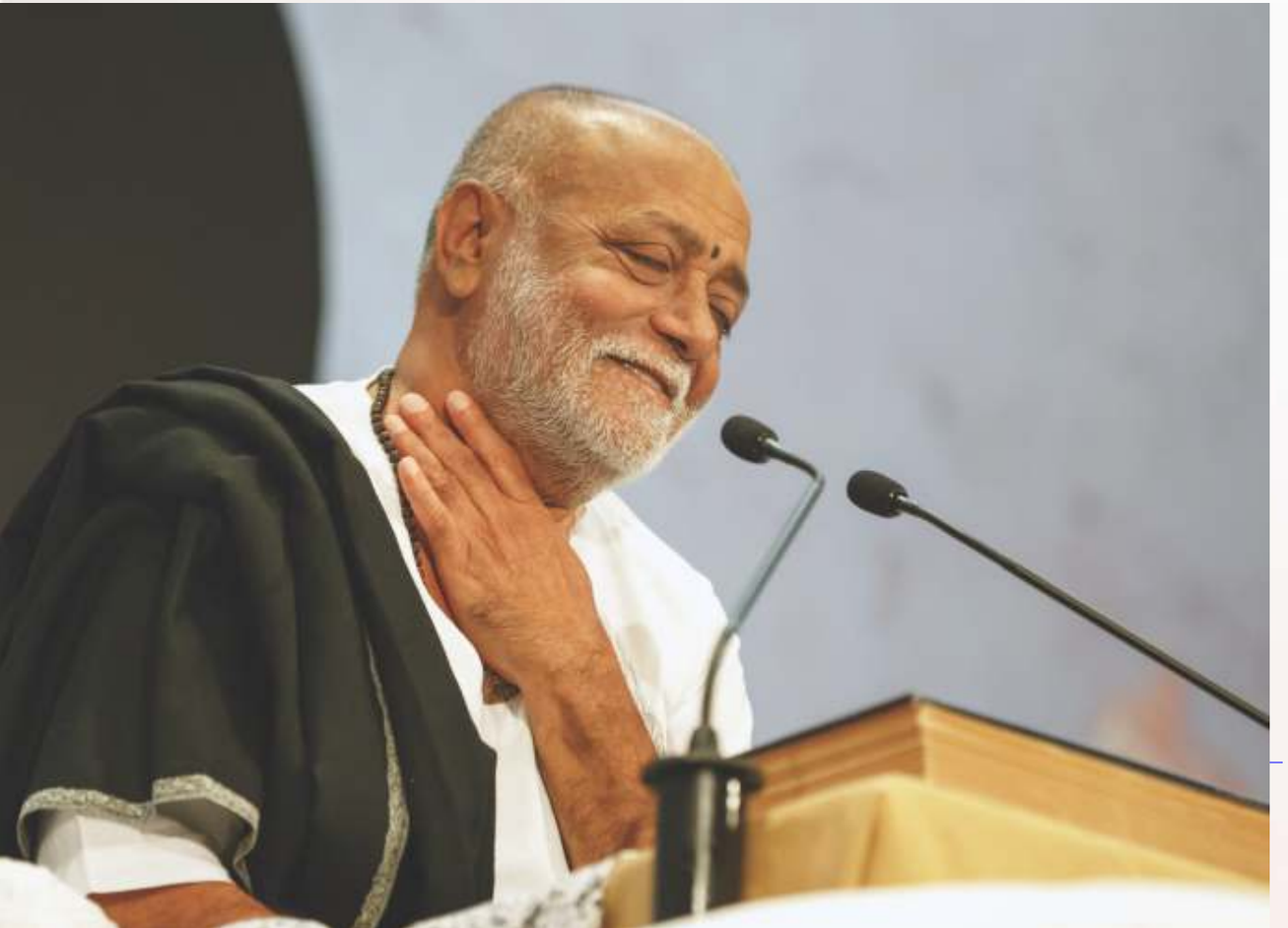

सुकृत पुंज मंजुल अलि माला ।
ग्यान बिराग बिचार मराला ।।

सरोवर में फूल खिले हैं। भंवरें गुंजराव कर रहे हैं। तुलसी ने इस रूपक में कहा कि वो मानसरोवर हो या यह 'मानस-सरोवर' हो, उसमें भंवरें कौन है? मंजुल मानी सुंदर। माला यानी बहुत संख्या में। मेरे बचे जीवन में मैंने पुण्य और पाप की व्याख्या मेरे लिए निश्चित की है। मैं आपके सामने रख रहा हूं, प्रसन्नता पुण्य है, अप्रसन्नता पाप है। आप प्रसन्न रह सको, आप पुण्य आत्मा है। आप अप्रसन्न हैं तो आप वो हैं जिन शब्द का प्रयोग मैं नहीं करूंगा। सुकृत यानी प्रसन्नता का समूह। किसी को कुछ देने की प्रसन्नता। किसी के पास हक्क से मांगने की प्रसन्नता। किसीका हाथ पकड़कर यात्रा कराने की प्रसन्नता। किसीको मंगल विचार देकर होश में लाने की प्रसन्नता। यह सब पुण्य है। उसका समूह इस सुंदर भंवरे की माला है। यह तो कविता है। इसलिए कवि अपने ढ़ंग से बोलेगा। मुझे 'भागवत' के साथ इस पंक्ति को जोड़ना है। जैसे 'भागवत' में 'भ्रमरगीत' है। तुलसीदासजी ने 'गीतावली' में भी कुछ भंवर पद उठाये। उसमें 'अलि' शब्द का प्रयोग किया है। 'भ्रमरगीत' ओर हमें ले जाते हैं। यह टुकड़ा आया है इसलिए मैं तुम्हारे सामने भाषांतर कर जाऊं, लेकिन मेरा संबंध इन कथा में इस पंक्ति के उत्तरार्ध का है।

ग्यान बिराग बिचार मराला।।

कहते हैं, मानसरोवर में हंस रहते हैं। तुलसी ने तीन हंस गिनाए। पहला ज्ञान, जिसकी बात सुकरात ने कही। दूसरा बिराग, जिसकी बात सुकरात ने कही। और तीसरा बिचार मराला, जिस विचार की बात सुकरात ने कही। और तीन मराल है। तीन हंस है- ज्ञान, बिराग और बिचार। तीन को मेरे गोस्वामीजी ने हंस कहा। हंस के तीन प्रकार है। पहले तो हंस कल्पना है कि हकीकत वो प्रश्न है। कहीं हंस कविता का पक्षी तो नहीं है? क्योंकि तुलसी कभी-कभी मुझे बड़े रेशनालिस्ट लगते हैं। कहते हैं, 'सुनिअ सुधा।' अमृत के बारे में तो सुना है, देखा नहीं। गरल-विष को देखा है, पीया है। बगुले बहुत देखे हैं। हंस के बारे में तो सोचा है। हंस हमने भी नहीं देखा है। 'मानस' की कृपा से दुनिया घूमे हैं लेकिन हंस देखा नहीं। और खास मानसरोवर गए तो इच्छा थी कि देखे, यहां तो होने चाहिए। वहां कोई मिला नहीं! लेकिन हंस एक कल्पन है, कविता का संकेत है। उसके पीछे सत्त्व-तत्त्व का संकेत है। क्या है? जो हो लेकिन 'ग्यान बिराग बिचार मराला।' और मेरे भाई-बहन, उसको मैं क्रम में लेना चाहता हूं, ज्ञान, बिराग और विचार। तुलसी ने इस क्रम में लिखा है। मराल यानी हंस। और तीन हंस है। ज्ञान हंस है, बिराग हंस है, विचार हंस है। तीन क्यों? हंस तीन है। एक तो हंस सर्वसामान्य शब्द है। 'भरत हंस', 'संत हंस', यह सब 'मानस' के शब्द है। एक है हंस। दूसरा है राजहंस। कविता, लोकगीतों में आप हंस को मोती का चारा चुगते देखोगे। सर्जक के सर्जन में राजहंस आता है। तीसरा है अध्यात्मजगत का परम हंस। यह तीन हंस।

मुझे कहने दो, हंस है ज्ञान। कहते हैं, जिसमें ज्ञान और विवेक हो जाता है वो क्षीर-नीर बिलग कर देता है। दूध और पानी इकठ्ठा हो, हंस उसमें चोंच डाले, पानी-पानी, दूध-दूध कर देता है। लोग इसकी क्या व्याख्या करते हैं पता है? दूध ग्रहण कर लो और पानी छोड़ दो! विवेक का यह काम नहीं है। पानीकी भी जरूरत है और दूध की भी जरूरत है। लेकिन तुम परखो। तथाकथित धर्मावलंबियों ने यही सिखाया! साथ छोड़ना है तो दूध छोड़ा जाए, पानी नहीं छोड़ा सकता। पानी पर जीवन है। दूध के बीना जी सकते हैं। सबको कहां दूध नसीब है? पानी चाहिए। लेकिन एक विचार का नाम है ज्ञान जो हमें परख करा दे ये पानी है, यह दूध है।

तो हंस है ज्ञान। आये दिन इसकी बहुत चर्चा करेंगे। यह तो शुरूआत है। अभी तो आप स्कूल में भर्ती हुए हो। यह एथेन्स की स्कूल है। यह बात तो कहनी पड़ेगी कि यहां बहुत काम हुआ है। अपने ढंग से हुआ है। कई लोगों ने सोक्रेटिस को छूआ तक नहीं! और तथाकथित धर्मों ने तो छूआ तक नहीं! एक ही आक्षेप करते रहे कि युवानों को बिगाड़ रहा था। कबीर भी ऐसा और कबीर बिगड़ गया! दूध में छास डालो तो दूध बिगड़ा नहीं, दहीं बन जाएगा। फ़िर मथने की ताकत हो तो उसमें से मक्खन निकलेगा। फ़िर तपाने की ताकत हो तो इसमें से घी निकलेगा। फ़िर डोक्टर ने हां कही हो तो रोटी पर डालकर खा जाना। डोक्टर ने हां कही हो तो! मुझे तो सब ध्यान रखना पड़ता है! एक बहुत काम किया इस आदमी ने। कितना बड़ा आक्षेप है?

मेरी दृष्टि में विराग है राजहंस। जिसके पास खाने का एक दाना नहीं है और कहे, मेरा उपवास है तो उपवास की कोई कीमत नहीं लेकिन जिसके घर साम्राज्य हो और साम्राज्य छोड़कर जो वैरागी हो वो है राजहंस। ऐसे है भर्तृहरि। जैसे तथागत बुद्ध, महावीर, भगवान राम यह सब राजहंस है। और अब मैं जो निवेदन करने जा रहा हूं, आपको सोचना पड़ेगा। आपको मुश्किल में डाल सकता है। विचार है परमहंस। हम क्या कहते हैं, परमहंस है उनको विचार आते ही नहीं। साहब! हम परम विचार से जुड़ जाते हैं तो गलत विचार को वो आने नहीं देता। विचार को परमात्मा कहूं तो क्या है? कितने-कितने विचारग्रंथ आये हैं! पांडुरंगदादा ने एक ग्रंथ लिखा जिसमें नाम है व्यासविचार, उपनिषदीय विचार। वेदांत का बहुत बड़ा ग्रंथ है 'विचारसागर।' तो कहते हैं, परमहंस को विचार ही न आए। निर्विचार स्थिति। हमारे 'मानस' में विचार की बड़ी स्थापना की गई है। 'मानस' विचार को केन्द्र में रखकर कई बातें करता हैं। कई प्रसंगों में है। मैं कोशिश करूंगा आप तक रखने की। विचार की प्रधानता 'मानस' में कहां-कहां आई है। श्रीहनुमानजी ज्ञानी है। आप पढ़ते हैं 'सुन्दरकांड' में, 'ज्ञानिनामग्रगण्यम्।' वैराग्य के घनीभूत रूप है। हनुमानजी बैरागी है, लेकिन हनुमानजी परमहंस है, यह कहना है तो -

पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार ।
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार ।।

परमहंस विचार में विराग, ज्ञान आ जाता है इसलिए तुलसी लिखते हैं -

अरथ धरम कामादिक चारी।
कहब ग्यान बिग्यान बिचारी।।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। ज्ञान, विराग और विचार से यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की व्याख्या क्या है, गोस्वामीजी कहते हैं, मैं वो कहूंगा। ये दो पंक्ति को इस कथा का आधार बनाया है और इस कथा का नाम रखूंगा 'मानस-सुकरात।' मुझे अंजलि देनी थी सुकरात को। उनकी जीवनशैली को प्रणाम करना था। जिस गुफ़ा में सुकरात को ज़हर पिलाया था उस तक विचार से यात्रा करेंगे। और यहां ज़हर कौन नहीं पी रहा? सब पी रहे हैं। मेरे तुलसीदासजी ने 'किष्किन्धाकांड' के प्रारंभ में दूसरे ही सोरठे में बता दिया-

जरत सकल सुर बृंद बिषम गरल जेहिं पान किय ।
तेहि न भजसि मन मंद को कृपाल संकर सरिस ।।

तो बाप! समुद्र का मंथन हुआ तो ज़हर निकला। विष फैल गया और जगत जलने लगा। पीओ और मर जाओ इतना भयंकर विष। भगवान शंकर सबको बचाने के लिए इतना भयंकर विष पी गये। वहां 'विषम गरल जेहिं पान किय।' जिसका अर्थ व्यासपीठ ने कई बार आपके सामने रखा है। तुलसी बहुत सुंदर शब्दप्रयोग करते हैं। हम सब विषपान करते हैं उसकी और संकेत करते हैं वो है विषपान। उनका मतलब हुआ हमारे जीवन में जो-जो विषम परिस्थितियां आती है उसका नाम हो गया विषपान। कभी कुछ घटना बनती है, जो विषम परिस्थिति जो हमें सम नहीं रहने देती। बार-बार हमें मुश्किल में डाल देती है, हमें हकारात्मक नहीं रहने देती। विषम परिस्थिति हमारे जीवन में बार-बार आती है। वो ही तो विष है और उनको शंकर स्वभाव से पी जाना; महादेव की अदा से पी जाना। यह हम सबको करना पड़ता है।

अब जो थोड़ा समय है इसमें प्रवाही परंपरा का निर्वहण कर लूं। 'रामचरित मानस' सात सोपानों में संपादित है। 'बाल', 'अयोध्या', 'किष्किन्धा', 'अरण्य', 'सुन्दर', 'लंका' और 'उत्तर।' उसमें जो पहला सोपान है, वाल्मीकिजी की बोली में हम उसको 'बालकांड' कहते हैं। उसमें मंगलाचरण संस्कृत में। गोस्वामी महाराज सात श्लोक लिखते हैं -

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि ।
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ।।

सात श्लोक में मंगलाचरण किया। फ़िर देहाती भाषा में पांच सोरठे में पंचदेवों की स्तुति की। पहले गणेश, फ़िर सूर्य, विष्णु, शिव, पार्वती इन पांच देवों हमारी परंपरा में जो आदि गुरु शंकराचार्य ने सिखाया। तुलसी ने ये सत्य को उठाके 'मानस' के प्रारंभ में स्थापित किया। आदमी को चाहिए गणेश, सूर्य, विष्णु, शिव, पार्वती की पूजा करे लेकिन स्थूल रूप में हम करे न करे स्वाभाविक है। मैंने कई बार आप से बात की है, गणेश की पूजा यानी विवेक में जीना। कहीं हम विवेक न चुक जाये वो गणेश की पूजा है। सूर्य पूजा; जहां तक संभव हो उजाले में जीये। फ़िर आती है विष्णुपूजा; विचारो में जीये। विचार संकीर्ण न रखे। शिव

की पूजा का अर्थ है, दूसरों का शुभ हो ऐसा सोचो। और दुर्गा की पूजा का अर्थ है श्रद्धा। पंचदेव की पूजा का यही अर्थ है। तुलसीदासजी चौपाई शुरू करते हैं-

बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा ।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ।।

गुरु के चरणों को प्रणाम करता हूं। जो नररूप में हरि है। जिसके वचन मोह को मिटा देता है। जिसके वचन सूर्य के किरण जैसे होते हैं जिससे अंधेरा मिट जाता है, ऐसे कोई मार्गदर्शक को गुरु बनाना। कोई घटना भी गुरु भी बन सकता है और कविता, लेख, विचार गुरु बन सकता है जिससे हम बाहर आ जाए। वंदना का पूरा प्रकरण 'रामचरित मानस' का पहला प्रकरण है जहां से तुलसी शुरूआत करते हैं। पहला प्रकरण गुरुवंदना का है। उसमें भी व्यक्ति को केन्द्र में नहीं रखा है, गुरुपद को रखा है। व्यक्ति कमजोर हो भी सकती है। मोरारिबापू ठीक न भी हो लेकिन व्यासपीठ ठीक है। महिमा व्यासपीठ की है, व्यक्ति की नहीं।

या तो कुबूल कर मेरी कमज़ोरियों के साथ,
या छोड़ दे मुझे मेरी तन्हाइयों के साथ।
- दीक्षित दनकौरी

तो बाप! गुरुमहिमा है। मैं तो इस प्रवाही परंपरा में बहनेवाला आदमी हूं। मेरे जैसे को तो गुरु चाहिए। नौका तो बड़ी अच्छी है, लेकिन कोई कर्णधार चाहिए। गुरुवंदना 'मानस' का पहला प्रकरण। और गुरुचरणधूली में दृष्टि विवेकमय हो गई। पूरा जगत प्रणम्य हो गया, वंदनीय लगा। किसी का दोष नहीं दिखाई दिया। तुलसी सबको प्रणाम करते हुए कहते हैं-

सीय राममय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

पूरा विश्व सीताराममय है। जगत ही जगदीश है। जो जागे हैं वो जानते हैं, जो नहीं जागे वो भागते हैं और पाया कुछ नहीं है। तुलसी ने सबको प्रणाम किया। इसी शृंखला में दोनों परिवार की वंदना की वैदेही, मैथिली। फ़िर भरत, शत्रुघ्न की वंदना और पात्रपरिचय। उसके बाद हनुमानजी की वंदना करते 'मानस'कार लिखते हैं -

प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन ।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ।।

हनुमंततत्त्व प्राणतत्त्व, जीवनतत्त्व है। क्या नहीं है हनुमानजी? केवल तैल, सिंदूर, उड़द के दाने, धागे चढ़ाने के लिए न समझो बाप! उसके पीछे आपकी श्रद्धा हो तो मुबारक। लेकिन हनुमंततत्त्व तो विशिष्ट तत्त्व है। यह प्राणतत्त्व है, यह महावीरतत्त्व है। 'मानस'कार कहते हैं, श्री हनुमानजी के चरणों में प्रणाम करता हूं। आइए, हम भी 'विनयपत्रिका' के कुछ पद में वंदना करें -

मंगल-मूरति मारुत-नंदन।
सकल अमंगल मूल-निकंदन ।।
पवनतनय संतन-हितकारी।
हृदय बिराजत अवध-बिहारी ।।

पवनपुत्र के नाते से आप प्रेम न करो, कोई बात नहीं। इतना याद रखो, हनुमान हमारी जरूरत है। क्योंकि पवनपुत्र है। गोस्वामीजी ने हनुमानजी का परिचय निरंतर पवनपुत्र में दिया है। यह हमारा प्राणबल है। यह हमारी चेतना है। फ़ायदा क्या होगा मत सोचो। हर बात में फ़ायदा! श्वास लेने से क्या फ़ायदा? हम जीवित रह सकते हैं, वरना मर जाए! आदमी बूढ़ा हो जाय हनुमानजी बगैर। ये चैतन्य तत्त्व है।

मेरी दृष्टि में विराग है राजहंस। जिसके पास खाने का एक दाना नहीं है और कहे, मेरा उपवास है तो उपवास की कोई कीमत नहीं लेकिन जिसके घर साम्राज्य हो और साम्राज्य छोड़कर जो वैरागी हो वो है राजहंस। ऐसे है भर्तृहरि। जैसे तथागत बुद्ध, महावीर, भगवान राम यह सब राजहंस है। और अब मैं जो निवेदन करने जा रहा हूं, आपको सोचना पड़ेगा। आपको मुश्किल में डाल सकता है। विचार है परमहंस। हम क्या कहते हैं, परमहंस है उनको विचार आते ही नहीं। साहब! हम परम विचार से जुड़ जाते हैं तो गलत विचार को वो आने नहीं देता।

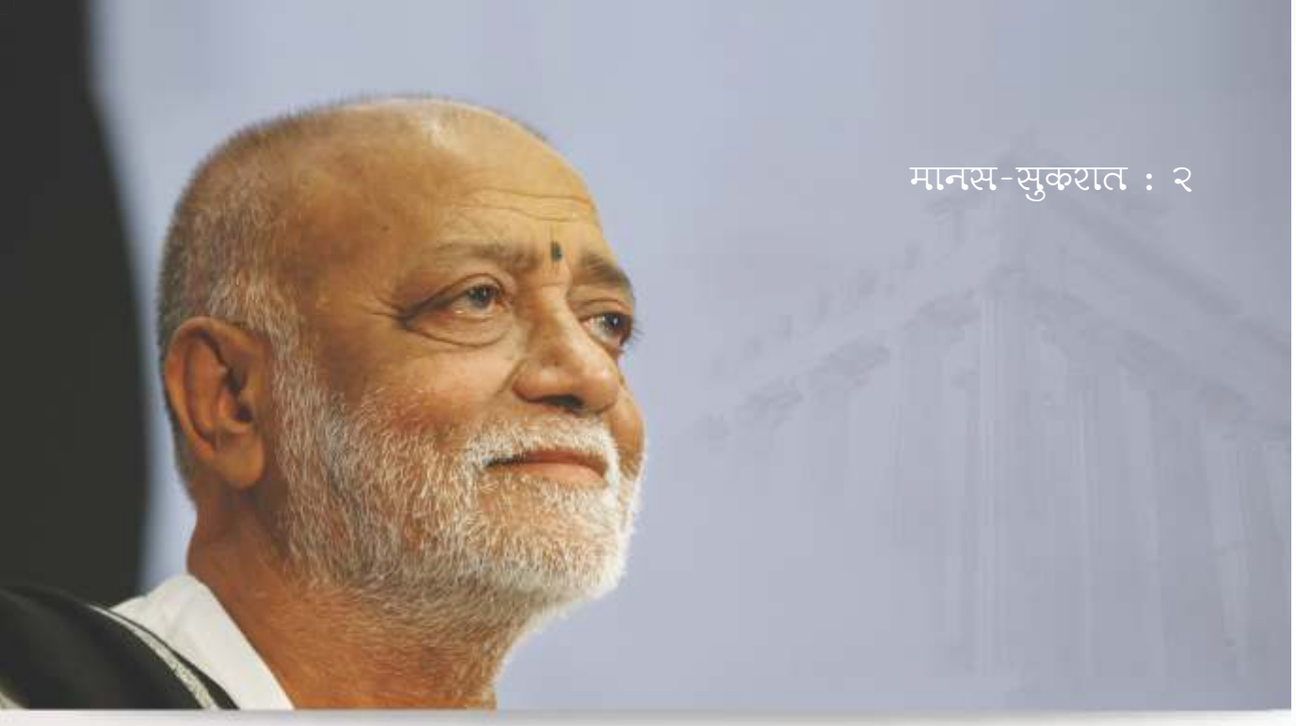

पृथ्वी प्रेम है, आकाश सत्य है और पाताल करुणा है

एक छोटी-सी कहानी से आज की कथा शुरू हो रही है। एक बहुत अनपढ़, गंवार आदमी था। उस पर एक खत आया। बंद लिफ़ाफ़ा उसके पास आया। वो पढ़ तो नहीं पा रहा था और कोई उसका था भी नहीं कि खत लिखे। डाकिया ने उसके घर यह डाक दे दी। पड़ोस में यह आदमी जाता है और कहता है कि मेरे पर यह खत आया है, आप जरा पढ़कर सुनाए कि इसमें क्या लिखा है। पड़ोसी ने लिफ़ाफ़ा खोला। पत्र पढ़ा और उस अनपढ़ के गाल पर चाटा मारा और पत्र फ़ेंक दिया! आदमी हैरान है कि यह क्या है, मेरे पर खत आया, मैं पढ़ नहीं पाता, मैंने प्रार्थना की, कुछ पढ़ने की बात तो दूर रही, जोर से चाटा मारा! माजरा क्या है? एक दिन तो सोच में बिता देता है। लेकिन जिज्ञासा और तीव्र हुई। एक स्कूल में टीचर के पास गया और प्रार्थना की, मेरे पर एक खत आया है, आप जरा पढ़ दीजिए। उसने पत्र निकाला, पढ़ा और जोर से चाटा मारा! रहस्य ओर गहरा होता रहा! फ़िर एक डोक्टर के पास गया, आप जरा पढ़ दीजिए, इसमें क्या लिखा है? डोक्टर ने भी वही परंपरा का जतन किया, जोर से एक तमाचा मारा! आदमी को लगा कि जिसको जितना मारना है मारे, लेकिन रहस्य खोज के रहूंगा। कहते हैं, सात-आठ जगह जाता है। हर जगह से प्रहार पाता है! फ़िर उसने सोचा, शादी कर लूं। एक-दूसरे को प्रेम करेंगे और एक बार मौका देखकर पत्र पढ़ा लूंगा। पत्नी है तो पढ़ ही देंगी, चाटा नहीं मारेगी। एक बार बोले, मेरा एक काम कर दोगे? पत्नी ने कहा, इसलिए तो आई हूं। मेरा दायित्व है। लाइए, पत्र पढ़ दूं। पत्नी को पत्र देता है। चाटा नहीं मारा। मुस्कुराती यह महिला पत्र फ़ेंक देती है। और कहानी पूरी हो जाती है। आपको लगेगा, इसमें क्या है? जब तक दूसरों के पत्र आये और वो पढ़े इसलिए जाये तो थप्पड़ के सिवा कुछ नहीं मिलेगा। क्योंकि लिखा दूसरे ने। पढ़ा दूसरे ने। तेरा मौलिक कुछ नहीं है। तो करे क्या? शादी कर लो। आदमी सच्चाई के साथ शादी कर लेता है तो सभी शास्त्र पूरे हो जाते हैं। बात इतनी ही है। जब तक सच्चाई के साथ हमारे मंगल फेरे नहीं होते तब तक हम इधर-उधर पत्र पढ़ाने के लिए दौड़ते रहते हैं। जिन-जिनने सच्चाई के साथ शादी कर ली उनके लिए शास्त्र बेकार है ऐसा नहीं; सही में आज शास्त्र पढ़ा गया। सुकरात की पूरी पद्धति यही थी। कागज में मत खोजो, कलेजे में खोजो। यह सुकरात की देन है। महात्मा गांधी ने भी कहा था, मेरी दृष्टि में सुकरात सोल्जर ओफ ट्रुथ है। सत्य का सोल्जर है। सुकरात की जो रीत है, बापा ने भी अभी शब्द का प्रयोग किया, विचारयात्रा। यह नौ दिन की यात्रा है।

यात्राएं कई प्रकार की होती है। एक होती है शब्दयात्रा। शब्द के साथ यात्रा होती है। एक होती है तीर्थयात्रा। एक होती है जीवनयात्रा। सभी में श्रेष्ठ है जो होती है विचारयात्रा। सुकरात विचारयात्रा का आदमी रहा। उसके बारे में कई लोगों ने लिखा; सोचा। ज्यादा से ज्यादा प्लेटो ने बहुत संग्रहित किया उनके विचारों को। कई लोगों ने किया होगा। हमारे गुजराती साहित्यकार मनुभाई पंचोली 'दर्शक' ने 'सोक्रेटिस' लिखी। उस समय एवोर्ड प्राप्त किया। दर्शकदादा ने तो कहा, मैं अपने मुंह से बोलूं तो ठीक नहीं, मेरी 'सोक्रेटिस' सर्वश्रेष्ठ कृति है। अपने ढंग से लिखा है। मैं कुछ पन्ने देख रहा हूं। पहले भी थोड़ा देखा था। उसने पूरा वर्णन किया है यहां की सभ्यता का। मुझे इस कथा में एथेन्स की परिस्थिति, राजकीय वातावरण, सामाजिक वातावरण है। पौराणिक देव-देवियां तो यहां भी है, सभ्यता है, इनमें नहीं जाना है। मेरी पहुंच भी नहीं है। मेरा काम नहीं है। तुलसी को देखदेख के सुकरात की धारा है, हमें किस रूप में इस समय में आज उपयोगी हो सकता है? विचार क्या है? वो क्या पढ़ा? यह सब मैंने थोड़ा पढ़ा भी। उसका बाप था पथ्थर तराश और माँ थी दायन। सुकरात अकसर कहा करते थे, मैं किसीको कुछ नहीं देता। उसमें होता है वो अनावरण करता हूं। कोई दायन किसी स्त्री के गर्भ में बच्चा नहीं दे सकती। गर्भ तो ओलरेडी है, उसको खोलती है। मेरा काम यही है क्योंकि मैंने माँ से यह पाया है। युवानों में जो पड़ा है उसको मैं खोलता हूं। यह रीत मुझे अच्छी लगती है। ग्रंथ अलमारी में पड़ा रहे ठीक है शोभा देगा, लेकिन ग्रंथ खोला जाए। और वो भी सच्चाई से शादी हो जाने के बाद बंद किया जाए। लेकिन हम बहुत छोटा सोचते हैं! हमारी दृष्टि बहुत छोटी है।

सुकरात की विचारधारा है जो मुझे समझ में आई है, मुझे उपयोगी हो रही है। और व्यासपीठ के प्रति आप जो प्रेम रखनेवाले होते हैं; अभी एक साहित्यकार की बात निकली। एक विख्यात साहित्यकार पर आक्षेप कर दिया! ये साहित्यकार है वो मोरारिबापू की असर में बहुत है! आपने जवाब बहुत अच्छा दिया, हम मोरारिबापू की असर में नहीं है, मोरारिबापू के स्नेह में है। बड़ी प्यारी बात है। मेरी व्यासपीठ की असर में आप मत रहना। मेरी व्यासपीठ की मोहब्बत में रहना। असर में तो कई आ जाते हैं! असर में पराधीनता है। कोई असर में आ जाए वो भी ठीक नहीं और कोई असर डालने की कोशिश करे वो भी ठीक नहीं। मेरा पुराना कहना है कि व्यक्ति स्वाधीन होना चाहिए। असर में मत आना। मैं 'मानस' पर हाथ रखकर कहता हूं, मेरी कथा की असर में मत आना प्लीज़। मैं असर लादने नहीं आया हूं। मेरा यह काम नहीं है। मैं स्नेह से आया हूं। और स्नेह करना गुनाह नहीं है, पाप नहीं है। मेरी असर में आने से क्या? मेरे में है भी क्या? मेरी असर में आने का कोई कारण भी नहीं। मैं आप से ममता रखता हूं, आप आदर देते हैं। आनंद करते हैं। छोड़ो असर को। असर को उतरने देर नहीं लगती, चाहे ज़हर हो, चाहे अमृत हो। सुकरात का एक वाक्य मुझे बहुत प्रिय है सुमनभाई। सुकरात को कहा गया कि जल्दी ज़हर पी लो। बोले, धीरे-धीरे पीने दो ना यार! जिन्दगी धीरे-धीरे जीया हूं, मौत भी धीरे-धीरे। क्या यह फ़कीरी थी साहब! क्या इरादा सुकरात का यही था कि वो मरे नहीं? नहीं, सुकरात का बहुत अच्छा वाक्य था, मैं धीरे-धीरे इसलिए पी रहा हूं, विष चढ़े ना, नहीं मरूंगा तो ज्युरी को कहूंगा, मुझे फ़िर ज़हर दीजिए। फ़िर मीरां याद आती है। सत्य को कोई सरहद बांध नहीं सकती। कहां एथेन्स कहां जुनाणा! एक मीरां ने कहा था, इतनी सालों पहले मीरां ने कहा था। सत्य के लिए जीना है उसको तो यही बोलना चाहिए-

राणाजीने कहेजो पाछां झेर मोकले.
मीरांबाई करे छे मनवार.
झेरने जीरववा जीवण मारो आवशे;
मने छे एनो एतबार.

फ्रोम सुकरात टु सौराष्ट्र! सुकरात को सौराष्ट्र आना ही चाहिए। मैं सुकरात की असर में नहीं हूं, उसकी महोब्बत में हूं। इसलिए यह वाक्य मुझे प्रिय है, बचना नहीं है, दूसरी बार पी लेंगे। मुझे अच्छा लगता है, जो आदमी मुस्कुराते मृत्यु की प्रतीक्षा करता है। यह बहुत कठिन है। जिसको यह रास आ गया उसके लिए मंगलमय कोई घड़ी नहीं है। सोया नहीं साहब! आदमी मृत्यु के भय से नहीं सोते। यह आदमी प्रतीक्षा में नहीं सोया! कब आए, पीए तो जरा! यह टेस्ट क्या है, देखे तो जरा! दुनिया में ज़हर-ज़हर कहते हैं, क्या है? किसी की असर में मत आना। लोग ऐसे ही बोल फेंकते हैं, मोरारिबापू के पास जाते हैं, उनकी असर में है! नहीं, नहीं, नहीं। न मैं किसी की असर में हूं न कोई मेरी असर में है। हम एक-दूसरों से प्यार करते हैं। गाय हमको

दूध देती है, ठीक है? गाय हमको गोबर देती है। गाय को हम माता कहते हैं। गाय बहुत गरीब प्राणी है। ठीक है? फ़िर भी हम गाय को बाहर क्यों रखते हैं? घर में क्यों नहीं रखते? आंगन में छपड़ा बनवा दिया। कुत्ता दूध देता है? जवाब चाहिए। आई वोन्ट आन्सर। कुत्ता का मल कोई उपयोग में है? कुत्ते को हम देव कहते हैं? फ़िर भी कुत्ते को हम घरमें क्यों रखते हैं? क्यों लोग उन्हें गोद में बिठाते हैं? यद्यपि गाय बड़ी है लेकिन उनके बछड़े को तो गोद में बिठाओ! अरे, कई महानुभाव इतने पशुप्रेमी है, कुत्ते को अपने साथ सुलाते हैं! कारण क्या है? एक ही कारण है, गाय पूंछ नहीं हिलाती, कुत्ता पूंछ हिलाता है। पूंछवाले असर में है, दूध पिलानेवाले महोब्बत में है। चाहे राजकारणी हो, धर्मवाले हो। गाय अपनी निजता में है।

मनुष्य कैसा होना चाहिए? निजतंत्र आदमी होना चाहिए। कोई किसी के असर में न हो। सब एक-दूसरे के स्नेह में सिक्त हो। हम तीन लोक किसको कहते हैं? स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल, हम त्रिभुवन कहते हैं। तो स्वर्ग यानी उपर। मुझे स्वर्ग क्या है पता नहीं, लेकिन स्वर्ग यानी आकाश। आसमां सत्य है। कुछ है वो सत्य नहीं है। कुछ भी नहीं वो सत्य है। जरा कठिन पड़ेगा, प्लीज़। सूरज है वो सत्य नहीं है, क्योंकि सूरज खतम हो जाएगा। चांद चला जाएगा। सर्वोच्च सत्य है कि कुछ नहीं है इसलिए सर्वोच्च सत्य आसमान है। पौराणिकों ने उसको स्वर्ग नाम दे दिया। वैष्णवों ने उसको वैकुंठ नाम दे दिया। राम उपासकों ने उसको साकेतधाम नाम दे दिया। कृष्ण उपासकों ने उसको गौलोक नाम दे दिया। और पृथ्वी मेरी समझ में है प्रेम। प्रेम पृथ्वी पर ही होता है। कोई थोड़ा स्पेस में जाए तो एक-दूसरे के गले भी नहीं मिल सकते! पृथ्वी प्रेम है, आकाश सत्य है और पाताल करुणा है। करुणा के समान गहराई किसी की नहीं हो सकती। उसको हम नहीं पा सकते। कोई-कोई महापुरुष हमारे पास ऐसे आये जैसे नारद आये वो स्वर्ग में भी जाते थे। पृथ्वी पर भी आते और पाताल में भी जाते थे। कई महापुरुष ऐसे आये जिसका रमण सत्य में भी था; जिसका रमण प्रेम में भी था; जिसका रमण करुणा में भी था। गति सर्वत्र तुम्हारी।

सुकरात एक मुद्दा उठाता है, बहुत प्यारा मुद्दा। अंधेरा दो प्रकार का होता है। अंधकार दो प्रकार के होते हैं। एक कुदरती, एक कृत्रिम। आप गाढ़ जंगल में चले जाओ जहां सूरज की किरण नहीं आ सकती है वहां जो अंधेरा है वो कुदरती अंधेरा है। घटाटोप मेघ छाया जाए और दुपहर को लगे कि शाम हो गई। एक गुफा में चले जाओ और वहां जो अंधेरा है वो हमने नहीं बनाया, कुदरती है। एक कृत्रिम अंधेरा होता है। आप एक होल में बैठो और सभी बत्ती बुझा दी जाए। जरूरी है चलो, लेकिन अंधारा बनाया गया है। सुकरात कहता है, कुदरती अंधेरा हो उससे मेरा कुछ लेना-देना नहीं है। इन दिनों में हम सुकरात के विचारों के बारे में स्वाध्याय करेंगे; चिंतन-मनन करेंगे; वार्तालाप करेंगे।

आज मेरे पास प्रश्न भी कई है। 'बापू, आपने कल कहा, विचार ब्रह्म है, विचार भ्रम भी हो सकता है। यदि इन्द्रियों का संग मिल जाए तो इससे कैसे बचा जाए?' देखो भाई, शुभ-अशुभ संपूर्ण मिश्रण का नाम है परमात्मा। आप परमात्मा को अलग पार्ट में बिलग नहीं कर सकते। इसलिए हमारे परमात्मा को हम कराल से भी कराल कहते हैं और कोमल से भी कोमल। हमारे 'रुद्राष्टक' में दो-टूक बातें कह दी है, 'करालं महाकाल कालं कृपालं।' तुलसी कहते हैं कि कराल में भी कराल। इतना कराल। कराल का मतलब क्रूर। एक तरफ़ कृपालु इन दोनों का मिश्रण। जड़-चेतन का मिश्रण परमात्मा है। जिसको सही रूप में ईश्वर को पाना है उनको सभी का स्वीकार करना पड़ेगा, शुभ का भी और अशुभ का भी। जिसको परमात्मा को पाना है उसको हिन्दु को भी कबूल करना पड़ेगा, मुसलमान को भी कबूल करना पड़ेगा। कबीर ने कहा, मैंने पूरा पाया। कबीर सबका स्वीकार करता गया। जो कहे, मैं इसको कबूल करूं, इसको न करूं तो इसने परमात्मा को नहीं पाया, परिस्थिति का लाभ उठाया! जिसने परमात्मा को पाया। इसलिए तुलसीदासजी 'उत्तरकांड' में दो-टूक बातें लिख देते हैं-

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं ।
करालं महाकाल कालं कृपालं ।
गुणागार संसारपारं नतोऽहं ।।

गुलाब का पौधा है। गुलाब का फूल है। उसके पास कांटे है। पौधा परमात्मा है, उसके पास दोनों है। खार भी है, फूल भी है। उसको आप बांटो तो अच्छा है अवश्य।

फोई अशुभ है, बुरा है। चूभता है बार-बार लेकिन वो भी परमात्मा नहीं है। परमात्मा तो पूरा पौधा है।

जड़ चेतन गुन दोषमय बिश्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार ।।

''बापू, तमे काले कीधुं के प्रसन्नता ए पुण्य छे ने अप्रसन्नता ए पाप छे. ज्यारथी अहीं आववानुं थयुं एटले मने बहु प्रसन्नता थई पण काले एक दिवस पूरो थइ गयो तो अप्रसन्नता शुरू थई गई!'' आने नेगेटिव सोच कहेवाय। आमां रोवा जेवुं छे शुं? बाप! स्वाभाविक है, प्रसन्नता पुण्य है, एक दिन चला गया दुःख होता है कि जल्दी-जल्दी नौ दिन चले जाएंगे तो वही शाम वही गम! मैं समझ सकता हूं। 'मानस-सुकरात', एथेन्स में शोभितभाई ने गज़ल लिखी है-

आनंद पोते गाजे सुकरातना शहेरमां।
आ कोण आव्युं आजे सुकरातना शहेरमां।
अनुकंपा ने करुणा निर्मळ प्रशांत सूरमां,
नाचे छे साजेसाजे सुकरातना शहेरमां।

सुकरात के चार सूत्र मैं आपके सामने लाया हूं। एक तो मैं बीच में बोल गया। एक है, एकमात्र सच्ची बुद्धिमत्ता यह समझ में है कि आप कुछ नहीं जानते। सबसे बड़ी बुद्धिमत्ता उसमें है कि यह जान ले कि मैं कुछ नहीं जानता। बहुत प्यारा सूत्र है। क्योंकि यहां हम कुछ नहीं जान पाते हैं। चलो, हम जीव है, कुछ जानते हैं। स्वीकार कर लो लेकिन कुछ भी न जानते हुए कहते हैं, हम सबकुछ जानते हैं! यहीं से हमारी अध्यात्मयात्रा रुक जाती है। आगे नहीं बढ़ पाते। यह बहुत मौलिक बात है कि कबूल करना। देवी को जब एथेन्सवासीओं ने पूछ लिया कि हमारे यहां सबसे बड़ा ज्ञानी कौन है? तो देवी ने कह दिया, सुकरात। अब देवी बोल दे, क्या कहना? तो सब लोग सुकरात के पास आये कि देवी ने बोल दिया, सबसे बड़ा ज्ञानी आप हो। सुकरात ने कहा, जो देवी बोली वो आप समझे नहीं या ख़बर नहीं, बाकी मैं कुछ नहीं जानता हूं। मैं ज्ञानी नहीं हूं। भीड़ फ़िर गई वहां। कहे, सुकरात तो कहता है, मैं ज्ञानी नहीं हूं। देवी ने मुस्कुराते हुए कहा, इसलिए वो ज्ञानी है, क्योंकि वो कह सकता है कि मैं ज्ञानी नहीं हूं। बड़ा मुश्किल है, कठिन है। हमें कोई ज्ञानी कहे, भक्त कहे, अच्छा लगता है। बहुत प्यारा लगता है। इन बातों से जो बाहर निकल गया, उसकी बातें हम समझे तो धन्य हो सकते हैं।

दूसरा सूत्र, आत्मा की उन्नति अथवा देखभाल दो बस्तु से हो सकता है। एक विवेक और दूसरी सच्चाई। विवेक और सच्चाई के बिना आत्मा की उन्नति हम नहीं कर पाते। 'विवेक' और 'सच्चाई' ये दो शब्द बहुत आवश्यक है। अब मैं तुलसी का आधार लूं इससे पहले यह भी कह दूं कि विवेक की प्राप्ति होती है सत्संग में। 'बिनु सत्संग बिबेक न होई।' सत्य की प्राप्ति करनी नहीं होती है, उसको प्रकट करना पड़ता है। हम खुद न कर पाए तो किसी मार्गदर्शक की जरूरत पड़ती है जो उसे खोले, दीप जलाए। सत्य यानी सच्चाई और विवेक की बात सुकरात ने कही। गोस्वामी 'मानस' में कहते हैं-

सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी ।
माधव सरिस मीतु हितकारी ।।

एक पौधे को बड़ा करना है तो अच्छी खाद चाहिए। समय पर जल सींचना चाहिए। अच्छी वायु चाहिए। सुरक्षा चाहिए। सूर्य का ताप भी चाहिए। अनर्थकारी जीवों से बचना भी पड़ेगा। सुकरात आत्मा की उन्नति की बात करता है उसमें दो ही बात बीच में रखता है, विवेक और सच्चाई। सत्संग से विवेक आता है। सत्संग का अर्थ है सत्य का संग। ठीक है हम कह देते हैं, मैं बोलूं आप सुनो वो सत्संग है। अच्छी बातें हो वो सत्संग है, लेकिन सही अर्थ है सत्य का होना और उसी से जो प्रकट होता है उसका नाम विवेक है। आत्मा की उन्नति की देखभाल सुकरात की दृष्टि में विवेक और सच्चाई में होती है। मुझे प्यारा लगता है।

सुकरात कहते हैं, आप मुझे दंड दे रहे हैं तो देवों के विरुद्ध पाप कर रहे हैं। मेरा स्वीकार देवताओं ने किया है, तुमने नहीं। बड़ी बात यह है कि देव हमें कबूल करे। लोगों का क्या? लोग तो आज कबूल करे, कल गालियां दे! आज पैर छुए, कल खींचे। क्या ठिकाना? जिसको साधुपना पाना है वो दोनों का स्वीकार करे। मुझे पूछा गया कि 'बापू, आपने कहा, स्वीकार करना चाहिए। कितनी हद तक स्वीकार करे?' यह प्रश्न बार-बार उठता है। शुभ-अशुभ का स्वीकार करे। अस्तित्व ने यह नहीं देखा है, तू अच्छा है या बुरा है। उसने हमें पृथ्वी रहने के लिए दी है। उसीने उसका जल हमें पिलाया। उसीकी हवा से हमें जीवित रखा। उसने हमें तेज दिया। अस्तित्व इतना स्वीकार करता है तो उसकी छाया में पलनेवाले हम कुछ स्वीकार करें। हमें भी तो दीक्षित होना है शुभ-अशुभ। हम

कमजारियों के पूतले हैं। सुकरात को पता है, मुझे दंड दिया जाता है, बेबुनियाद है! दो प्रस्ताव आये थे सुकरात के सामने। हम सब जानते हैं। अच्छे लोग समझते थे कि यह बुद्धपुरुष रह जाये तो अच्छा है। दो प्रस्ताव में एक था, हम नौका की व्यवस्था करे और आप यहां से निकल जाए। कोई ऐसी स्वतंत्र जगह पर जाये। देश छोड़ दे। दूसरी बात आई ज्युरी के सामने मौन रहो तो बात खतम! सुकरात ने कहा कि ये दो बातों के लिए सत्य को इतना बड़ा धोखा दूं? मैं भाग जाऊं क्या? मैं एथेन्स को छोड़ दूं? मृत्यु जैसी छोटी-सी बात जो निश्चित है। तो कहे, आप चुप रहो। सुकरात इतना प्यारा आदमी था कि वो बाज़ार में निकलता तो युवान लोग उसे चारो ओर से घेर लेते थे। वह आदमी कितना प्यारा रहा होगा? वो बोले, मैं बोलना बंद नहीं करूंगा। यह आदमी कहता है, मैं मौन नहीं रहूंगा और भागूंगा भी नहीं। सत्य का उपासक भागता नहीं है यार! कैसे भागेगा? इसका निर्णय बड़ा प्यारा लगता है।

अब चौथे सूत्र में जो आज की बात है, सद्गुण ज्ञान है। अच्छाई जहां होती है वहां ज्ञान होता है क्योंकि कोई भी व्यक्ति स्वेच्छा से बुरा नहीं करता, ऐसा सूत्र है। सद्गुण की चर्चा सुकरात ने बहुत की। लेकिन ज्यादा बात सत् की है। सद्गुण में भी प्रधान सद् है। इतने सालों पहले कही गई बातें आज हम खोलकर इसलिए कर रहे कि हमारे लिए प्रासंगिक है। देव ने जिसको अनुमोदित किया हो उसको दंड मत देना। व्यक्तिगत रूप में मैं किसीको दंड देने के पक्ष में नहीं हूं। संविधान, न्यायतंत्र अपना काम करे। कुछ भी किसी ने किया हो, क्षमा कर दो। लेकिन दुनिया में जो घटनाएं चलती है। न्याय अपना काम करे। उसमें मैं हस्तक्षेप न करूं। तुलसीदासजी ने लिखा है, रामराज्य में 'दंड' शब्द ही निकाला गया था। दंड केवल जो संन्यासियों के हाथों में लाठी रहती थी वहां ही एक मात्र 'दंड' शब्द का प्रयोग किया जाता था। एक-दूसरों के बीच में परदा भी नहीं रहता था। परदा केवल रंगमंच और नाट्यकारों के बीच में रहता था। व्यक्ति-व्यक्ति के बीच में भेद न था। क्षमा को इतनी कमजोर क्यों समझते हो?

बाप! कोई गुनाह करे और आप भी स्वाभाविक दंडपक्षी न हो तो केवल जिसस को याद करना। उन्होंने एक वाक्य कहा था, इन लोगों को ख़बर नहीं है कि क्या कर रहे हैं! इसमें पूरा शास्त्र आ जाता है। एक बालक शीशा तोड़ दे उसको पता ही नहीं, क्या कर रहा है? सुकरात जाने के समय जो प्रवचन देते हैं मुझे बहुत अच्छा लगता है। कहता है, मेरे एथेन्सवासियों; ये कोई व्यक्तिवाचक नहीं, पूरा राष्ट्र सामने आता है। कितना विशाल दृष्टिकोण रहा होगा? वो कहते हैं कि मेरे एथेन्सवासियों को मुझे इतना ही कहना है, मेरे साथ जो रहा है, मेरे मन में किसी के भी प्रत्ये कटुता नहीं है। नरसिंह याद आता है -

जे गमे जगतगुरु देव जगदीश ने,
ते तणो खरखरो फोक करवो;
आपणो चिंतव्यो अर्थ कंई नव सरे,
ऊगरे ए ज उद्वेग धरवो.

युवान भाई-बहन, सुकरात आज भी हमें प्रेरणा देता है। इसलिए हमने यह स्थान भी चुना, सब्जेक्ट भी चुना। स्वाध्याय करेंगे, बात करेंगे। मेरे पास जो भी माहिती है, चर्चा करेंगे। मेरे से ज्यादा आपके पास कितनी जानकारी है? एक-दो मिनट भगवान नाम का स्मरण करें।

गांधीबापू को पूछा गया कि आपको रामनाम में इतनी बड़ी श्रद्धा है तो आप सत्य ही बोलते हैं, रामनाम के कारण बताइए। गांधी ने कहा, तीन कारण है। एक, रामनाम भयंकर से भयंकर स्थिति में से निकाल देता है। कोई भी समस्या ऐसी स्थिति पर पहुंची कि अब कोई चारा नहीं है, मुझे रामनाम ने मदद की। अब चलें अरुणाचल जहां महर्षि रमण बैठे हैं। रमण को पूछा गया तो रमण कहते हैं, मेरी तरह शांत, मौन और एकांत में चुपचाप बैठना। जो समस्या से पचास वर्ष में आप नहीं बाहर आ पाए वो पचास मिनट में होगा। यह रमण के शब्द है। तीन वस्तु- शांत, एकांत और मौन। तीसरी बात भगवान चैतन्य गौरांग। उसको जब पूछा गया, आप पर कोई मुश्किल तो आती होगी? बोले, इन्सान है तो आएगी। उसका उपाय? बोले, एकमात्र उपाय नर्तन। आप नृत्य करो। आप गाओ, 'हरि बोल।' आप धीरे-धीरे समस्या से मुक्त हो जाएंगे। इन बुद्धपुरुष की बात मैं आपके सामने कर रहा हूं लेकिन हमारे अनुभव का सत्य तो तभी बनेगा जब हम ऐसा करें। मैं नहीं चाहता कि मुश्किलें आए और हम करें। पहले तो मुश्किल ही न आए, लेकिन मुश्किल तो आएगी। दुनिया है, जगत है। बाहर से नहीं आती तो हम खुद खड़ी करते हैं। चैतन्य कहते हैं, आप पर कोई मुश्किल आई है और आप उससे मुक्त होना चाहते हैं तो आप बेकार परेशान न हो, आप नृत्य करो। हरि नाम ले।

मुझे यह भी प्रश्न पूछा गया था कि सुकरात का मंत्र कौन? सुकरात राम, कृष्ण, अल्लाह, जिसस बोलता था? महापुरुषों के मंत्रों की ख़बर ही नहीं मिलती। सुकरात का मंत्र था विचार। विचार का अर्थ मंत्र और मंत्र का अर्थ विचार होता है। इसलिए हमारे यहां दो आदमी परस्पर मिलते हैं, विचार करते हैं वो उसको मंत्रणा कहते हैं। विचार-मंत्र से शब्द आया 'मंत्रणा।' मंत्र मानी विचार। सुकरात मंत्रों की मूर्ति है। उसके पास विचार है। हमने पहले से ही दरवाजा बंद कर दिया कि राम-राम क्या है? गांधीजी मूर्ख नहीं थे; बेरिस्टर थे। उसकी जब प्रेक्टिस चलती थी साउथ अफ्रिका में उस समय बहुत थी। जब उन्होंने यह मार्ग चुना; सब छोड़ दिया जगत को मुक्ति दिलाने के लिए लेकिन उसके पीछे रामनाम का बल है। हरिनाम लेने से विश्राम और जागृति की प्राप्ति हो जाती है। इसलिए तुलसी ने हनुमानजी की वंदना उसके बाद 'रामचरित मानस' में रामनाम की वंदना की। पूरा प्रकरण रामनाम की वंदना। एक-दो चौपाई गान करें-

बंदऊ नाम राम रघुबर को ।
हेतु कृसानु भानु हिम कर को ।।
बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो ।
अगुन अनुपम गुन निधान सो ।।

तुलसी कहते हैं, रामनाम में पहले र-अ-म यह तीनों में रकार यह अग्नितत्त्व है। अकार यह सूर्यतत्त्व है और मकार चन्द्रतत्त्व है। अग्नि कचरे को जला देता है। सूर्य अंधेरे को भगा देता है। चन्द्र शीतल चांदनी में हमें विश्राम देता है। मेरे गोस्वामीजी के नाम का विज्ञान यह है कि रामनाम लेने से आदमी के भीतर का अग्नि पैदा होता है। रामनाम यानी परम का नाम। मेरा आग्रह नहीं कि रामनाम। यह मैं सालों से बोलता हूं। दुनिया जानती है। मैं अपने राम को सीमित करना नहीं चाहता। कृष्णनाम, दुर्गानाम, शिवनाम आप जो चाहो ले सकते हैं। लेकिन रकार अग्नितत्त्व होने के कारण कचरे को जला देता है। अकार सूर्यतत्त्व है। अंधेरे को हटा देता है। और मकार चन्द्रतत्त्व है इसलिए विश्राम, शीतलता देता है। रामनाम प्रणव पर्याय भी स्वीकारा है तुलसीदर्शन में। कोई न स्वीकारे तो वो उनकी मौज है। प्रणव पर्याय यानी ॐ कार। रामनाम वेद का प्राण है। यदि राम न हो तो वेद नहीं रहता। जैसे प्राण न हो तो शरीर शब बनता है। परम ऊर्जा का नाम राम है। परमतत्त्व का नाम राम है। इस नाम की वंदना मैं करता हूं। नाम की महिमा गज़ब है। मैं बारबार बोलता हूं। गुरुकृपा से बोलता रहूंगा लेकिन मैं आपको साफ़-साफ़ कह देता हूं कि केन्द्र में तो हरिनाम है। हरिनाम के बिना मेरे लिए कोई उपाय नहीं है। मेरा कुछ भी है, नाम का प्रताप है। हरिनाम के सिवा मेरी कोई संपदा नहीं है। प्रभु का नाम जिसमें आपकी श्रद्धा हो क्या फ़र्क पड़ता है? रामनाम की महिमा बाप! राम ने जो त्रेतायुग में किया, रामनाम कलियुग में कर सकता है। हम इस नाम का आश्रय करे।

मुझे लोग पूछते हैं, माला रखते हैं तो निरंतर माला जपना? जरूरी नहीं है। अंदर जब ईर्ष्या, द्वेष पैदा होने लगे तब माला करो। मुझे कई लोग कहते हैं बापू, माला करता हूं। नाम ज्यादा बोलता हूं। मणके धीमे हो जाते हैं। यह अच्छी बात है। क्या बिगड़ गया? गोस्वामीजी ने बहुत स्पष्ट बताया है, सतयुग में लोग ध्यान करते थे। त्रेतायुग में वो ही परम अनुभव यज्ञों से होता था। द्वापर में

स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल, हम त्रिभुवन कहते हैं। तो स्वर्ग यानी उपर। मुझे स्वर्ग क्या है पता नहीं, लेकिन स्वर्ग यानी आकाश। आसमां सत्य है। कुछ है वो सत्य नहीं है। कुछ भी नहीं वो सत्य है। जरा कठिन पड़ेगा, प्लीज़। सूरज है वो सत्य नहीं है, क्योंकि सूरज खतम हो जाएगा। चांद चला जाएगा। सर्वोच्च सत्य है कि कुछ नहीं है इसलिए सर्वोच्च सत्य आसमान है। और पृथ्वी मेरी समझ में है प्रेम। प्रेम पृथ्वी पर ही होता है। कोई थोड़ा स्पेस में जाए तो एक-दूसरे के गले भी नहीं मिल सकते! पृथ्वी प्रेम है, आकाश सत्य है और पाताल करुणा है। करुणा के समान गहराइ किसी की नहीं हो सकती। उसको हम नहीं पा सकते।

उसी परम अनुभव पूजा-अर्चा से होता था। कलियुग में वही अनुभव केवल नाम से होता है। इसका मतलब यह नहीं कि हम ध्यान न करे। जिसको लगता हो वो करे, जरूर करे ध्यान। कलियुग में यह सब न हो पाए तो रामनाम पर्याप्त है। गोस्वामीजी कहते हैं, इसकी महिमा मैं कब तक गाउं? राम खुद गाए तो भी ठीक से नहीं गा पाए। प्रभु का नाम महान है। कलियुग में न हमारा कर्म ठीक है, न ध्यानयोग ठीक है, न हमारा भक्तियोग ठीक है। केवल प्रभुनाम ठीक है। 'मानस' में रामनाम प्रकरण है। इतनी छूट दी गई कि भाव से लो, अभाव से लो, आलस में लो, खुशी में लो, नाम से दिशाएं मंगल होती है। मेरी मांग तो सिर्फ़ इतनी है जो मधुसूदन सरस्वतीजी ने एक सूत्रपात किया था उसके आधार पर। युवान भाई-बहन को स्कूल-कोलेज जाना है, अपना कार्य करना है, लेकिन इतनी अपेक्षा तो जरूर व्यासपीठ रखे कि कोई भी काम अब शेष नहीं रहा। टी.वी. भी देख लिया। सब चेनल देख ली। सबकुछ कर लिया फिर भी नींद नहीं आ रही है तो क्या करे? तो दो-पांच मिनट भी आदमी अपने इष्ट का नाम ले, बहुत बड़ी साधना है, बहुत बड़ी उपासना है। जिसको मधुसूदन सरस्वतीजी कहते हैं, उसको व्यर्थ न गंवाए; उसको हाथ से जाने न दे। तो प्रभु का नाम बड़ा महिमावंत है। नाम की बड़ी महिमा यहां बताई गई।

कबीरा कुआ एक है पनिहारी अनेक।
बरतन सब न्यारे भये पानी सबमें एक।

लेकिन तथाकथित धर्मावलंबियों ने अपने-अपने आग्रह कारण बहुत दीवारे पैदा की है कि यही नाम लो! यही सच्चा मंत्र है! नहीं, नहीं, यह ठीक है? इस पर दया आती है। विनोबाजी ने भी रामनाम पर छोटी-सी पुस्तिका लिखी। युवानों को हाथ में आ जाए तो पढ़ लेनी चाहिए। गांधीबापू ने तो रामनाम पर छोटी-सी पुस्तिका दी ही है। प्रभु के नाम की बड़ी अद्‌भुत महिमा है। मेरे पास लोग आते हैं कि प्रभु के नाम लेने की विधि क्या है? मैं कहता हूं, विधि नहीं विश्वास बस! मेरे तुलसी ने 'विनय' में लिख दिया है, कैसे ही जपो।

बिस्वास एक राम-नामको ।
मानत नहिं परतीति अनत ऐसोइ सुभाव मन बामको ।

कुल मिलाकर अपना व्यवहार निभाते-निभाते विश्वास से जितना समय मिले, हरिनाम लेना बस, पूरा। न कपड़े बदलने जरूरी, न स्थलांतर की जरूरत। युवान भाई-बहन को जब मैं नाम की बात करता हूं तो यह भी सावधानी बरते कि अपना कर्तव्य न चुके। जागृति जरूरी है। प्रभु के नाम के साथ व्यवहार भी निभाएं और विश्वास से नाम लें।

नाम की महिमा का गायन किया। उसके बाद कथा के क्रम में तुलसीदासजी ने कथा का सर्जन कैसे हुआ वो बताया। वाल्मीकिजी आदि कवि है। शिवजी अनादि कवि है। यह बिलकुल सत्य है, मैं मानता हूं। शिवजी ने इस 'मानस' की स्थापना की। 'मानस' के दो अर्थ; 'मानस' यानी हृदय। 'रचि महेस निज मानस राखा।' अपने हृदय में इस ग्रंथ को रचना करके रख लिया। योग्य समय आया तब भवानी के सामने इस शास्त्र को खोला। उसके बाद भगवान शिव से ही कागभुशुंडि बाबा को मिला। उसने गरुड के सामने गाया। फिर यह शास्त्र याज्ञवल्क्य महाराज के पास आया। याज्ञवल्क्य महाराज ने प्रयाग में भरद्वाजजी को कथा सुनाई। उसी परंपरा में तुलसी कहते हैं, मेरे गुरु ने मुझे यह कथा सुनाई वराह क्षेत्र में। मेरा बचपन था, मेरी नादानी थी। मेरे गुरु मुझे रामकथा देते थे, लेकिन मेरे दिमाग में बात नहीं बैठती थी। मेरे गुरु ने यह कथा मुझे बार-बार सुनाई तब जाके कुछ बात मेरे मन में बैठी और जैसे बैठी ही मैंने पक्का कर लिया कि शास्त्र को मैं भाषाबद्ध करूं ताकि मेरे मन को बोध हो। तुलसी ऐसा शिवसंकल्प करते हैं।

तुलसी ने ग्राम्य गिरा में शास्त्र को उतारा। वाल्मिकी ने क्या किया? शोक को श्लोक में ऊतारा। गोस्वामीजी ने श्लोक को लोक में ऊतारा। सभी महापुरुषों ने यही काम किया। बुद्ध ने किस भाषा में बातें की? महावीर ने किस भाषा में बातें की? जिसस, महम्मदसाहब ने किस भाषा में बातें की? तुलसीदासजी ने रूपक बनाया मानसरोवर। चलता-फिरता मानसरोवर। चार घाट बनाए। एक घाट का नाम ज्ञानघाट, जहां शिवजी भवानी को कथा सुनाते हैं। दूसरा घाट है कर्मघाट, जहां याज्ञवल्क्य भरद्वाजजी को सुनाते हैं। तीसरा है उपासना का घाट, जहां कागभुशुंडिजी गरुड को सुनाते हैं। और चौथा दीनता का, शरणागति का घाट है जहां तुलसी अपने मन को और आए साधु-संतों को कथा सुनाते हैं।

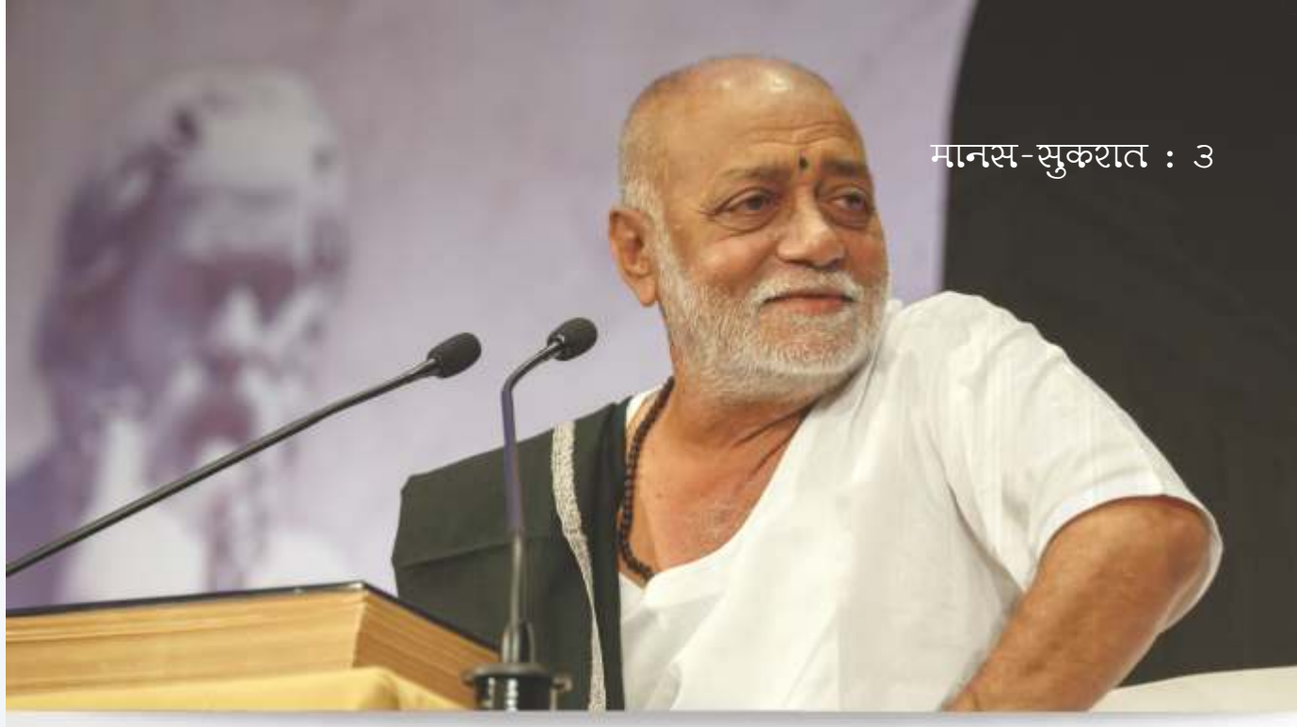

सुकरात ग्रीस का महावीर है

'मानस-सुकरात', इस कथा का केन्द्रबिंदु है। उसमें प्रवेश करें इससे पूर्व कल सायंकालीन एक सत्संग सभा में परम स्नेही आदरणीय सुमनभाई शाह ने कथा के बारे में अपना मूल्यांकन पेश किया। आदरणीय बापा ने (नगीनबापा ने) भक्ति के बारे में 'गीता' को केन्द्र में रखते हुए अपने जो मौलिक विचार है वो पेश किए। आदरणीय खख्खरसाहब ने भी अपना अवलोकन पेश किया। और डोलरभाई ने बहुत चंद शब्दों में धन्यवाद व्यक्त किया। और ये सभी में जो सूत्रधार का काम कर रहे थे, शोभितभाई ने अपनी अदा में अपनी स्फूर्तिली अदा में संकलन किया। और मुझे आनंद है कि सभी श्रोताओं ने आनंद से श्रवण किया। सायंकाल की सभा बड़ी महिमावंत थी। मैं मेरी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। फिर आपने रात का भोजन किया होगा। विधविध व्यंजन को न्याय दिया होगा! फिर कितने प्रकार के कोल्ड्रिंक्स, आईसक्रीम आदि-आदि..! अब आप विचारो, आ बधानी केन्द्रमां हुं पण मारे कांई नहीं! तमे बधा झपट बोलावो! लेकिन कभी-कभी औरों की तृप्ति साधु की तृप्ति बन जाती है। और याद रखना मेरे भाई-बहन, प्राप्ति में कभी संतोष नहीं है, तृप्ति में ही संतोष है। आप कहे कि मुझे करोड रूपये की प्राप्ति हो जाय तो संतोष नहीं होगा। दूसरे करोड की प्राप्ति की लालच होगी। पूछो, कई धनवान यहां बैठे हैं। पूछो रमेशभाई को ये तो मेरे परमस्नेही है। बाकी तो खर्च भी इतने करते हैं। पाने में तृप्ति नहीं है, संतोष नहीं है। तो एक प्रकार की तृप्ति तो आनंद ही है। फिर रात को आप सोये होंगे। फिर अपने समय पर जागे होंगे। फिर वो ही सुबह, ब्रेकफास्ट आपने सबको ठीक से न्याय दिया होगा। समय पर आप यहां हाज़िर हैं और आगे बढ़ें।

हम गा न सके लेकिन सूर तो पकड़ सकते हैं। ये हरीशभाई सालों से गाते हैं। ये हितेश बेन्जो बजाता है। ये पंकज तबला। हका कविता लिखता है। सुकरात का एक सूत्र है, 'कवि वो है जो केवल ईश्वर की ओर संकेत करता है।' और कवि एक वृक्ष की कविता करेगा तो संकेत तो परमात्मा है। कवि एक वक्त नदी की कविता लिखेगा तो संकेत तो परमात्मा की ओर है। कवि आसमां पर नि:शब्द कहेगा तो संकेत परमात्मा की ओर ही होगा। कवि कोई पहाड़ की ओर तेज की ओर तत्त्वत: जा तो रहे हैं उसीकी ओर। तो ये हका थोड़ा कविता भी लिखता है। हां, ये तो सबकी अपनी निजता होती है। हरीशभाई तो कविता लिखते ही है। ये पंकज भी पहले लिखता था। प्रास में ही लिखता था और हका तो वो अपने ढंग से लिखता है। हमारे साथ आफ्रिका एक नाथजी आये थे। जंगल में ही घूमते रहते हैं। सोचा कि पासपोर्ट बना लिया जाय। तो वहां से कुछ यजमानों ने कुछ प्रसादी दी कि ये कुछ लो। उन्होंने यहां आ के बाइक खरीदी। तो हका ने दो पंक्ति में कविता

लिखी कि नाथ को दीक्षा लेने की जरूरत थी लेकिन उसने रीक्षा ली! हितेश नहीं लिखता। कीर्ति भी नहीं लिखता; दिला नहीं, जानता नहीं। ये हमारा सालों का संग है। यही हम स्मरण में रखते हैं और आप भी कि 'पोथी ने परतापे क्यां-क्यां पूगियां!' नीतिन वडगामा की कविता है। शायद ओसमान ने गाई है। सूरमय वातावरण हो जाय! 'पोथी ने परतापे क्यां-क्यां पूगिया...' तो ये हम सब व्यासपीठ से जुड़े सब ये महसूस करते हैं।

मेरे भाई-बहन, चार वस्तु याद रखना। एक आदर; दूसरा वात्सल्य; तीसरा जीवन में कोई खिताब मिल जाय और चौथा कृपा; ये जब भी मिले उसको पचाना। कभी-कभी हमें सन्मान मिल जाय लेकिन पचता नहीं। वात्सल्य भी नहीं पचता। बालक को माँ लहू का दूध बनाकर गोद में परमात्मा से निकट रखकर के दूध पिलाती है। कभी-कभी बच्चे को पचता नहीं तो वमन कर देता है। वात्सल्य पचाना। दूसरा आदर, किसी ने दो बार सलाम की हो, किसी ने मीठा आवकार दिया हो उसको पचाना। तुम्हारे किसी विशेष गुण के कारण, किसी विशेष कर्म के कारण कोई विशेष उपलब्धि प्राप्त की हो, कोई विशेष खिताब प्राप्त हो तो उसे पचाना। और सद्गुरु की कृपा हो, कृपा को पचाना। ये बहुत कठिन है; बहुत कठिन है। इन चारों को जो पचा लेता है वो इस जीवन में बहुत प्रसन्न रह सकता है; बहुत प्रसन्न रह सकता है। आप मुझे पूछेंगे नहीं मगर पूछो, ये रोज आप ये दोहा लेते हैं, 'अयोध्याकांड' का पहला दोहा है और 'हनुमानचालीसा' का पहला दोहा है -

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि ।।

जो ये परमात्मा की कथा गाये, सुने, 'हनुमानचालीसा' का पाठ करे, आदि-आदि जो कुछ करो। उसके चार फल बताये, चार फल दिये। कौन चार फल? सीधा शास्त्रीय अर्थ तो हमारे सामने एकदम खिड़की खोलकर खड़ा रहता है कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तो सीधे फल है। उसको हमने पुरुषार्थ भी कहा है, फल भी कहा है। तो आप कथा का आश्रय करेंगे तो आपको लोग धार्मिक तो कहेंगे ही। धर्म का फल मिलेगा। अर्थ मिलेगा। अर्थ यानी रूपयों-पैसों में मैं नहीं बात करता। अथवा तो कथा में ये जो अर्थ खर्च करते हैं। वो सामान्य खर्च तो नहीं होता। हमारे लिए इतनी सुविधायें जुटाते हैं। अर्थ भी मिल जाता है। अथवा छोड़ो, जीवन का अर्थ प्राप्त हो जाता है। रूपयों-पैसों में नहीं। तीसरा या तो आदमी पूर्णकाम हो जाता है या तो आदमी निष्काम हो जाता है। ये कथा का फल है। और चौथा? 'मुक्ति तो एनी दासी रे।' नरसिंह मेहता कहता है। मुक्ति प्राप्त होती है। ये तो शास्त्रीय फल है। जो कहीं भी चार फल की प्राप्ति की बात होती है तो ये धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की बात आ ही जाती है। और है। लेकिन अपने अनुभवों के साथ गुरुकृपा के कारण आप सबकी दुआओं के कारण मुझे चार फल बताने हो तो कथा के चार फल क्या? तो आप जरा प्रसन्नता से सुनिये।

कथा का एक फल है पुंगीफल। पुंगीफल यानी सोपारी। कथा का दूसरा फल है कदलीफल; बनाना। तीसरा फल है आम्रफल। और कथा का चौथा फल है श्रीफल। श्रीफल का अर्थ है आदमी दुनिया की मुसीबतों को सहन कर सके। नारियेल का उपर का भाग इतना कठोर होता है, लेकिन अंदर ऋजुता का जल भरा होता है। कथा का ये फल है कि संसार की मुसीबतों को फेस करने में आप नारियेल की तरह रह सके। और आपके भीतर आपका दिल पानी-पानी हो; भीगा हो। पुंगी फल का अर्थ है आप किसी की पूजा का उपयोगी बन जाय। किसी के उपयोग में आ जाय। यद्यपि भगवान वल्लभ 'पूजा' के बदले 'सेवा' शब्द का उपयोग करते हैं। कथा का एक फल है बनाना, केले। ये ऐसा एक मीठा फल है जिसमें कोई बीज नहीं है। जिसमें से फिर कोई कामना रही नहीं होती। कबीरसाहब ने एक ग्रंथ दिया है, जिसका नाम है बीजक। मैं कभी आपको बीजक के बारे में कहूंगा। मैं ये ग्रंथ देख रहा था तो लगा, इसको खोलने जैसा है। बीज जमीन में बोया जाय। इसे खोलना मना है लेकिन साधु के मन में जो बीज है, खोला जाय, नहीं तो मर जायेगा! कथा का ये फल है बीजमुक्त फल। और चौथा फल है आम्रफल। जिसे हम रस रसाल कहते हैं। कथा ये चार फल देती है।

दूसरी बात कहूं? कथा में मैं ये कहूं तो मेरा अनुभव है। भगवान राम ने जब धनुष तोड़ा तो पकड़ा, उठाया, तोड़ा फ़िर फेंक के चल दिया। यहां बैठा हूं तो मुझे 'मैं' 'मेरा' हूं ये कहना पड़ेगा। ऊतरुंगा तो सब फेंक के चल दूंगा। ये नियम है। शब्दो में 'मैं हूं' कहना पड़ेगा। लेकिन अन्यथा कोई न ले। लेकिन जैसे आप कथा का मूल्यांकन जरा भी अहोभाव-अधोभाव से मुक्त होकर करते हो तो लगता है, कथा समझी जा रही है। तो कथा का ये चार फल तो है ही। मैं दुनिया के सामने बहुत बार कह चुका हूं, मैं आस्तिक नहीं हूं। तथाकथित आस्तिक नहीं हूं। मैं तिलक-माला रखता हूं। मैं नास्तिक भी नहीं हूं। ईश्वर ने मुझे मनुष्य जन्म दिया और पघडीवाला सद्गुरु दिया। मेरे लिए कोई कम नहीं है। मैं किसी देवता से भीख क्यों मांगू? तो मैं हूं क्या? मैं वास्तविक हूं। मुझे याद आ रहा है मेरा स्वीकार। तो धार्मिक तो हम है। तो मैं साक्षर नहीं हूं। मैं शिक्षक था तो मैं निरक्षर भी नहीं हूं। मैं कोई अगोचर अक्षर का उपासक हूं। चार फल तो है ही लेकिन एक मधुर फल जो शुभ हो वो मधुर फल है।

ओशो ने कहा है, 'जो बोले सो हरि कथा।' अहोभाव से कहूंगा। जो अच्छा लगा; वो कहूंगा। सब बातों से सहमत होना जरूरी नहीं। हर वस्तु हरेक के लिए सही नहीं होती। संजय सिन्हा, उसकी कुछ किताबें हैं; उसने कहानी लिखी है। एक गांव के मुखिया का लड़का हाथ में लाठी लेकर जा रहा है। उसने एक शिक्षक की चलती साईकिल में लाठी घूसा दी। शिक्षक गिर गया। शिक्षक ने उठकर उस लड़के को दस रूपया दिया। ऐसे ही करते रहो। वो लड़का समझा, ऐसे ही करते रहना चाहिए। पंद्रह दिन के बाद एक दारोगासाहब से वही किया, लाठी डाली। पकड़ा, खींच के दो मारी! थाने में बंद कर दिया! लाठी सबके चक्र में नहीं डाली जाती। हम कहे, हमारा विचार सब मान ले। मूल में सोक्रेटिस का विचार है। अपने विचार सब मान ले! सबकी गति रूंध ले! सोक्रेटिस का विचार है; व्यक्ति की समस्या का आखिरी इलाज देना ये सोक्रेटिस की सोच रही। तो मेरी दृष्टि में रामकथा गाना-सुनना उसका एक फल है मधुर।

मंगल करनी कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की ।

दूसरा फल है अमरफल। यद्यपि 'अमरफल' रामकथा का शब्द नहीं। आज उस समय सुकरात के साथ कौन-कौन लोग थे उसका नाम लोग अहोभाव से ले रहे हैं। ये लोग अमर हो चुके हैं। सुकरात के जाने के बाद लोग प्लेटो का मुख ताकते थे। रोती थी एथेन्स की युवानी। जब मुकद्दमा चला, ज्युरी के जजमेन्ट देनेवाले थे। पूरी एथेन्स के लोग, महिलायें काले कपड़े ओढ़ के आई थी। मुंह नहीं दिखाती। पृथ्वी के एक बेगुनाह को दंड दिया जा रहा है! उसका शागिर्द रहा। पहले उसके साथ था वो विरुद्ध चला गया! यहां कौन कब बदल जाय कोई ठिकाना नहीं! यहां कई बुद्धपुरुषों के साथ ऐसे कई अनुभव हुए हैं। गुरु के विरुद्ध चला गया। जैसे ईसु की कुछ चंद सिक्के के लिए पहचान करा दी जुडास ने। सुकरात के जाने के बाद लोग प्लेटो को ताकते रहे थे। उसके पास कुछ अमरफल मिले। वो साथ रहे। प्लेटो भी अमर हो गया। सुकरात को जब सायंकाल को विष मिला, पीया। धीरे-धीरे अपने हाथों से चादर ओढ़ी। ये करुण दृश्य है। बुद्धपुरुषों के साथ इस जमाने ने ठीक काम नहीं किया! बाद में सब पूजते हैं।

एक वस्तु याद रखना, बुद्धपुरुष के समान विश्व में कोई सुखी नहीं होता और बुद्धपुरुष के समान विश्व में कोई दु:खी नहीं होता। ये मैं बिलकुल तराझू रखके बोल रहा हूं। कृष्ण ठीक कहते हैं, 'सुख-दु:ख समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।' झूके पर बैठो तो जितना आगे जाता है उतना पीछे। आप पैर रोक दो तो बात ओर है। जीवन के झूले पर बैठो पर हींचको मत। हींचको मत मानी घबराओ मत। बुद्धपुरुष की सेवा में पूरा अस्तित्व रहता है। लेकिन बुद्धपुरुष हर हाल में प्रसन्न रहता है। और यदि प्रसन्न रहना सीखना है तो हरिनाम जपो। वो मदद करेगा। बहुत सीधा-सरल उपाय है हरिनाम। मुस्कुरा रहा है। अगली रात सुकरात अपने शिष्यों से बात करता है, पिछली रात तो जाना है। जब उसने अंतिम सांस ली तब अस्तित्व में ब्यूगल बज रहे थे। परम चेतना जो धरती पर आयी थी, लौट रही है। कल्पना हो तो भी मुझे अच्छा लगता है। माँ के साथ बच्चे भी रो रहे हैं। कोई समझदार बच्चा पूछता है कि सब क्यों रोते हैं? तब कहा, एथेन्स को प्यार करनेवाला जा रहा है। राहत इन्दौरी का शे'र है -

जनाजे पर मेरे लिख देना यारो
मोहब्बत करनेवाला जा रहा है।

एक एथेन्स को प्यार करनेवाला जा रहा है। ये सोक्रेटिस का परिचय नहीं है। हम सबका परिचय है। और विष मनोमंथन के बिना निकलता नहीं। शंकर ने जो विष पीया वो समंदरमंथन से निकला और एक भोला आदमी पी गया। चालाक तो देवता थे। शंकर तो भोला है। एक शे'र सुनिए-

उसे कैसे बचाये टूट जाने से।
वो दिल जो बाज़ न आये फरेबखाने से।

जो जानबुझकर धोखा खाते हैं। वो एक शख्स एक लम्हे में टूट-फूट गया। मीरां को ज़हर दिया गया। शंकर ने ज़हर पीया राम को याद करके। मीरां ने ज़हर पीया कृष्ण को याद करके। सुकरात ने ज़हर पीया वो देवी को धर करके। कुछ न कुछ दैवी योग जुड़ा है। मीरां प्रसाद मानकर पी गई। शंकर भोलेबाबा औरों के प्रति करुणा के कारण पी गये और सुकरात को पिलाया गया। दयानंद सरस्वती, उसको रसोये ने ज़हर पिलाया जिसने 'वेदप्रकाश' दिया। और भगवान

बुद्ध को विषाक्त भोजन मिला। आनंद ने पूछा, क्या हो रहा है? बुद्ध ने कहा, कुछ नहीं। निर्वाण प्रकट हो रहा है; कहा नहीं; पेट में दु:खता है। बुद्धपुरुषों का शब्दकोश बिलग होता है। उसका संपादन खुद करता है। जिसके पास आर्ट हो उसे आर्टिस्ट कहते हैं। जिसके पास हार्ट हो उसे हार्टिस्ट नहीं कहा जाता। और कोर्ट में रोज जाते हैं उसे कोर्टिस्ट नहीं कह सकते। लेकिन ये 'कोर्टिस्ट' और 'हार्टिस्ट' शब्द तलगाजरडा शब्दकोश के शब्द है। उसका संपादक मोरारिबापू है। जिसके घर में रोज तकरार वो कोर्टिस्ट लोग है। जिसके घर में खाने को न हो फिर भी मुस्कुरा के जीते हो वो हार्टिस्ट का घर है। और जिसके घर में कुछ न हो पर एकतारा लेकर सूर में संध्या के समय आराधना करता वो उसका घर आर्टिस्ट का घर है। रहस्यवाले लोग हैं। बुद्ध को देखकर आनंद समझ गया, सूरज डूबने की तैयारी है। बुद्ध ने कहा, ये दर्द नहीं जो आप इलाज करो। ये निर्वाण उपड़ा है। दयानंद सरस्वती ने रसोये को कहा, तू निकल जा। और आनंद को भी कहा, उस आदमी को कोई कुछ ना कहना जिसके घर की मैंने भिक्षा पाई है। मेरा तो ये निमित्त है। और श्लोक का विष लोक तक आया। हेमु गढवी को अंजलि दे दूं। ये विषयात्रा घर-घर में पहुंची।

वहुए वगोव्यां मोटां खोरडां रे लोल,
वहु करे छे आपणा घरनी वात जो...

सुकरात की आख़री रात का प्रवचन था। 'आत्मा की अमरता।' दूसरे दिन मृत्युदंड देना कि नहीं उसमें मतदान हुआ था जिसमें छ से आठ का फ़र्क था। वोटिंग किया था सब साक्षरों ने। धीरे-धीरे सुकरात के शरीर के अंग शिथिल होने लगा, थोड़ा नीला होने लगा। जिन्होंने विष पीया हो वो ही सुन्दर होता है। ये रूखड ऋषि है। सुकरात ग्रीस का महावीर है। आप महावीर में हनुमान जोड़ो या तीर्थंकर, आप स्वतंत्र है। मेरी अंत:करण प्रवृत्ति में सुकरात महावीर है। आख़िरी तक अमरता की चर्चा की। वो नीला होने लगा। अल्लाह करे, किसी को ऐसा न हो। निकटवाले शिष्यों ने उनके पैर सीधे किए। चादर ओढ़ाई। वह आदमी के चेहरे पर प्रसन्नता का तेज है। चांद की शीतलता है। मणि की कांति है। सब महावीर के लक्षण है। सूर्य की प्रभा है। हाथी का स्वाभिमान है। सिंह का पराक्रम है। आकाश का निरालंबपना है। सूर्य का अनियत विश्राम स्थान है। पवन की असंगता है। वृषभ की शालीनता है। मृग के नेत्र है। क्या नहीं है सुकरात में? मुस्कुरा रहे हैं। लगा, अब कुछ लम्हें बाकी है। अपने शरीर से प्राण जाने कई द्वार होते हैं। जिसकी बोड़ी में से प्राण निकले और आप बैठे हो तो देखना, उसका प्राण किस द्वार से जाता है उस पर से पूरा जीवन का सरवाळा होता है। ये कसौटी है। कभी-कभी आदमी जाता है तो उसकी आंखों से आंसू गिरते हैं तो समझना उसके प्राण आंखों से गये हैं। कई प्रकार है उसमें न जाउं। कुछ भद्र भी है, कुछ अभद्र भी है। लेकिन बुद्धपुरुष का जाना चोघडियां वागतां होय।

आ छेल्ली रे वेळाना राम राम।
वाला रे संतने जय जय सीयाराम।

साधुओं में जब समाधि होती है, मातायें ये गाती है, 'मारी छेल्ली रे वेळाना राम राम।' मुझे सावित्री माँ की याद आती है। जब दादा गए, त्रिभुवनदादा। सबको इकठ्ठा किया। मैं दौड़ा, भागा! सब आइए, सब आइए! फ़िर माँ अच्छा गाती थी लेकिन कभी गाती नहीं। दादा बहुत अच्छा गाते लेकिन गाते नहीं। देखो ये उत्सव माना जाता है। मैंने बराबर उस समय देखा कि सोचा कि सब ढीले हो जायेंगे तो कैसे उत्सव होगा? फ़िर सावित्री माँ ने शुरू किया, 'अमारी छेल्ली रे वेळाना राम राम।' दादा नहीं कहा, 'ए वाला रे संतने जय जय सीयाराम।' पैर ठीक किये सुकरात के। चादर ओढ़ा दी। चंद लम्हें बाकी थे। पूछा सुकरात को मालिक, हम आपको कहां दफ़नाये? ये आखिर प्रश्न सुकरात के साथ करा। उसने जवाब दिया, एथेन्स के डहापनवाले लोग मुझे मारने के आये और आप मुझे दफ़नाने आये! न मुझे कोई मार सकता है, न कोई मुझे दफ़ना सकता है। मैं दो-तीन हजार साल के बाद खड़ा हो जाउंगा। तुम दटे रहोगे। मैं प्रकट हो जाउंगा। मुझे दाटनेवाला पैदा नहीं हुआ। यहां बुद्धिमानी मत करो। मैं तो विलीन हो जाउंगा। क्या भाषा बोलता है! जलन मातरी का शे'र है -

पीधां जगतनां झेर ए शंकर बनी गयो।
कीधां दु:खो सहन ए पयंबर बनी गयो।

आप लोग मुझे दाटनेवाले कौन है? छोड़ो ये फ़िक्र आप! मेरी बात नहीं समझी! ये दंड तो इसीलिए लगा कि तथाकथित पंडितों ने विरोध किया। क्योंकि मैं आसमान के उपर की बात करता था और धरती की पाताल की तोड़कर गहरी बातें करता था। लोगों को लगा ये नास्तिक है, ये अनास्था का प्रचार कर रहा है। आकाश के उपर की बात कोई कर नहीं सकता और पाताल तक की गहराई कोई छू नहीं सकता। और ये आदमी ये कह रहा है। यही तो गुनाह है। ये आदमी सबको भ्रष्ट कर रहा है। तो सुकरात की जो ये अंतिम क्षण है। मैं तो कल्पना करता हूं कि लोगों की क्या हालत हुई होगी? लेकिन अमरफल खा चुका था। अमरफल जो भर्तृहरि की कथा में आता है। उसके समय में जो थे प्लेटो, एरिस्टोटल, जो-जो थे वो आज अमर नहीं हो गये? उसने अमरफल पाया। फल हो सकता है। हम और आप रामकथा में रहते हैं, सुनते हैं तो रामकथा की कृपा से हमारा नाम भी अमर हो सकता है। लोग कहेंगे, सत्संग होता था। जरूरत नहीं, नोंध की जरूरत नहीं। समय लगेगा पचास साल! हम शाम को बैठकर ओसमान को सुनते थे। छोटे बच्चे को सुनते थे। ये सब अमरफल है। लोग याद करेंगे। हितेश बेन्जा बजाता। गजानन शहेनाई बजाता था। ये आनंद की बात है। इसमें भी कृपा पचाना, आदर पचाना, वात्सल्य पचाना, मिला हुआ खिताब पचाना।

इससे बढ़कर हमें क्या मिलती दादे वफ़ा,
हम तेरे ही नाम से दुनिया में पहचाने गये।

ओसमान गाता है। कथा में सब शरीक होते हैं। ये क्रीड़ा है। शिवसूत्र में 'करुणेव केलि' कहा है। तो -

श्री गुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ।।

तो चार फल। एक मधुर; दूसरा अमरफल; जो आदमी को जीवन और मरण का फल मिले, जो सोक्रेटिस ने पाया। तीसरा फल है सुकृत का फल, जो हमारा नहीं है। भगवद्कथा, शुभ चर्चा उसका श्रवण, गायन सुकृतफल है। सुकृत हमने क्या किया? लेकिन रामकथा सुने और हमारे पूर्वज ने जो सुकृत किया उसका फल हमें मिल रहा है। ये जो-जो कथा करवा रहे हैं वो उनके नहीं, उनके बापदादा के पुन्य है। ये पक्का गणित है। मैं आपके साथ रहना चाहता हूं। आप अन्यथा न लेना। लेकिन मुझे आनंद है कि सुकरात के पास जितने युवान थे उससे ज्यादा मेरे पास है। ये मेरे से कुछ नहीं चाहते। एक मेरी मुस्कुराहट चाहते हैं। और कुछ नहीं। लोग आते हैं, कहते हैं, आपने हमको एक बार देख लिया! लोग खुश है। फल मिल गया। सब सेवा में लगे हैं। आपको लगे कि हमारे बापदादा में ऐसा कुछ नहीं था, तो समझना आपके कुल का कोई बुद्धपुरुष होगा उसके भजन का फल है। जो कोई सद्गुरु।

जनक सुकृत मूरति बैदेही ।।
दसरथ सुकृत रामु धरें देही ।

सद्गुरु बाहर से सगुण होता है, अंदर से निर्गुण। उसको मैं सद्गुरु कहूंगा। अंदर से असंग। चौथा फल कथा श्रू मिलता है। पैसा कमाना कठिन है और सत्कर्म में लगाना कठिन है। लेकिन आज लोग छूटे हाथ खर्चते हैं। हमने केनेडा की कथा में हिसाब लगाया था, प्रति व्यक्ति बाइस केनेडियन डोलर था! नौ दिन तीन टाइम खाना। मैं नाटकवाला नहीं, फाटकवाला हूं, किसी को अकस्मात न हो जाय इसलिए। सुकरात का निर्वाण उत्सव है। इतना प्यारा पुरुष डहापनवालों ने ज़िंदा रहने नहीं दिया!

मेरा दामन बहुत साफ़ है।
आप तोहमत लगा दीजिए।

तहोमत लगा दीजिए का दो अर्थ है। मोरारिबापू के किए दो अर्थ। एक प्रश्नार्थ है, आपको तोहमत लगाना है? लगा दीजिए। मेरा दामन साफ़ है। दूसरा रांक स्वभाव है फ़कीर का। आपको तमोहत लगाना ही है ना तो मेरा दामन साफ़ है। व्यासपीठ पर मुझे क्या होता है, जैसे समंदर की एक लहर जाय और दूसरी उठे! जैसे ये सुनाउं, ये सुनाउं, ऐसा है! परमात्मा परीक्षा का विषय नहीं है, प्रतीक्षा का है।

सुकरात ग्रीस का महावीर है। आप महावीर में हनुमान जोड़ो या तीर्थंकर, आप स्वतंत्र है। मेरी अंत:करण प्रवृत्ति में सुकरात महावीर है। आख़िरी तक अमरता की चर्चा की। वो नीला होने लगा। अल्लाह करे, किसी को ऐसा न हो। निकटवाले शिष्यों ने उनके पैर सीधे किए। चादर ओढ़ाई। वह आदमी के चेहरे पर प्रसन्नता का तेज है। चांद की शीतलता है। मणि की कांति है। सब महावीर के लक्षण है। सूर्य की प्रभा है। हाथी का स्वाभिमान है। सिंह का पराक्रम है। आकाश का निरालंबपना है। सूर्य का अनियत विश्राम स्थान है। पवन की असंगता है। वृषभ की शालीनता है। मृग के नेत्र है। क्या नहीं है सुकरात में?

सिह गय बसह मीय पशु मारुद
सुखहि मन्दरिन्दुम् मणिखिलि।
उर गम वर सहिसा परम पय विमगया साहु।

- महावीर स्वामी

वहां साधुपुरुष के लक्षण महावीर स्वामी ने कहे हैं। ये सब सूत्र सुकरात के लिए सच लगते हैं। साधु में सिंह का पराक्रम होता है। सिंह उसको कहते हैं कि उसका पेट भर जाता है तो किसी का शिकार नहीं करता। और आदमी ऐसा है, करोडों-अबजों रूपये होते हैं तो भी उसका पेट भरता नहीं, दूसरा शिकार खोजता है! चर्चा बाद में कल करेंगे। साधु में हाथी का स्वाभिमान होता है। हाथी राजाओं की दोलत मानी जाती थी। साधु के स्वाभिमान हाथी जैसा, मुड़कर नहीं देखता, कुत्ते भौंके तो भी; निंदक कुछ भी बोले। हाथी जैसा स्वाभिमान। और सुकरात के पीछे कम कुत्ते नहीं भौंके! ये सब वन्य नहीं थे, नागरी थे! डहापणवाले लोग थे! अनपढ़ नहीं थे। समझदार कहे तो! साधना पक्की नहीं होती तो बड़े-बड़े फ़कीरों को भी चोट लगती है, असर कर देती है। हाथी हाथी है।

ईसप की कहानी है। शेर ने जंगल में पूछा सबको, जंगल का राजा कौन? सब ने कहा, आप। हाथी से पूछा तो उसने पतली कमरवाले शेर को पकड़ के उछाला! शेर ने कहा, जवाब न आये तो इतना गुस्सा करने की क्या जरूरत है? साधु का स्वाभिमान हाथी जैसा होता है। मेरी समझ में नहीं आता, कोई धर्म ने एक साथ नारी के साथ अन्याय किया है! एक भी नारी आज तक शंकराचार्य नहीं हुई। एक भी नारी पोप, तीर्थंकर नहीं हुई, कोई पयंगबर नहीं हुई। बुद्ध के पास गौतमी गई जो उसकी सौतेली माँ थी उसे बुद्ध ने दीक्षा नहीं दी। मना कर दिया। जैसे सनातन धर्म में वेद, यज्ञ, 'हनुमानचालीसा' कुछ नहीं अधिकार। केवल गरबा ही करना! बार-बार भिक्षुणी गई। बुद्ध ने दीक्षा के लिए मना कर दिया। आनंद बुद्ध के पास जाता है कि महिला शरीर का क्या अपराध? दूसरा मना करे ठीक है, लेकिन बुद्ध मना करे, मुझे रास नहीं आता। बुद्ध समझाते हैं, आनंद, जिद्द न कर। बुद्ध की भविष्यवाणी में कहा है कि मेरी विचारधारा एक हजार वर्ष तक चलेगी, लेकिन जो नारी को दीक्षा दी तो पांच सौ साल में खत्म हो जाएगी। लेकिन आप कहते हो तो दीक्षा देते हैं। लेकिन बुद्ध ने आठ कड़े नियम लादे हैं, स्वीकार्य नहीं है। एक, छोटा-सा बालक भिखु होगा तो भी आपको उसे प्रणाम करना होगा। दूसरा, आप किसीको उपदेश नहीं सुना सकोगी, बोलना बंद। माताओंने कबूल किया। आगे कहा, कोई काम आप अकेले नहीं कर सकती, कोई भिख्खु चाहिए। मुझे आठों याद नहीं।

हरेक धर्मों ने अनादर किया है फ़िर भी मुझे आश्चर्य है कि मातायें ज्यादा से ज्यादा उनके पीछे क्यों दौड़ती है, जिसको वो अछूत मानते हैं। माताओं को यज्ञ करने का अधिकार नहीं। मैंने बहुत दिल से कोशिश की है कि मेरे देश की या दुनिया के कोई देश स्त्री को यज्ञ करने का अधिकार नहीं, ऐसा नहीं; उसको यज्ञ करने की जरूरत नहीं। चूल्हे में इंधन डाल के बाल-बच्चों, अतिथि के लिए रोटला पकाये उससे बड़ा कोई यज्ञ नहीं है। सबसे बड़ा यज्ञ है। स्त्री को यज्ञोपवित की जरूरत नहीं। स्त्री से बढ़कर कोई द्विज नहीं। जिसका दूसरा जन्म होता है वो द्विज है। नारी की शादी के मंडप में उसका दूसरा जन्म होता है। शृंगार के साथ द्विजत्व प्राप्त करती है। पुरुष क्या त्याग करेगा? आज से मेरे पीछे मेरा बाप का नाम नहीं, मेरे पति का नाम लगेगा। ये त्याग है। पानेतर से सोहता वैराग है। लोगों को नहीं दिखाई दिया। कपड़े फ़ेंककर निकले वो दिखाई दिया। वैराग तो शृंगार सजके हो। नाम बदल देती है। कहीं-कहीं नाम तक बदल देती है। ये द्विजत्व है। पहले किसी के गर्भ से निकलती है, फ़िर खुद के गर्भ से किसी को निकालती है। ऐसा द्विजत्व कहां? मेरे नरसिंह ने ठीक कहा, 'सारमां सार अवतार अबला तणो।' भक्ति कैसी? 'यथा व्रजगोपिकानां...' ये मेरा प्रिय श्लोक है 'भागवतजी' का-

वन्दे नन्दव्रजस्त्रीणां पादरेणुमभीक्ष्णशः।
यासां हरिकथोद्गीतं पुनाति भुवनगयम्।।

उसकी चरण की रेणु में उद्धवजी लेटते हैं। ये सामान्य नहीं, बुद्धिशतम् है। मुझे लगता है कि जब द्रौपदी के वस्त्राहरण हो रहे थे तब दुर्योधन की पत्नी कुछ तो बोली होगी कि ये शोभा नहीं देता पर पुरुषप्रधान सभा ने उसको बोलने नहीं दिया होगा। आठ शर्तों के साथ बड़े नियम लगे थे। हाथी के समान स्वाभिमान। वृषभ सा भद्र। मृग जैसे सरल। पशु सा इच्छामुक्त। वायु सा निःसंग। साधु ठहरता नहीं, चला जाता है। सूर्य के समान तेजस्वी। सागर सा गंभीर। मेरु सा निश्चल। चन्द्रमाँ सा शीतल। मणि सा कांतिमान। पृथ्वी सा सहिष्णु। सर्प सा अनियत आश्रय। एक ठिकाना नहीं। आकाश सा निरालंब। उसको साधु कहते हैं। जितना मैं सुन पाया, समझ पाया गुरुकृपा से थोड़ा-बहुत पढ़ा उसको सार निकाला तो मुझे सुकरात में ये सभी लक्षण दिखते हैं। इसलिए सुकरात ग्रीस का महावीर है।

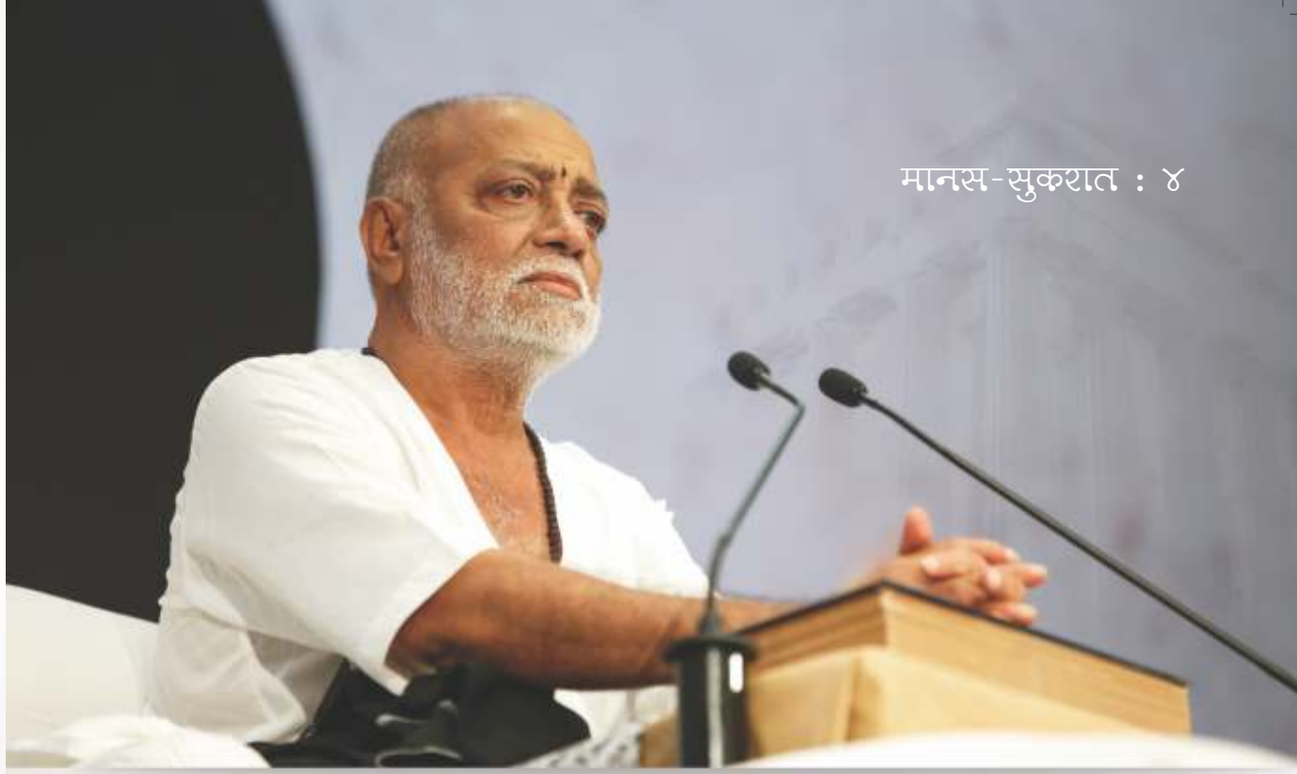

'रामचरित मानस' केवल विश्वास का ग्रंथ नहीं है, ये विचार का ग्रंथ है

कल जो सूत्र मुझे सोक्रेटिस के बारे में कहना था उसको हम आगे बढ़ायें एक वार्तालाप के रूप में, इससे पूर्व कल सायंकाल जो हम सब बैठे थे और उस समय जो बातें हुई। परमस्नेही शोभितभाई ने रोज की तरह स्फूर्तिपूर्वक उसका संचालन किया। मैं मेरी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। और भाई हेमांग ने दो गीत सुनाये। बहुत-बहुत धन्यवाद! उसके बाद चिंतन ने जो कमाल कर दी! मैंने कई बार उसका वाचिकम् सुना है। तो कल सुकरात पर उस अकेले आदमी ने जो बातें और विचार प्रस्तुत किये। मुझे अद्भुत लगा! खुश रहो बाप! मुझे लगता है, इक्कीसवीं सदी में बहुत-सी चेतनाएं करवट बदल कर खड़ी हो रही है। और मेरा सद्भाग्य ये कि व्यासपीठ के प्रति अपना एक आदर व्यक्त करने के लिए मैं जब कहूं तब वो पेश करते हैं। तब मुझे लगता है ये इक्कीसवीं सदी का शगुन है। अल्लाह करे, किसी की नज़र न लगे! फिर मेरे आदरणीय वडील मुरब्बी श्री लोर्ड भीखुभाई पारेख; मेरी इच्छा थी कि भीखुभाई आप कुछ बोले। अभ्यासपूर्ण, साधार, अनुभवपूर्ण अपने विचार प्रस्तुत किए। हमें बहुत मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। हम बहुत आदर करते हैं, नमन करते हैं। और फिर जय, उसकी तो अपनी अदा है। जय ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। डोलरभाई ने भी अपनी बात रखी। और फिर भैरवी करना था। तो ये हमारा फ्रेंक सालों से कथा में रस लेता है। समझे न समझे लेकिन कथा में आता रहता है। फ्रेंक, थेंक यू वेरी मच। वैसे तो सायंकाल को मैं अपने ढंग से मेरा नित्यक्रम जो होता है, मैं सायं संध्या करता हूं। लेकिन ऐसे कार्यक्रम में मैंने अपनी गुरुदत्त संध्या यदि न भी की हो तो ऐसे कार्यक्रम ही मेरे लिए संध्या है। तो कल की संध्या मेरी दृष्टि में विशिष्ट रही। एक बार कल के कार्यक्रम के लिए चिंतन को केन्द्र में रखते हुए तालियां। तो बहुत आनंद आया। शाम को भी तो कथा ही तो चलती है। कथा का इतना छोटा मतलब क्यों किया जाय कि पोथी हो, मोरारिबापू तिलक करके बैठे हो, व्यासपीठ हो, ये मंगलाचरण होता हो। ये सभी एक यात्रा है अवश्य। मैंने जो माध्यम स्वीकारा है उसको आप कमज़ोर मत समझना। लेकिन उसका मतलब यह नहीं कि ओर सभाएं कथाएं नहीं है। मेरे लिए तो सब कथा है। एक मुशायरा मेरे लिए

कथा है। एक लोकसाहित्य का डायरा मेरे लिए कथा है। एक सुगम संगीत की सभा मेरे लिए कथा है। एक शास्त्रीय मेहफ़िल में हम बैठे हैं, तो मेरे लिए ये कथा है।

मैं विचार तो बार-बार पेश करता हूं कि मेरा मिशन तो किसी को सुधारने का है ही नहीं, मेरा मिशन तो केवल सबको स्वीकार करने का है। सुधार कौन सका? व्यासजी ने अगर पुराण लिखने के बाद 'महाभारत' जैसा अद्‌भुत ग्रंथ लिखने के बाद भी ऊर्ध्वबाहु होकर कहा कि मुझे सुनो, मुझे सुनो, यहां कौन किससे सुधर रहा है? स्वीकार किया जाए। तीन वस्तु युवान भाई-बहन, सीखना। एक तो सबका स्वीकार। दूसरा, सब से प्यार और तीसरा, किसी से तकरार नहीं; यदि प्रसन्न रहना है तो।

तो मेरे भाई-बहन, मेरे लिए सब सत्संग है। आइए, इस कथा में प्रवेश करें। आज मेरे पास प्रश्न बहुत है। 'बापू, आप कथा में बार-बार कहते हैं कि मैं किसीका गुरु नहीं हूं। ठीक है ये आपकी निजता है। और फिर आप यह भी कहते हैं कि गुरु आवश्यक है। तो हम कहां जाए?' मैं बिलकुल साफ़ कहता हूं। मैं फिर एक बार कहूं कि मैं गुरु नहीं हूं। मैं गुरु नहीं हूं। मैं गुरु नहीं हूं। क्योंकि मुझे पता है कि गुरु होना बहुत मुश्किल है। मेरी अपनी सीमा है। मैं आपके समान एक आदमी हूं। मुझे आदमी रहने दो। और कुछ कथाओं से तो मैंने कहना शुरू भी कर दिया है 'गीता' का शब्द लेकर 'जन्तवः', हम तो एक जन्तु है। हां, गुरु जरूरी है ये मैं जरूर कहता हूं। क्योंकि मेरे गुरु है मेरे दादाजी। लेकिन मैं गुरु नहीं हूं। गुरु होना बहुत मुश्किल है साहब! 'तो फिर हम किसको गुरु कहे?' किसी अच्छे ग्रंथ को गुरु कहो। शीख समाज ने पूरी 'ग्रंथ साहिब' को गुरु माना है। जिसमें गुरुओं की बानी संगृहित है। मेरे 'रामचरित मानस'कार ने लिखा है 'रामायण' के बारे में कि 'रामचरित मानस' स्वयं गुरु है। प्रमाण -

सद्‌गुरु ग्यान बिराग जोग के।
बिबुध बैद भव भीम रोग के।।

तो 'रामचरित मानस' को गोस्वामीजी ने स्वयं सद्‌गुरु कहा है। एक कविता भी गुरु बन सकती है। संस्कृत का कोई एक अष्टक हमारा गुरु बन सकता है। कोई एक छोटी-सी कहानी गुरु बन सकती है। एक बच्चा भी गुरु बन सकता है। जिसस तो कहते रहे, मेरे पिता के राज्य में उसीको प्रवेश मिलेगा जो बच्चे की तरह रहेगा। गुरु का गणवेश नहीं होता। उसका कोई यूनिफोर्म नहीं होता। आप किसी को भी, हनुमानजी को गुरु मानो चलो। मैं बार-बार कहता हूं, शिव को गुरु मानो। पवित्र कुरान को गुरु मानो। बाईबल को गुरु मानो। किसी व्यक्ति में यदि आपकी श्रद्धा है और यदि वो गुरु है तो जरूर ये आपकी मर्जी। लेकिन हम प्रभाव में बहुत आ जाते हैं। ये कल जो कह रहा था कि भगवान महावीर स्वामी ने साधुपुरुष के जो लक्षण गिनाये हैं वो सुकरात में दिखते हैं। ये लक्षण यदि जहां दिखाई दे उसको आप गुरु मान सकते हैं। आप जानते हैं कि एक प्रकार की हवा बन गई थी। इसलिए मुझे बलात् तलगाजरडा में गुरुपूर्णिमा का उत्सव बंद करना पड़ा कि आप लोग मुझे गुरु मान रहे हैं और मेरे लिए तलगाजरडा आ रहे हैं। मैं किसी का गुरु नहीं हूं। आप में यदि तीव्रता होगी तो आपको गुरु खोजना नहीं पड़ेगा, कोई गुरु आपको खोज लेगा। मैं फिर एक बार स्वामी रामसुखदासजी के वचनों को आपके सामने रखूं कि गुरु को व्यक्ति समझना ये भी भूल है और किसी व्यक्ति को गुरु समझना भी भूल है। गुरु एक विचार है। वो गुरु है। कहीं से भी मिलेगा। 'आनो भद्रा क्रतवः।' मेरे देश की श्रुति कहती है कि जहां से भी शुभ विचार मिले ले लो।

कल के सूत्र रह गए हैं वहीं से शुरू करें। जो भगवान महावीर स्वामी ने साधु के लक्षण बताए वो मुझे सोक्रेटिस में दिखाई देते हैं। पहला लक्षण, बुद्धपुरुष वो है, सद्‌गुरु वो है जो शेर जैसा पराक्रमी हो। गुरु शेर जैसा पराक्रमी है। और शेर के कई लक्षण है। शेर का एक लक्षण है कि जब वो भरपेट हो जाए तो वो शिकार नहीं करता। और मैं गीर में घूमा हूं। जब-जब मौका मिलता है मैं झोंपडों में जाता हूं, बैठता हूं, रहता हूं, रात रहता हूं। तो मैंने देखा एक बार कि एक शेर मारण करके खड़ा है और छोटे-छोटे प्राणी दूर-दूर बैठे हैं और शेर शिकार खाता है। उसके बाद दूर हटाकर थोड़ा-थोड़ा दूर फेंकता है। इसका मतलब है कि दूरवाले निकट नहीं आ सकते, लेकिन शेर का लक्षण है कि 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः।' अकेला न खाए। और एक बार पेट भर गया तो शिकार न करे। और हम

कितना भी कमाते हैं, कितना भी संग्रह करते हैं लेकिन दूसरे को शीशे में उतारने में देर नहीं करते!

आपने सुना होगा, हमारे यहां लोभ को पाप का मूल भी कहा है। शेर लोभी नहीं है। महावीर स्वामी लोभी नहीं है, अपरिग्रही है। सुकरात भी लोभी नहीं है। उसने कहा, इतना जुर्माना मैं चुका दूं तो मैं बरी हो सकता हूं, लेकिन इतना जुर्माना चुकाने की मेरी औकात नहीं है। सिंह निर्लोभी है। बाकी तो ये मांसाहारी है ये उनकी प्रकृति है। सिंह घास नहीं खाता। और गाय मांस नहीं खाती। सिंह का पराक्रम ये लक्षण सुकरात में ये दिखता है। तो शेर संग्रह नहीं करता, लोभी नहीं है, बांटकर खाता है। अपनी धून में रहता है। साधु भी ऐसा होता है। और जहां लोभ आया, बाप! लोभी आदमी कितनी वस्तु को छोड़ देता है? एक, लोभी आदमी अपने लोभ के कारण अपने भजन का त्याग कर देता है। आज माला नहीं होगी। भजन छोड़ेगा। दूसरा, लोभी माँ-बाप को छोड़ देता है। माँ-बाप को छोड़ना यानी केर नहीं करता। मुझे ये काम है, मुझे ये काम है! अति लोभी आदमी अपने बीबी-बच्चों की केर नहीं करता। लोभ के कारण सब उसका छूटा जा रहा है। लोभी भूख का भी त्याग कर देता है। भूख का बलिदान दे देता है। क्योंकि एक ओर नई भूख उसे सतायी जा रही है। लोभी नींद का बलिदान देता है। नींद नहीं ले सकता। और सुनते जाओ, लोभी अपनी तंदुरस्ती का बलिदान दे देता है! बीमारी को कुबूल करता है! लेकिन ये बड़े-बड़े धार्मिक लोग इतने बड़े-बड़े आश्रम बनाते हैं। और फिर आखिरी समय में गुरुजन जो है न वो बड़े चिंतित होते हैं कि मैंने इतना बनाया ये सब रह जाएगा! लोभी आदमी इतना विस्तार करता है कि उसको फिर बीमारी लग जाती है! भूख चली जाती है, नींद चली जाती है, भजन छूटने लगता है। फिर तंदुरस्ती निकल जाती है और वो चिंताग्रस्त हो जाता है कि ये सबका क्या होगा?

मैं ये सब कहता हूं इसका मतलब ये नहीं कि ये सब नहीं करना चाहिए। लेकिन सुकरात जिस विचार की बात कर रहा है ऐसा विचार तो हमारे मन में होना चाहिए। 'रामचरित मानस' में 'विचार' शब्द करीब दो सौ पचास बार आया है। विचार! विचार! विचार! केवल विश्वास का ये ग्रंथ नहीं है, विचारसागर है ये। ये विचार का ग्रंथ है। उसमें विचार के बिलग-बिलग क्षेत्र बताये हैं। बुद्धिविचार, धर्मविचार, ज्ञानविचार, बिमलविचार, समयविचार, नीतिविचार, सबके साथ तुलसी ने 'विचार' शब्द जोड़ा है। और आप कथा सुनो तो मैं प्रार्थना करूं कि मन, बुद्धि और चित्त तीनों से कथा सुनना; खाली अहंकार को छोड़ना। मन से सुनो मीन्स विचार के साथ सुनो। विचारो, सोचो। लेकिन लोग विचार के द्वार ही तो बंद कर देते हैं! बस, व्यासपीठ से बापू ने बोल दिया, बात खतम! ऐसा नहीं हो सकता।

महावीर स्वामी कहते हैं, सिंह जैसा पराक्रमी हो वो बुद्धपुरुष है। और ये ही कुछ लक्षण सुकरात में दिखते हैं। दूसरा सूत्र, गुरु हाथी सा स्वाभिमानी हो। साधुपुरुष कौन है? महावीर स्वामी कहते हैं, वो हाथी जैसा स्वाभिमानी है। हाथी के भी बहुत सुन्दर लक्षण है। एक गौरव है हाथी का अपना, लेकिन उनमें से मुझे बहुत अच्छा श्रेष्ठतम यह लगता है कि हाथी चले और कितने भी कुत्ते भोंके लेकिन कोई हाथी कुत्ते के पीछे मुड़कर दौड़ा नहीं। लोग कुछ भी बोले, साधु वो है जो हाथी की चाल चलता रहे। क्योंकि वो जानता है कि उसका भौंकना अपनेआप बंद हो जाएगा।

गांधीजी के समय में गांधी के समकालीन कितने लोग निंदा करते थे! कई लोग तो पूरी जिंदगी गांधी को 'बापू' नहीं कह पाये! गांधीभाई कहते थे! बापू कहना उसके अहंकार को चौट आती थी! मुश्किल है। साधु वो है कबीरसाहब कहते हैं कि निंदा सहेगा। निंदकों को निकट रखो। तो बाप! सुकरात की कितनी निंदा हुई है! सुकरात के पीछे कितने कुत्ते भौंके! दौड़े बहुत लेकिन कोई काट नहीं पाया। सुकरात अक्षुण्ण रहा। भौंकनेवाले थक गये! हाथी की तरह स्वाभिमान ये साधु का लक्षण है। महावीर स्वामी कहते हैं, वृषभ सा भद्र, बेल की तरह शीलवान बलभद्र होता है। कल का सूत्र दोहराउं कि ये आदमी अपनी ऊंचाई से नीचे नहीं उतरा ये उनका शील था, उनकी भद्रता थी। हम किसी को भी धर्मधुरंधर कह सकते हैं, कह देते हैं। शब्द का हम बहुत छूट से उपयोग कर लेते हैं। धर्म तो घूंसरी है। जो अपने कांध पर रखता है न तो उसके कांध पर उसकी निशानी पड़ जाती है। वृषभ सा भद्र। वृषभ की

ताकत भी बहुत होती है। सही अर्थ में सद्गुणरूपी धर्म की घूंसरी विचाररूपी धर्म की घूंसरी है। कभी-कभी तो मुझे लगता है कि ये जो सुकरात है ये एक संगम है। ये ग्रीस का संगम है। तीन धारायें उसमें दिखती है। सुकरात कहा करते थे कि तुम नाटक की तरह जो जीये जा रहे हो वो यदि असली हो जाये तो तुम सद्गुणी हो। तुम ठीक हो। तो विचार धर्म है। तुलसी ने लिखा है, ध्यान देना। मेरे पास सबल आधार है। जिस ग्रंथ को लेकर मैं घूम रहा हूं ये ग्रंथ मुझे मदद कर रहा है। तुम्हारी और मेरी सोच ये धर्म है। और मुश्किल ये है कि तथाकथित धर्मों ने हमको सोचना ही बंद करा दिया है! सोचो मत! शास्त्रों से कह दिया है, अब बात खतम! गुरु ने कह दिया, बात खतम! धर्मग्रंथ में आ गया, बात खतम! ऐसी बातें करनेवाले शस्त्रों से नहीं बल्कि शास्त्रों से हिंसा करते हैं! कत्लेआम करते हैं शास्त्रों के बारे में! मैं स्वयं तुलसी की रोटी खा रहा हूं। मैंने कई बार कहा है कि तुलसी की तमाम बातों से मोरारिबापू सहमत नहीं है। और तुलसी की प्रत्येक बात से सहमत नहीं होना ये मोरारिबापू का अपना अधिकार है। मुझे जो शुभ मिले वो ले लूं। बाकी तुलसी ने कोई ऐसे विचार लिखे हैं तो मुझे कोई जरूरी नहीं है कि सब स्वीकारूं। उसने उस देश काल के संदर्भ में लिखा होगा, जिस पात्र के मुख से बुलाया होगा, उस पात्र की अपनी कक्षा होगी। सब बातें कैसे मान लें? तुलसी की एक चौपाई है। क्या इस चौपाई को एझ ईट ईझ पकड़ सकते हैं आप? सोचना पड़ेगा। मैं बताउं आपको।

मातु पिता गुरु प्रभु कै बानी।
बिनहिं बिचार करिअ सुभ जानी।।

माता, पिता, गुरु और प्रभु इन चार की बातों को तुलसी लिखते हैं कि बिना सोचे मानो। ये शुभ ही है। प्रेक्टिकल नहीं लगता है। हां, माँ की बात बिना सोचे मान लो मैं मानूं चलो, लेकिन पहली शर्त है कि वो माँ माँ होनी चाहिए। माँ के स्वाभाविक जो लक्षण है वो हो तो। बाकी तो माँ कुछ भी कह दे और हम मान ले! माँ कहे तो उसके सामने बैठकर शांति से बात कह सकते हैं कि माँ, इसमें विचार का अभाव है। हम अनादर नहीं कर रहे है माँ लेकिन कुछ सोचें।

एक वस्तु याद रखना, गुरु वैद है। और ये वैद किसका? कान, नाक, गले का डोक्टर है। कान में धाक पड़ी हो; कान से कम सुनाई देता है; वो कान में कुछ कचरा चला गया हो; हमारे कानों में किसी की निंदा-कुथली का कचरा आ गया हो उसका कचरा साफ़ करता है। 'जिन्हके श्रवण समुद्र समाना।' इसलिए 'श्रीमद् भागवत' में नवधा भक्ति का आरंभ 'श्रवण' से होता है।

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यं आत्मनिवेदनम् ।।

'रामचरित मानस' में आता है कि ये जो बंदर लोग है वो राक्षसों के नाक-कान काटते हैं। बंदर का जो शिरोमणि है वो सुंदर सबका गुरु है।

जय जय जय हनुमान गोसांई।
कृपा करौ गुरुदेव की नांई।।

गुरु कान का वैद है। तुम्हारे कान 'श्रवणे कथायां।' तुम शुभ सुनो। तुम निंदा सुन रहे हो। कई लोग निंदा करे नहीं पर सुनते बहुत रस से हैं! इससे कान खराब होते हैं। गुरु क्या करता है? अपने दिव्य विचारों से अपने कान का मैल साफ़ करता है। कान साफ़ कर देते हैं कि ये उपकरण तुझे ये सुनने के लिए नहीं दिये गये हैं, तुम्हें शुभ सुनने के लिए दिये गये हैं। 'निंदा न करे केनी रे।'

वैष्णवजन तो तेने कहीए जे पीड पराई जाणे रे;
परदुःखे उपकार करे ने मन अभिमान न आणे रे।

दूसरा, गुरु नाक का डोक्टर है। नाक का अर्थ है स्वर्ग; नाक मीन्स स्वर्ग। ये लक्ष्मणजी ने शूर्पणखा के नाक-कान काटे उसका मतलब क्या? ये कोई अच्छा काम किया कि नाक-कान काटे! नाक काटना यानी गुरु हमारी स्वर्ग की कामनाओं को नष्ट कर देता है। उपर स्वर्ग है। कहीं ये, कहीं वो अधिकत प्राप्त करने जो कामनायें होती है ये कामनाओं को नष्ट कर देते हैं। और दूसरी बात, गुरु नाक की ऐसी सफ़ाई कर देता है कि यदि आदमी को शर्दी होती है न तो उसको गंध नहीं आती; उसको सुगंध नहीं आती। हमें कभी-कभी बुद्धपुरुषों की महक नहीं आती है। क्योंकि हमारे नाक बिगड़ गये हैं! गुरु हमारी नासिका को ठीक करता है। हमें पीरों की खुश्बू आये। हमें हमारे मुर्शिद की एक गंध आये।

शब्द को भी अपनी एक खुश्बू होती है। निज़ामुद्दीन ओलिया कहता है अमीर को कि बेटा, शब्दसाधना में जब शब्दसाधक शिखर पर पहुंच जाता है तभी समझना कि शब्द बोले और सुननेवाले को गंध भी आये। बहुत कठिन है ये। बहुत उपर की बात है। शब्द में एक गंध होती है, सुवास होती है। गुरु नाक रीपेर करता है। लक्ष्मण जो एक जागृत आदमी है उसने नाक-कान काटे यानी शूर्पणखा के मन में जो कामना जगी है राम के प्रति कि मैं राम को पाऊं, बहुत सुख भोगूं, मेरी ये कामना पूरी हो जाये। ये जो स्वर्गीय कल्पना में राचती थी, उसकी जो स्वर्ग कामनाओं को उसने काट दी।

गले का डोक्टर है गुरु। कंठ का डोक्टर। गुरु कंठी नहीं देता, हमारा कंठ रीपेर करता है। 'रामायण' में सुग्रीव का एक नाम है सुकंठ। गुरु क्या करता है? हमारे कंठ को सुकंठ बनाता है कि हम अच्छी बोली बोले। हम सुर में बोले। हम अनुराग में बोले। हमारा कंठ ऐसा कर देता है। मेरी समझ में तो गुरु नाक-कान-गले का एक डोक्टर है।

तो हमारी चर्चा चल रही है कि वृषभ जैसा भद्र। फिर कहते हैं कि साधु जो होता है वो मृग जैसा सरल होता है। गुरु यदि कोई अनुचित आज्ञा करे तो मान ले क्या? ऐसी अनुचित आज्ञा करे वो तो गुरु ही नहीं है। माता, पिता, गुरु और प्रभु की बानी बिना सोचे-समझे नहीं माननी चाहिए। अपने विचार का उपयोग करो। विचार ये सद्गुण है। 'रामचरित मानस' में विचार को धर्म कहा है। भरतजी ने वशिष्ठजी को 'अयोध्याकांड' के अंत में पूछा, गुरुदेव, यदि अब आपकी आज्ञा हो तो मैं वल्कल धारण करके नंदिग्राम में रहूं। क्योंकि मेरा प्रभु वन में है तो मैं महल में नहीं रह सकता। सुनते ही मुनि पुलकित हो गए। हां, हां, रहो। उसी समय जो एक पंक्ति है, मेरे श्रोता भाई-बहन, ये बहुत समझने जैसी है-

समुजब कहब करब तुम्ह जोई।
धरम सारु जग होइहि सोई।।

क्या अर्थ होता है? वशिष्ठजी ने कहा कि भरत, तुम जो सोचते हो वो ही धर्म है। भरत, तुम जो कहते हो वो धर्म है। और भरत, तुम जो करने जा रहे हो वो धर्म है। पहले तो एक-एक कर कहा कि ये तेरा सोचना धर्म है, कहना धर्म है और तेरा करना धर्म है। लेकिन तीनों एक साथ हो जाए तो भरत, ये धर्म नहीं रहता, धर्म का सार हो जाता है। सोच को तुलसी ने धर्मसार कहा है। आदमी को सोचना चाहिए। इसलिए मुझे सुकरात कभी-कभी संगम लगता है। उसमें विचारधारा का एक प्रवाह है। एक विचार की धारा सुकरात में है। दूसरी धारा सुकरात में है और वो है उच्चार की धारा। जो वो सोचता है वो बोलता है। और तीसरी उसकी आचार की धारा है। उसके आचरण की धारा है। ये ग्रीस का संगम है। जहां विचार का प्रवाह चलता है वहां नितनूतन विचार। बंधियार नहीं, संकीर्ण नहीं। जो विचार समझ में दीवारें पैदा करे वो विचार कौन काम का? जो विचार दीवार को तोड़कर दरवाजें खुले कर दे। टागोर कहते हैं, संकीर्ण दीवारें टूटनी चाहिए।

Where the mind is without fear
and the head is held high
Where knowledge is free
Where the world has not been
broken up into fragments
By narrow domestic walls.

टागोर बहुत प्यारे हैं। गांधीजी का एक अन्तेवासी गया शांतिनिकेतन। टागोर को कहने लगे कि गुरुदेव, बापू कहते हैं कि ये गुरुदेव को कैसे कहे, लेकिन गुरुदेव को कहा जाय कि थोड़ा रेटिया कांतो। तो टागोर मुस्कुराये और वो अन्तेवासी आदमी लौटा तो गुरुदेव ने कहा कि महात्मा को कहना कि एकाद कविता भी लिखें! 'स्वधर्मे निधनं श्रेय।' जिसका जो स्वधर्म है, जिसका जो क्षेत्र है। महापुरुष विनोदी होना चाहिए।

अगम अगोचर अलखधणीनी खोजमां रे'वुं रे,
मोजमां रे'वुं, मोजमां रे'वुं, मोजमां रे'वुं रे,

तुलसी कुबुल रखते हैं, वशिष्ठजी कुबुल करते हैं कि विचार ये धर्म है। जो सोचा है, जो सोचते है, जो अंदर चल रहा है वो ही बोलना। और जो बोला गया है उसी के मुताबिक करना। ये तीनों का संगम धर्म नहीं, धर्म का सार है। सुकरात में तीनों दिखते हैं। एक तो विचारमूर्ति, विचारपुरुष है। जो लगता है, निर्भीक कहता है। और तीसरा करता भी है। उसने एथेन्सवासियों को कहा कि कहीं भूल से भी मेरे से किसी का अहित हो गया हो तो मुझे क्षमा करे। बाकी मैं भूल से भी किसी का बुरा नहीं करता। जो सोचा, जो कहा सो किया। एक संगम है सुकरात।

महावीर स्वामी कहते हैं, मृग-सा सरल, मृग की तरह सरल-तरल है। मुझे लगता है, सरलता सबसे कठिन वस्तु है। जटिलता बहुत आसान है। अक्कड रहना, उसमें बहुत साधना नहीं करनी पड़ती। लेकिन सरल रहना। हमारे तुलसी तो लिखते हैं -

सरल सुभाव न मन कुटिलाई।
जथा लाभ संतोष सदाई।।

सरल जीवन, सादा जीवन। मैं कई बार आपके सामने बोला हूं, बेकल उस्तादीसाहब का एक बिलकुल छोटा-सा शे'र है -

सादगी शृंगार बन गई।
आयनों की हार हो गई।

सभी दर्पण हार गए और आदमी की सादगी शृंगार बन गई। गांधी की सादगी देखो, उसकी सरलता देखो। तो मृग की तरह जो सरल है वो साधुपुरुष है। आप देखिए कि सरल का एक मतलब यह भी हो सकता है कि सबको प्राप्य हो। सुकरात सबको प्राप्य है। कोई भी उनके पास कभी भी जा सकता था सरलता से और सत्संग शुरू हो जाता था। मृग की सरलता जिसमें हो वो साधु। 'पशु का निर्हित।' पशु की तरह ज्यादा इच्छा नहीं। थोड़े में गुजारा होता है। सुकरात के जीवन के कई पहलु से मैंने कोशिश की है देखने की। कई लोगों ने उसके बारे में लिखा है। बिलग-बिलग रूप से लिखा है। हमें प्रेरणा देनेवाली बहुत-सी चीजें हमें प्राप्त होती है। 'वायु सा नि:संग।' हवा की तरह असंग। शंकराचार्य भगवान कहते हैं कि -

सत्संगत्वे नि:संगत्वम् नि:संगत्वे निर्मोहत्वम्।
निर्मोहत्वे निश्चलचित्तं निश्चलचित्ते जीवनमुक्ति:।
भज गोविंदम् भज गोविंदम् ...

पवन की तरह असंगता। सुकरात का ये असंगता एक वाक्य मुझे बहुत प्रिय है। मैं मरूंगा, आप जीवित रहोगे; फायदा किसको हुआ वो केवल ईश्वर जानता है। मरनेवाले को फायदा हुआ कि जीवित रहनेवाले को फायदा हुआ वो केवल ईश्वर के सिवा ओर कोई नहीं जानता। इतना असंग होकर जा रहा है। 'सर्प-सा और सूर्य-सा तेजस्वी।' तेज तो रहा ही होगा जो सत्य का तेज था। ऐसे बुद्धपुरुषों के साथ आंखे मिलाना बड़ी मुश्किल हो जाती है। और ऐसा कोई तेजस्वी का चेहरा आंख में आ जाये तो पूरी सफर का खर्चा बन जाता है; पूरी जिंदगी का खर्चा बन जाती है यदि उसकी छबि जो आंख में आ जाये तो। किसी बुद्धपुरुष की छबि हमारी आंख में बस जाये तो। ऐसा एक बदायूनीसाहब का शे'र है -

नज़र में उसका चेहरा रख लिया है।
सफ़र का पूरा खर्चा रख लिया है।

बस, बुद्धपुरुष की छबि आंख में रह गई है, अब पूरी जिंदगी का खर्चा निकल जाएगा। अब कोई चिंता नहीं। एक शे'र ओर सुनो।

तुम्हें भी याद नहीं और मैं भी भूल गया।
वो लम्हा कितना हसीन था मगर फुझुल गया।
- जावेद अख्तर

हम बावफ़ा थे इसलिए नज़रों से गिर गये।
शायद तुम्हें तलाश किसी बेवफ़ा की थी।
- अहमद फ़राज़

हम चर्चा कर रहे थे कि वायु-सा असंग, सूर्य-सा तेजस्वी साधुपुरुष। सुकरात कैसा रहा होगा? ऐसा बुद्धपुरुष कहीं मिला ही नहीं! आगे महावीर स्वामी कहते हैं, 'सागर सा गंभीर।' हमारे कागबापू का एक पद है -

सो सो नदियुं उर समाणी,
जेम सायर जण गंभीर .
जेनी मेरु सरखी धीर,
जगमां एनुं नाम फ़कीर ...

हम सागर देखते हैं तो पानी ही दिखता है। अतिरिक्त कुछ भी नहीं दिखता अथवा तो वो पानी जो तरंगायित हो रहा है, जो लहेरे उठ रही है, शांत हो रही है इसके अलावा कुछ नहीं दिखता। लेकिन सागर केवल पानी नहीं है। सागर में बहुत-से रत्न है और इस रत्नों को प्राप्त करने के लिए सागर का मंथन जरूरी है। साधुपुरुष कौन? सागर जैसा लगे। हमको लगे कि ये सागर जैसा है, लेकिन हमें पता नहीं चलता कि इनमें कितने रत्न पड़े हैं। ये तो कोई उनको मंथन करे, कोई मथे, तब ही पता चलता है। 'मेरु सा निश्चल।' 'स्थिरमतिर्भक्ति मान्मे प्रियो नर:।' 'भगवद्गीता' कहती है स्थिर मति:। स्थिरता। 'चंद्रमा सा शीतल।' 'मणि सा कांतिवान।' मणि स्वयं प्रकाशित होता है। उसकी अपनेआप कांति होती है। साधुपुरुष वो है जिसके पास उधार उजास नहीं होता, उसमें भक्तिमणि की कांति होती है। ज्ञान के चूड़ामणि की कांति होती है। अथवा तो भक्ति की चिंतामणि की कांति होती है। बुद्धपुरुष के चेहरे पर ऐसी कांति रहेती है। 'पृथ्वी सा सहिष्णु'; बिलकुल पृथ्वी की तरह।

खुंदी रे खमे माता पृथ्वी, वाढी रे खमे वनराई,
कठण वचन मारा संत सहे।

सर्प सा अनियत आश्रय; कोई निश्चित नहीं, कहां जाना, कहां पहुंचना। 'आकाश सा निरालंब'; आकाश की तरह निरालंब, कोई आलंबन नहीं। बस, अपनी स्वयं की स्थिति; उसको महावीर स्वामी ने अपने निज विचारों में साधु कहा है, बुद्धपुरुष कहा है। सुकरात में ये सभी चीज मेरी तलगाजरड़ी आंखों को दिखती है। इस आदमी में संगम भी है कि विचारधारा, उच्चारधारा भी है और उसकी आचार व्यवहारधारा भी है। इन तीनों से मिला हुआ एक विचारक, दार्शनिक हमें मिला सुकरात के रूप में।

कल ये भीखुभाई ने भी सुकरात के बारे में कहा कि जो परीक्षण नहीं करता जीवन के बारे में उनका जीवन विफल है। व्यक्ति को चाहिए कि अपने जीवन का परीक्षण करे। बहुत प्यारा सूत्र है। ऋषि का सूत्र है। इतने ही सूत्र में हम पूरा शास्त्र समझ सकते हैं। लेकिन अब प्रश्न ये आता है कि आत्मपरीक्षण कैसे हो? आत्मपरीक्षण की विधा क्या होनी चाहिए? जिसको भक्तिमार्गी लोग आत्मनिवेदन कहते हैं। ज्ञानमार्गी आत्मबोध कहते हैं। परमहंस की अवस्था में चले गये लोगों ने उसके लिए उन्होंने एक शब्द रखा है आत्मक्रीड़ा या आत्मरति भी कहते हैं। लेकिन ये परीक्षण कैसे हो? मेरी समझ में तीन विधा से आत्मपरीक्षण साधक ठीक से कर सकता है। ये शीघ्र नहीं होता। तो आत्मपरीक्षण, निज की खोज, आत्मपरीक्षण, Who am I ? जो रमण महर्षि का मंत्र था। पूरी ज़िंदगी उसने ये उठाया। तीन वस्तु है मेरी समझ में। आत्मपरीक्षण निरंतर करना है तो एक, साधक को चाहिए कि मौका मिलते ही एकांत सेवे। मेरी रुचि एकांत में बहुत है। मैं जहां भी रहता हूं, कथा में जो लोग मेरे साथ होते हैं उनको पता होता है कि मैं कमरे से बाहर ही नहीं आता! मज़बूरसाहब का एक शे'र है -

ना कोई गुरु, ना कोई चेला।
मेले में अकेला, अकेले में मेला।।

अभ्यास करना, एकांत में आत्मपरीक्षण होता है। भीड़ में तो हम आत्मप्रभाव डालने की कोशिश करते हैं! जगद्गुरु आदि शंकराचार्य भगवान का एक 'साधन पंचक' कभी हाथ में आ जाय तो पढ़ना। इसमें पांच प्रकार के साधन की जो बात कही है उसमें एक टुकड़ा जगद्गुरु ने डाला है कि 'एकान्ते सुखमास्यताम्।' तू एकांत में बैठ। और मेरी समझ में एकाग्र और एकांत में फ़र्क है। 'एकाग्र' शब्द ही बताता है कि इसमें कोई दूजा है। एक की अग्रता है जिसमें, अभी कोई बचा है।

पहले खुद को खाली कर।
फिर उसकी रखवाली कर।।
- बदायूनी

पहले शून्य हो जाओ और फिर इन रिक्तता की रखवाली करो। एकांत का अर्थ है जहां एक का भी अंत हो गया हो। कोई नहीं बचा। ऐसा एकांत आत्मपरीक्षण का साधन बन सकता है।

'रामचरित मानस' में 'विचार' शब्द करीब दो सौ पचास बार आया है। विचार! विचार! विचार! केवल विश्वास का ये ग्रंथ नहीं है, विचारसागर है ये। ये विचार का ग्रंथ है। उसमें विचार के बिलग-बिलग क्षेत्र बताये हैं। बुद्धिविचार, धर्मविचार, ज्ञानविचार, बिमलविचार, समयविचार, नीतिविचार, सबके साथ तुलसी ने 'विचार' शब्द जोड़ा है। और आप कथा सुनो तो मैं प्रार्थना करूं कि मन, बुद्धि और चित्त तीनों से कथा सुनना; खाली अहंकार को छोड़ना। मन से सुनो मीन्स विचार के साथ सुनो। विचारो, सोचो। लेकिन लोग विचार के द्वार ही तो बंद कर देते हैं।

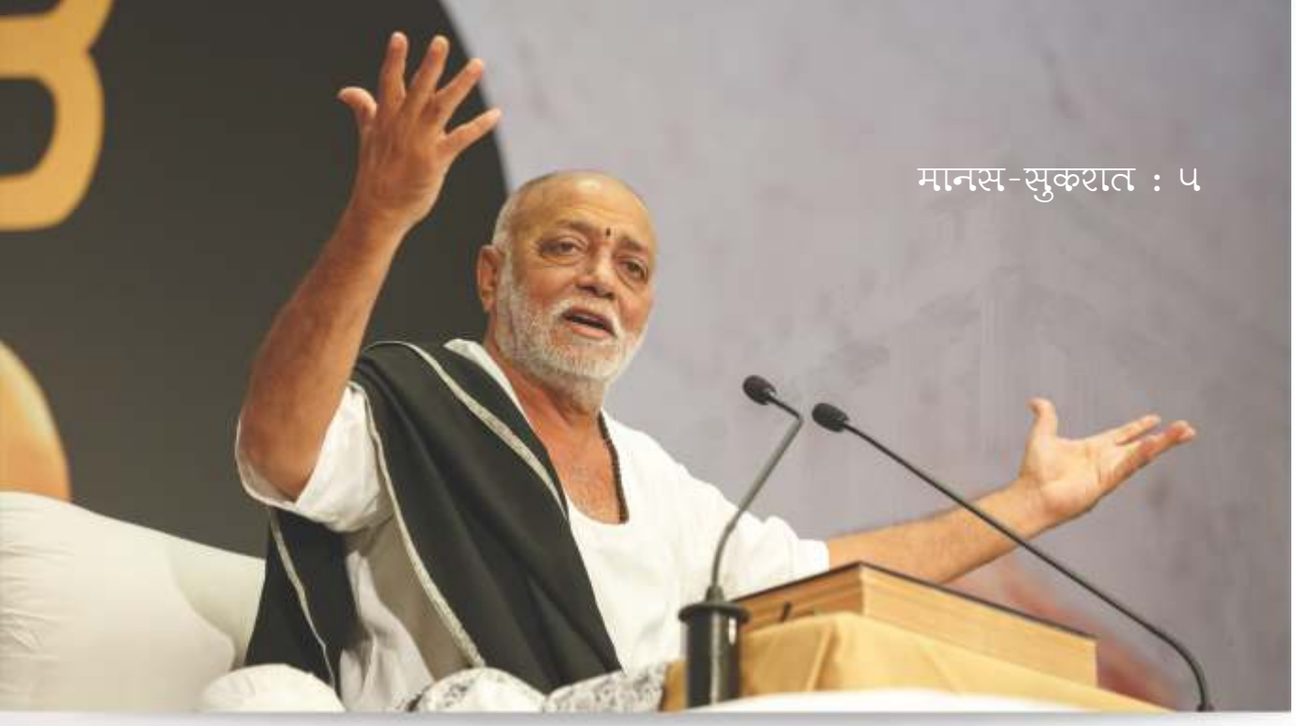

प्रभु का नाम परम पुण्य है

कथा के विषय में प्रवेश करे इससे पूर्व कल की एक प्रसन्नता व्यक्त करूं कि कल कोई प्रोग्राम नहीं था। आदमी को हर स्थिति में प्रसन्न रहना चाहिए। कल कुछ भाई-बहन मुझे मिलने आये। नाम तो नहीं लिखा था लेकिन इतना लिखा था कि आपका एक यंग फ्लावर। उसने एक जिज्ञासा रखी कि ''हमारे घर में हमें बहुत कहा जाता है कि पुण्य करो, पाप न करो। ये करो, ये न करो।'' बड़ी पीड़ा व्यक्त की है, ''हम पढ़े-लिखे हैं लेकिन धर्म के नाम पर धार्मिक ग्रंथों के नाम पर अथवा तो ऐसे धर्माचार्यों के नाम पर हमें बार-बार दबाया जा रहा है। तो बापू, हमें ज्यादा समझ में नहीं आता लेकिन व्यासपीठ के प्रति हमें बहुत भाव है, प्रेम है; न समझ आये तो भी हम कथा में बैठते हैं। तो आप हमें ये बतायें कि सही में पुण्य क्या है?'' मैं पहले हर वक्त स्पष्टता करता हूं कि मैं जो यहां से कहूं उसको आप बापू ने कहा इसलिए मान ही मत लेना। कभी तथागत बुद्ध ने कहा था कि मेरे प्रभाव को देखकर, मेरा पूर्व जीवन सम्राट के राजकुमार का वो देखकर, इन सभी मेरी विशेषताओं के कारण मेरी बातों को मत मान लेना। मैं जो कहूं उसको अपनी बुद्धि पर कसोटी करके, ये आपकी आत्मा का सत्य बन जाये तो उसको कुबूल करना। मैं भी इसी विचारधारा को माननेवाला हूं। आपने पूछा है तो मैं जरूर बोलूं आपके प्रश्न के बारे में लेकिन मैंने कह दिया वो बिल्कुल ठीक ही है ऐसा मत मान लेना। आपके पास बड़ी ताजी-तरोजी बुद्धि है। अथवा तो यूं कहूं कि आज के युवानों में थोड़ी कुंआरी बुद्धि है।

कल यहां के कुछ पत्रकार भाई-बहन आए। वो बातचीत कर रहे थे। तो वो ये पूछने लगे कि बापू, आप यहां एथेन्स क्यों आये? यहां आकर कथा करने के पीछे आपका मक़सद क्या है? तो बापा ने(नगीनबापा ने) ठीक से जवाब दे दिया कि यहां आये हैं ऐसी बात नहीं है। जेरुसलेम भी गये हैं, रोम भी गये हैं। बिलग-बिलग जहां-जहां कुछ चेतना है, हर जगह हम गये हैं। तब मैंने ये कहा कि एक ऐसा ब्रिज है, हमारा दर्शन और यहां का दर्शन। पुराना जरूर है लेकिन अभी टूटा नहीं है। और ये टूटनेवाला भी नहीं है क्योंकि ये जिसके मूल में सत्य होता है वो कभी टूटता नहीं है। प्रश्नोपनिषद का ये वाक्य है, जिसके मूल में सत्य होता है वो कभी टूटता नहीं है। जिसके मूल में अनृत होता है वो टूट जाता है। तो हम तो ये ब्रिज-सेतु बना रहे हैं। इसलिए ये हमारा एक अनुष्ठान है। और क्या? तो जो यहां से कहा जाये उसे आप अपनी बुद्धि से सोचियेगा। मैं आप की श्रद्धा को समझ सकता हूं। मेरे से पूछा है कि पुण्य क्या है। और मैंने पंक्ति भी तो यही उठाई है-

सुकृत पुंज मंजुल अति माला।
ग्यान बिराग बिचार मराला।।

सुकृत मानी पुण्य। हमारी बोली में हम एक शब्द यूझ करते हैं, पुण्यपुंज; पुण्यसमूह। शायद एक कथा पुण्यपुंज पर हुई है। ये 'पुण्यपुंज' बहुत प्यारा शब्द है, पुण्य का समूह। और 'मानस' में तो श्री हनुमानजी के लिए ये शब्द बहुत प्यार से उपयोग में लिया गया है। 'पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा। सेवहु जाइ कृपा आगारा।' हमारे शास्त्रों में पुण्य से जुड़ा हुआ इतना ही प्यारा शब्द है 'पुण्यश्लोक।' तो आपने जब पूछा है तो उस पर आप सोचना जरूर। यदि आप कहे कि हम तो पूर्ण शरणागत है, यदि पूर्ण शरणागत है तो-तो फिर पूछने का, सुनने का कोई प्रश्न ही नहीं रहता। बात खतम! जैसे जगद्गुरु शंकराचार्य कहते हैं, 'न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दु:खं...चिदानंदरूप: शिवोऽहम् शिवोऽहम्।' लेकिन मैं इक्कीसवीं सदी के युवानों के लिए जो मेरे अनुभव में उतरा है ऐसे कुछ शाश्वत मूल्यों की बात करना चाहता हूं। जो कभी ढ़ाई हजार साल पहले सुकरात ने कही थी। सुकृत का अर्थ होता है पुण्य।

मुझे आपके सामने छ:-सात पुण्य की बात कहनी है। शास्त्र में खोजने मत जाना, दिल को टटोलना। दिल से बड़ी कोई किताब नहीं है। ऐसी एक गज़ल थी। हम हर मंदिरों में जाते हैं; हमें जाना चाहिए। तीर्थों में मंदिर है वहीं जाना चाहिए अवश्य। फिर हमारे गांव में मंदिर होता है वहां भी जाना चाहिए। फिर प्रत्येक व्यक्ति के घर में अपनी आस्था के अनुसार कोई कोने में मंदिर हो वहां भी जाना चाहिए। लेकिन हम ये क्यों भूल जाते हैं कि जो निरंतर हमारे साथ-साथ चलता है वो हमारा दिल एक मंदिर है। हृदय मंदिर को हमने खोला ही नहीं! हम कहते हैं कि विचार तो बुद्धि से होता है लेकिन तुलसी कहते हैं कि केवल बुद्धि से विचारो मत। 'हृदय बिचारी', हृदय भी तो एक केन्द्र है; वहां से आप विचारो।

दिल और अक्ल जब अपनी अपनी कहे खुमार,
तब अक्ल की सुनीये और दिल का कहा कीजिए।
-खुमार बाराबंकवी

हृदय को टटोलो। मैं फिर बहुत गंभीरता से क्या कहूं यार! मैं कोई पुराणी नहीं हूं। मैं कोई शास्त्री भी नहीं हूं। मैं कोई भट्टजी नहीं हूं। मैं कोई व्यासजी नहीं हूं। मैं दिल से दिल तक जाने की कोशिश करता हूं। मुझे भी कुछ पुण्य कहने हैं आपको। और मैं पाप की चर्चा नहीं करूंगा। पुण्य है तो बस है। 'उजाला है तो बस है, अंधेरे की चर्चा करने की जरूरत नहीं है।'-ओशो। यद्यपि ये सापेक्ष है या सापेक्ष नहीं भी है। अंधेरा-उजाला हम दोनों शब्द यूझ करते हैं लेकिन जब उजाला है ही; सुकरात जैसी एक रोशनी आई इस धरती पर फिर बकवास करने की जरूरत क्या है? एक पुण्य की व्याख्या तो मैंने आपको पहले ही दिन दे दी शायद कि प्रसन्नता ही पुण्य है। अप्रसन्नता पाप है। आप प्रसन्न रह सकते हो हर हाल में। मैं यहीं से इसीलिए शुरू हो गया कि प्रोग्राम हो तो भी प्रसन्नता और न हो तो भी प्रसन्नता। ये असंगता जो है ये बड़ी मुश्किल है। और मेरे शास्त्रों ने हाथ में पकड़ा जाये उसीको ही शस्त्र नहीं माना है, 'असंग शस्त्रेण दृढ़ेन छित्वा।' एक ऐसा शस्त्र होता है जो असंग है। जो तुम्हें छुए ही नहीं और तुम्हें अपना बना ले। तुम हार जाओ। तुम उसीके हो जाओ। बुद्ध के कई शिष्य कहते थे कि बुद्ध के पास बहुत बैठना मत। बैठे तो गये! आदमी खतरनाक है। उसके पास ज्यादा मत बैठना। और जगद्गुरु कहते हैं कि सत्संग से ही आप धीरे-धीरे असंग होने लगोगे। तो कुछ पुण्य की बातें। ये व्याख्या करना तो बहुत आसान है लेकिन भजन के प्रताप से या गुरु के प्रताप से आदमी निरंतर आत्मपरीक्षण करे और उसके द्वारा यदि एक स्थिति, अवस्था निर्मित हो जाए और आदमी निरंतर प्रसन्न रहने लगे तो उनके समान पुण्यपुंज कोई नहीं है। जब भी किसी काम में मुश्किल आती थी तो हनुमानजी कभी डिप्रेस नहीं हुए। विचार करते थे।

तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई।
करइ बिचार करौं का भाई।।

विचारो, सोचो, बार-बार सोचो। तो मेरे मन में पहली बात यह है कि प्रसन्नता पुण्य है। इसका मतलब है कि आप क्रिया में न करो लेकिन मानसिक रूप में आप दूसरों के बारे में शुभ सोचो ये पुण्य है। मेरे युवान भाई-बहन, अपने मन से किसी के लिए आप शुभ सोचो, अच्छा विचारो दूसरों के बारे में शुभ चिंतन करो ये पुण्य है। पांच लाख रूपये का दान करो ये पुण्य है लेकिन पांच लाख का दान करने में कुछ मात्रा में पाप भी होता है। लेकिन शुद्ध विचार ये पुण्य है। और हमारी मुश्किल स्थिति ये है कि हम एक लाख

रूपया किसीको दे सकते हैं लेकिन लाखेणा सोच नहीं सकते! केवल सोचो, बस। कोई अच्छी प्रगति करता हो तो उसके बारे में दुआ करो। ये पुण्य है। जिस क्षेत्र में जो भी हो मेरे युवान भाई-बहन, मेरे लिए मन का सद्भाव पुण्य है। और गोस्वामीजी ने कलियुग के वर्णन में लिखा है कि कलियुग एक ऐसा समय है जिसमें तुम मानसिक रूप से दूसरों के लिए शुभ सोचोगे तो उसका बड़ा पुण्य है। सब के लिए शुभ सोचे। चाहे कोई भी हो।

किस पर पथ्थर फैंकूं 'कैसर' कौन पराया है?

शीश महल में हर एक चेहरा मुझ-सा लगता है।

क्षमता हो तो आपके पास जो क्षमता है उसके द्वारा परोपकार करो ये तीसरा पुण्य है। जिस वस्तु की आपके पास क्षमता है उसके द्वारा दूसरे का भला हो ये बड़ा पुण्य है। मैं समाज के किस्से सुनता हूं तो हैरान होता हूं कि लोग शोषण करने में पड़े हैं! हमारी क्षमता के अनुकूल हम दूसरों के लिए कुछ करें। फ़ुरसत का जब भी समय मिले, नाम लेना ये पुण्य है। तुलसी लिखते हैं-

राम भगत जग चारि प्रकारा।
सुकृती चारिउ अनघ उदारा।।
चहू चतुर कहुँ नाम अधारा।
ग्यानी प्रभुहि बिसेषि पिआरा।।

जिसको नाम का आधार है वो पुण्यपुंज है। जिसको केवल हरिनाम का आधार है। और मेरे भाई-बहन, यकीन कीजिएगा कि पहुंचे हुए लोगों के जीवन में ऐसी घटनायें युगों से, शताब्दियों से घटती आयी है। कोई सहारा जब आपको सहायक न बने तब हरिनाम सहायक बनता है। अपने में जो सामर्थ्य था, द्रौपदी ने उसका पूरा उपयोग किया कि बचा जाय इस सभा में, मुझे जो निर्वस्त्र करने की कोशिश की जा रही है लेकिन सब प्रयास विफ़ल। कितने बड़े-बड़े लोग बैठे थे जिसके सामने हाथ फैलाये गये। द्रौपदी ने अपने स्वबल का, अपनी स्वसमझ का और अपने स्वपुरुषार्थ का बहुत प्रयोग किया। लेकिन आखिर में द्वारिकाधीश का सिमरन ही उसे काम आया। गजराज को आखिर में द्वारिकाधीश का ही सिमरन काम आया। और अजामिल को भी आखिर में हरिनाम ही काम आया। और तुलसी के जमाने की उस समय की नगरनृत्यांगना वासंती को हरि का नाम ही आखिर में काम आया। प्रभु का नाम सब से बड़ा पुण्य है। हां, अपना कर्तव्य बराबर निभायें। अपनी फ़र्जें पूरी करे लेकिन तुम्हारे परिवार में कोई व्यक्ति अपना कर्तव्य निभाते-निभाते शांति से बैठे-बैठे हरिनाम लेता हो तो समझना तुम्हारे घर में पुण्य का अवतार हुआ है। मैं प्रार्थना करूं मेरे समाज को आप कितने भी बौद्धिक हो, मैं प्रणाम करूं लेकिन हरिनाम की तुलना में कुछ नहीं है इस जगत में। हरिनाम, हरिनाम, हरिनाम।

तो प्रभु का नाम परम पुण्य है। इससे बढ़कर कोई पुण्य नहीं है। दुनिया लाख तोतारटन कहे। दुनिया कुछ भी कहे। और आज हमें और आपको कहनेवाले तो बहुत कम है, दुनिया की इतनी बस्ती में आलोचना करनेवाले बहुत कम है साहब! कृष्ण जब था तब वस्ती कम थी और आलोचना करनेवाले ज्यादा थे। पांडव तो पांच ही थे, वो सौ थे। अब तो अच्छा काल है कि पांडव सौ निकलते हैं और कौरव गिन के पांच-छः निकलते हैं। ये अवसर है प्यारा! हरिनाम की फसल कलियुग में बहुत जल्दी पकती है। मैं फिर एक बार गांधीबापू को याद करूं। वो कहते हैं कि रामनाम और मेरी प्रार्थना ने मुझे मुश्किल समय में बहुत मदद की है। हरिभजन सब से बड़ा पुण्य है। और मैं यह नहीं कहता कि यही नाम। कोई भी नाम आप ले सकते हो। अल्लाह-अल्लाह करो, क्या फ़र्क पडता है? इसमें नासमझों को फ़र्क लगता है! हरि भजो। परमात्मा का नाम। जैसे इस्लाम धर्म में हज पढ़ना, रोजा रखना, मोहर्रम में वो करना और उनके जो नियम है उनमें एक बात यह भी कही गई है कि आदमी कुछ न करे लेकिन 'अल्लाह अल्लाह' करता रहे तो वो भी बहुत बड़ा पुण्य है। ओर तो सब विधि-विधान है यारो, सब विधियां है। मुझे कई लोग कहते हैं कि बापू, कई कथाओं से हम मार्क कर रहे हैं कि अल्लाह करे, ऐसा आप बोल देते हैं; ये कहां से लाये? मैंने कहा, ये मैं लाया नहीं बल्कि अल्लाह मेरे में आता है। तो मैं ये सच कहता हूं। ये सब स्वाभाविक है तो मैं क्या करूं?

तुझ में रब दिखता है यारा मैं क्या करूं?

कोई भी नाम ये पुण्य है। नाम की बड़ी महिमा है। नाम जपनेवाला पुण्यपुंज है। भाव-कुभाव छोडो, मारो गोली! तो यहां एथेन्स में आनंद हो रहा है। कोई पूछे कि सुकरात के यहां क्या हो रहा है? तो कहना, वहां भंडारा हो रहा है! मैं यहां सुकरात का भंडारा करने आया हूं। मैं साधु हूं। उसका भंडारा किसी ने नहीं किया होगा! ये नव दिन का

भंडारा है। एक प्रयोग ये हो रहा है। और मैं कहता ही रहता हूं कि मेरी कथा कोई धर्मशाला नहीं है, एक प्रयोगशाला है। तो मैं चर्चा कर रहा था पुण्य की शृंखला में हरिनाम। परम पुण्य है प्रभु का नाम। जिन्होंने लिया है, ले रहा है, लेगा वो पायेगा।

सुकरात का पुण्य है ये जो मैं अब कहने जा रहा हूं कि बुद्धिमान होते हुए आदमी बालक की तरह जीता हो तो ये पुण्य है। हो बुद्धिबान, विचारवान लेकिन उसका जीवन यदि देखो तो सीधा-सादा, सरल-तरल बच्चे जैसा लगता है। सुकरात का सूत्र है, परम बुद्धिमान बालक जैसा होता है। फिर मैं जिसस को याद करूं तो जिसस कहते हैं, बच्चे जैसा होगा वो ही मेरे पिता के राज्य में प्रवेश कर सकता है। और मुझे एक बार नगीनदासबापा कह रहे थे कि बापू, कोई ईसाई धर्म के धर्मगुरु ने एक संत की व्याख्या की, कोई संत अपने घर आये तो हमें यह लगे कि हमारे घर कोई बालक खेलने आया है; बोझ न बने वो बुद्धपुरुष। तो बुद्धिमान-विचारवान होते हुए भी बालक की तरह जी ले वो पुण्य है।

आप खुश होंगे, मैं अपने आप जिसे-जिसे पुण्य मानता हूं उसमें एक यह भी है कि कोई आपको मिले और आप अकारण दिल से उसके सामने मुस्कुरा दो ये पुण्य है। किसी के सामने हृदय से मुस्कुरा देना पुण्य है। और सब प्रकार की सुविधा होते हुए भी, क्षमता होते हुए भी, अपने पास अधिकार है, हक्क है, लायकात है, सब कुछ होते हुए भी स्वभाव को सरल रखना पुण्य है। जितने-जितने बुद्धपुरुष हुए हैं सब सरल हुए हैं। मासूम लगते हैं। जटिल-क्लिष्ट नहीं लगते हैं। मैं आंखे बंद करके देखूं रमण महर्षि को तो मुझे लगता है, कितना भद्र बुद्धपुरुष बैठा है अरुणाचल की गुफा में! सरल-तरल। मैं दक्षिणेश्वरम् की ओर मेरे चित्त को यात्रा कराउं तो मुझे दिखता है कि कैसा परमहंस सरल-तरल बैठा है ठाकुर! मानसिक रूप से यद्यपि महर्षि अरविंद तो बहुत बुद्धिमान व्यक्ति, बड़े साक्षर है अरविंद लेकिन साधनासंपन्न अरविंद की ओर चित्त की यात्रा करे तो लगता है कि कितना निर्दोष चित्त होगा! भगवान ईसु, जिसस कितना मासूम लगता है! और ये दुनियावालों ने मासूमों को ही मारा है! तो सब कुछ होते हुए भी सरल रहना मेरी समझ में पुण्य है। ऐसा पुण्य कमाओ युवान दोस्त! इक्कीसवीं सदी में मेरी समझ में ये पुण्य है। और ऐसा पुण्य जिसमें होगा वो भंवरे की तरह हर जगह से शुभ चुनेगा।

पहले दिन की कथा में ही मैंने कहा था कि ज्ञान, विराग और विचार जिसमें है, तुलसी उसको हंस कहते हैं। और हंस की एक प्रकृति तो मैंने आपको बताई उस समय कि वो क्षीर-नीर विवेक करता है। लेकिन उस समय की एक बात है कि किस ज्ञान को हंस कहोगे, किस विराग को हंस कहोगे, किस विचार को हंस कहोगे? उसका एक दूसरा लक्षण हमें जानना पड़ेगा तुलसी से, हंस के बारे में हमें ये जानना पड़ेगा कि ये हंस है कि एक कल्पन है? ये तथ्य है कि सत्य है? खोज का विषय है। हंस तत्त्वतः है। और हंस के जो गुणधर्म है ऐसा हंस मिलता है। तो 'ग्यान विराग बिचार मराला।' उसका स्वभाव जो है वो दूध-पानी को बिलग करना ये तो है लेकिन हंस का एक स्वभाव हमारे यहां बताया गया है कि वो मोती का चारा चुगता है। तुलसी कहते हैं कि मोती का आहार करते हैं हंस। अब कोई पक्षी मोती का चारा चुगे और जीवित रहे ये भी एक खोज का विषय है। किसको हंस कहे? तुलसीदासजी जवाब देते हैं, वाल्मीकि के मुख से दिलवाते हैं रामभद्र के सामने कि राघव, तुम्हारे यश, तुम्हारी कीर्ति, तुम्हारी कथा ये मानस सरोवर है। और जिसकी जीभ हंसिनी है। और तुम्हारे 'रामचरित मानस'रूपी सरोवर से जो तुम्हारे गुण के मोती को चुगती है, आप उनके हृदय में निवास करो। मूल्यवान वस्तु मोती है। ज्ञान हंस कौन? जो मूल्यवान बातें करें। मूल्यवान स्वीकार करें। वो ज्ञानी है जो मूल्यवान बातें करे। वो ज्ञान हंस है जो मूल्यवान चीजों का स्वीकार करे, श्रेष्ठ को कुबूल करे। मैं आखिरकार का आदमी नहीं हूं इसलिए मैं इतना ही कहूं, श्रेष्ठ को स्वीकार करें; जो अश्रेष्ठ है उसका तिरस्कार नहीं, थोड़ा वहां उदासीन हो जाये ये ज्ञानवान आदमी है।

प्रज्ञावान आदमी है सुकरात। उसने मूल्यवान चीजों को ग्रहण किया है। मूल्यवान सूत्रों को पकड़ा। सुकरात का एक सूत्र है, जहां श्रद्धा है, वहां डर है लेकिन जहां डर है वहां श्रद्धा होती ही है ये निश्चित्त नहीं है। जहां प्रेम है वहां डर है लेकिन डर है वहां प्रेम है ये कहना मुश्किल है। आपको जब तक किसी में प्रेम नहीं, किसी में श्रद्धा नहीं, किसी की शरणागति नहीं तब तक आपको कोई डर नहीं। तब तक आप मगरूर होते हैं। लेकिन आप

किसी से प्रेम करने लगे, श्रद्धा में डूब जाये फिर आपको डर लगने लगेगा कि मेरा श्रद्धेय है। कहीं दाग न लग जाये। ये मेरा प्रेमी है इसको ठेस न लग जाये। एक वस्तु याद रखना कि बुद्धपुरुष की पसंद क्या है और नापसंद क्या है वो भी हम पहचान नहीं पाते। ये बड़ा मुश्किल माजरा है। मुझे तो कभी-कभी लगता है कि ईश्वर की जिस तरह व्याख्या मिलती है उस रूप में ईश्वर को थोड़ा समझना आसान भी है। लेकिन बुद्धपुरुष को समझना मुश्किल है।

सौंदर्यो पामतां पहेलां सुंदर बनवुं पडे।

-कलापी

पुण्य के बारे में इस युवक ने जो पूछा उसमें एक पुण्य रह गया था, मैं बताउं कि हम और आप अपना पाप कबूल कर ले ये पुण्य है। बहुत बड़ा पुण्य है मेरे भाई-बहनों, अपनी कमियों को कबूल कर लेना। और ये हम थोड़ी पहल करते हैं? हमारे पूर्वजों ने यही तो किया था। यही तो भारतीय परंपरा है कि 'हमारे हरि अवगुण चित्त ना धरो।' सक्षम हो तो भी रांक रहो भक्ति करनी हो तो। मुझे कहने दो, मेरे व्रज की गोपांगनायें कमजोर नहीं थी। और सब से श्रेष्ठ महाराणीश्री गोपी यशोदा है, जो ब्रह्म को अपने आंगन में ला सकती है। उसे कमजोर कैसे कहा जा सकता है? जो ब्रह्म को बांध सकती है रस्सी से उसको कमजोर कैसे कहा जाये? लेकिन सक्षम होने के बाद भी रांकपना हो। व्रजांगनाएं मेरी दृष्टि में बहुत सशक्त है लेकिन अपनेआप को रांक घोषित करती है। और फिर मुझे गंगासती याद आती है-

भक्ति करवी ऐने रांक थईने रहेवुं...

बच्चों, आपको तो देश का बहुत अनुभव नहीं है। और अब तो इक्कीसवीं सदी है। और पचास साल पहले की मैं बात कर रहा हूं तो व्यासपीठ पर बैठनेवाले कथाकार को मूंछ नहीं रखनी पड़ती थी। भद्र रूप रखना पड़ता था। क्योंकि व्यासपीठ पर बैठे वो पुरुष नहीं, गोपी है। गोपी होने की तैयारी हो तो व्यासपीठ पर बैठो। ये तो प्रेम का पंथ है। ये व्रजांगनाओं का रास्ता है। ये वृंदावनी सभ्यता है। वैसे हमारे साधुओं में तो ऐसी कोई रीत-भात नहीं है, कोई नीति-नियम नहीं है लेकिन परिवार में कोई मर जाता है तो सब मुंडन करवाते हैं वैसे व्यासपीठ पर बैठे उनके मानो सब विधिविधान पूरे। भक्ति बहुत बलवान होती है साहब! और भरोसा बिना भक्ति नहीं होती। बहुत मजबूती देती है भक्ति। दूसरा, मौन फ़ायदा करेगा।

हजारों आफतों से बचे रहते हैं वो लोग,
जो सुनते हैं ज्यादा और कम बोलते हैं।

मौन; बहुत मुश्किल है। धीरे-धीरे बोलना यह भी एक मौन है। ऊंची आवाज़ में बोलने से ये बेटर है कि जरा धीरे-धीरे, होले-होले बोले। 'भगवद्गीता' ने मन की प्रसन्नता को मौन कहा है। केवल वाणी बंद हो वो नहीं; मन का प्रसाद उसको भी मौन कहा है। लेकिन मौन फायदा करता है साहब! लेकिन मौन हो तब भी जरूरत हो तब जिद्द न करना, बोलना। शुरू में कठिनाई होती है लेकिन मौन आत्मपरीक्षण का साधन बने अवश्य। मेरी समझ से मेरी जिम्मेवारी से तीसरा, किसी पहुंचे हुए फ़कीर के पास जाकर बैठ जाना। अपने को अपना पता चलने लगता है। धीरे-धीरे भीतर की किताब के अध्याय खुलने लगते हैं। कई लोगों को आत्मबोध हुआ है बिना वचन, बिना श्रवण, बिना शास्त्रचर्चा, केवल बैठे रहे किसी बुद्धपुरुष के पास। बुद्ध भगवान के समय में ऐसे प्रयोग बहुत होते रहे। केवल बुद्ध के निकट बैठते थे लोग। उपनिषद का भी अर्थ यही था कि पहुंचे हुए महापुरुष के पास बैठना। इससे भी आत्मपरीक्षण हो जाता है। सुकरात कहते हैं कि यदि आत्मपरीक्षण नहीं तो जीवन का कोई अर्थ नहीं है। तो इन दिनों में हम एक महान विचारक-दार्शनिक उसकी भूमि में बैठकर हमारे जीवन के विकास और विश्राम के लिए कुछ वार्तालाप कर रहे हैं।

तो नव दिवसीय 'मानस-सुकरात' में आगे बढ़ते हुए कुछ कथा का क्रम लूं। भगवान याज्ञवल्क्य को भरद्वाजजी ने रामकथा के बारे में पूछा और जवाब में पहले शिवकथा सुनाई। सेतु किया। जिज्ञासा रामकथा की, सुनाई शिवकथा ताकि शैव और वैष्णवों का भेद मिटे, सेतु निर्मित हो। शिव और पार्वती की शादी तक की कथा सुनाई। पार्वती ने पुत्र को जनम दिया और ताडकारसुर नामक राक्षस को निर्वाण दिया। एक बार शिव कैलास के वेदविदित वटवृक्ष के नीचे बैठे हैं और पार्वती आकर जिज्ञासा करती हैं कि भगवन्, रामतत्त्व क्या है? इस जिज्ञासा के जवाब में भगवान शंकर पार्वती को रामकथा सुनाते हैं। देवी, पहले तो आप ये सुनो कि राम का जन्म क्यों होता है। पांच कारण बतायें। पहला कारण जय-विजय का। दूसरा कारण सतीवृंदा का। तीसरा कारण नारद ने शाप दिया वो और चौथा कारण मनु-शतरूपा का और पांचवां कारण राजा प्रतापभानु का। प्रतापभानु राजा को ब्राह्मणों ने शाप दिया इसलिए राजा दूसरे जनम में रावण हुआ। उसका भाई अरिमर्दन कुंभकर्ण हुआ। धर्मरुचि नाम का मंत्री विभीषण हुआ। मैं हर वक्त कहता हूं कि रामकथा में राम के प्रागट्य की कथा से पूर्व रावण की कथा सुनाई। क्योंकि सूर्य उदित होने से पूर्व रात्रि होती है। पहले निशिचिर वंश की कथा सुनाई उसके बाद सूर्यवंश की कथा सुनाई।

रावण, कुंभकर्ण, विभीषण ने बहुत तपस्या की। दुर्गम से दुर्गम वरदान प्राप्त किये। और जो वरदान प्राप्त किये उसका दुरुपयोग करने लगे। पूरी कायनात, पूरी दुनिया त्रस्त हो गई। पृथ्वी कांप गई। गाय का रूप लेकर पृथ्वी ऋषिमुनियों के पास जाकर रोने लगी कि मुझे बचाओ। ऋषिमुनियों ने कहा, हमारा चिंतन-मनन रुक गया है राक्षसों के जुल्म के सामने। हम देवताओं के पास जाये। देवताओं को प्रार्थना की। सब ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा ने कहा कि हम सब मिलकर परमात्मा को पुकारे ताकि कोई परमतत्त्व आकर हमारी समस्याओं का समाधान करें। सामूहिक प्रार्थना हुई। गांधीबापू कहते हैं, समूह श्रम, समूह कांतण, समूह प्रार्थना। विनोबाजी भी इसी सूत्र पर कहते हैं कि साधना भी समूह साधना हो; समूह सफ़ाई हो। प्रकृति के सभी घटकों ने मिलकर पुकारा परमतत्त्व को। आकाशवाणी हुई है, 'धैर्य रखो। कई कारण भी है मेरे प्रगट होने के और कार्य-कारण सिद्धांत मुझे लागू नहीं होता इसलिए कोई कारण है भी नहीं। मैं प्रगट होउंगा अयोध्या में। थोड़ा धैर्य धारण करो। प्रतीक्षा करो।'

मेरे युवान भाई-बहन, मैंने हर वक्त इस प्रसंग में कहा है कि परमात्मा के प्रागट्य के तीन सूत्र है। राम मानी हमारे जीवन में विश्राम को प्राप्त करने के लिए, विराम को प्राप्त करने के लिए, शांति को प्राप्त करने के लिए, हमारे अंत:करण की अयोध्या में ऐसा तत्त्व प्रगटे उसके लिए तीन काम करने पड़ते हैं। एक, पुरुषार्थ; देवताओं ने बहुत पुरुषार्थ किया कि हमारी समस्या मिटे लेकिन हमारी भी तो कोई सीमा है। पुरुषार्थ की सीमा पूरी हो जाये उसके बाद प्रार्थना करो। सुकरात कहते हैं, प्रार्थना मांगने के लिए मत करो, आशीर्वाद के लिए करो। हम मंदिर में मांगने के लिए ही जाते हैं! पुरुषार्थ की सीमा पूरी हो तब प्रार्थना करे और प्रार्थना करे तो भी कितनी करेंगे? इस के बाद का एक पडाव है प्रतीक्षा। कृष्ण दवे की कविता है-

आवशे, ए आवशे, ए आवशे, ए आवशे।
तुं प्रतीक्षामां अगर शबरीपणुं जो लावशे।

और भक्ति तो प्रतीक्षा का मारग है। ज्ञान तो परीक्षा कर सकता है। विज्ञान तो प्रयोगशाला में ले जाता है 'इति सिद्धम्' के लिए। लेकिन भक्ति तो प्रतीक्षा का मारग है शबरी की तरह, अहल्या की तरह। ये तीनों इकठ्ठा हो जाये और इसके बाद जो रिजल्ट आता है उसका नाम है रामजनम; विश्राम का प्रागट्य; परम सुख की अनुभूति; जो कहो। सब देवता पृथ्वी पर जनम लेकर प्रतीक्षा करते हैं। भूमिका बन गई ईश्वर के प्रगट होने की। गोस्वामीजी हमें लिए चलते हैं अयोध्या, जहां श्रीराम का प्रागट्य होनेवाला था।

जिसको नाम का आधार है वो पुण्यपुंज है। जिसको केवल हरिनाम का आधार है। कोई सहारा जब आपको सहायक न बने तब हरिनाम सहायक बनता है। अपने में जो सामर्थ्य था, द्रौपदी ने उसका पूरा उपयोग किया कि बचा जाय इस सभा में, मुझे जो निर्वस्त्र करने की कोशिश की जा रही है लेकिन सब प्रयास विफ़ल। लेकिन आखिर में द्वारिकाधीश का सिमरन ही उसे काम आया। गजराज को आखिर में द्वारिकाधीश का ही सिमरन काम आया। और अजामिल को भी आखिर में हरिनाम ही काम आया। मैं प्रार्थना करूं मेरे समाज को आप कितने भी बौद्धिक हो, मैं प्रणाम करूं लेकिन हरिनाम की तुलना में कुछ नहीं है इस जगत में।

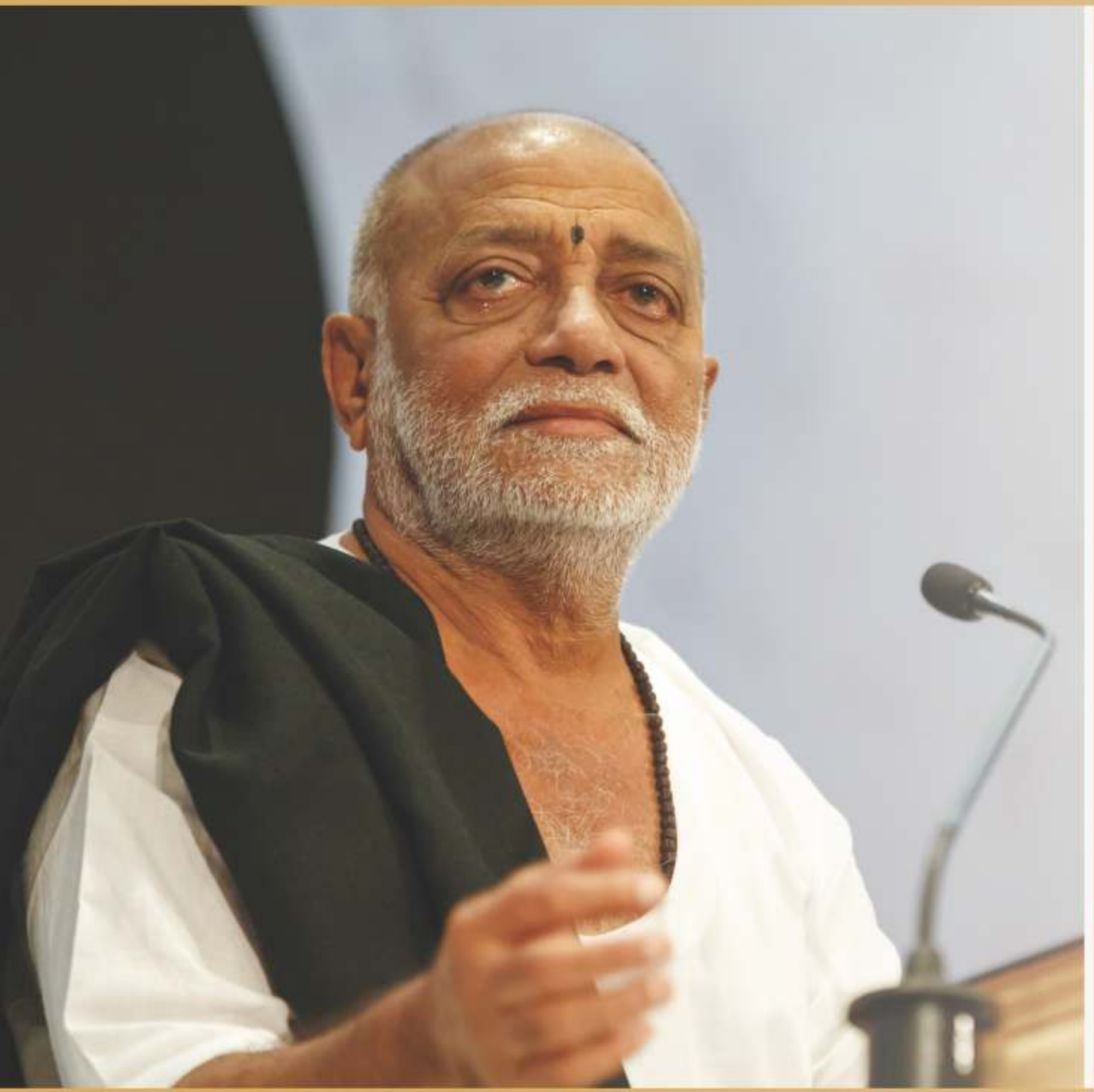

कथा–दर्शन

- हरिनाम लेने से विश्राम और जागृति की प्राप्ति हो जाती है।
- हरिनाम की फ़सल कलियुग में बहुत जल्दी पकती है।
- जिसको नाम का आधार है वो पुण्यपुंज है।
- परमात्मा परीक्षा का विषय नहीं है, प्रतीक्षा का है।
- सद्गुरु बाहर से सगुण होता है, अंदर से निर्गुण।
- आप में यदि तीव्रता होगी तो आपको गुरु खोजना नहीं पड़ेगा, कोई गुरु आपको खोज लेगा।
- बुद्धपुरुष के समान विश्व में कोई सुखी नहीं होता और बुद्धपुरुष के समान विश्व में कोई दुःखी नहीं होता।
- बुद्धपुरुषों को बार–बार मत बुलाना। उसकी हां में वेद होता है, ना में वेदना होती है।
- बुद्धपुरुष की सेवा में पूरा अस्तित्व रहता है।
- बुद्धपुरुष अपने नेटवर्क में सबको रखता है।
- अश्रु और आश्रय यही है शरणागतों की संपदा।
- जिसने भी सत्य का मार्ग लिया उन्हें ज़हर पीना पड़ा है।
- प्रेम अखबारों में नहीं छपता, एतबारों में छपता है।
- करुणा के समान गहराई किसी की नहीं हो सकती।
- स्मृति हमारी निजी संपदा है।
- शब्द को भी अपनी एक खुश्बू होती है।
- प्रसन्नता पुण्य है, अप्रसन्नता पाप है।
- आदमी के संयम की एक ध्वनि होती है, जो हरि सुन लेता है।
- जिसका संग अच्छा न लगे उसकी ओर उदासीन हो जाओ।
- बेईमानी से कुछ मिल भी जाय तो पैसों के रूप में मिलेगा, परमेश्वर के रूप में नहीं मिलेगा।
- विज्ञान सदैव प्रयोग करके कबूल करेगा और अध्यात्म को प्रयोग नहीं करना पड़ता, वह स्वयंसिद्ध है।

सुकरात हमारे जीवन में सुखरात पैदा कर सकता है

कल का दौर संभालें जहां से छोड़ा था। चर्चा चल रही थी सुकरात के सूत्र की। सुकरात कहता है कि जहां श्रद्धा है वहां थोड़ा भय रहता है। लेकिन जहां भय है वहां श्रद्धा होगी ही ये कहना मुश्किल है। उसी आधार से मेरी व्यासपीठ मुखर हुई। जहां प्यार है, प्रेम है वहां शुरूआत में तो भय नहीं होता, एक मगरूरी होती है। लोग देखने के लिए जाते हैं, नापने के लिए जाते हैं कि क्या हो रहा है? उसमें से बहुत अपने पास, अंदर जो कुछ है बहुत-सी चीज लेकर लोग जाते हैं। लेकिन एक बार जब वो प्रवेश कर जाता है और किसी का हो जाता है तब उसको बहुत चिंता रहती है कि कहीं अब उससे चूक न हो जाये! कहीं दाग न लग जाये!

अमीर खुशरो आठ साल का था। जब आठ साल की उम्र थी तब से वो शेरो-शायरी करता था। शायरी जगत के आदि लोगों में अमीर आता है। कुछ बातों का ये जनक है। उसके बाप को निज़ामुद्दीन में बड़ी श्रद्धा थी। निज़ामुद्दीन इन दिनों में दिल्ही के बाहर खंडहर जगह थी वहां ये मुर्शिद पड़ा रहता था। अक्सर अमीर का बाप उसके पास जाता था। आठ साल के अमीर ने कहा कि मुझे ले चलो। कहा कि बेटा, सब को प्रवेश नहीं देता है निज़ामुद्दीन। इसका मतलब ये नहीं कि अस्वीकार करता है लेकिन खबर नहीं, किस रंग में डूबा रहता है फ़कीर! जवाब दे, न दे! मुझे कहते हैं बापू, रोनेवाली कथाएं मत कहिए लेकिन मैं क्या करूं? जब पीरों-पयगंबर की बात आती है तो मुझे बहुत छू जाती है। कहीं न कहीं किसी जनम में घराना तो वो ही रहा होगा! यही साधना रही होगी। यही गूफ़्तगू, यही विचारयज्ञ चलता होगा! एक बार बात हो रही थी, बापू, त्रिभुवनदास दादा, अमृत माँ उसके परिवार में कोई है? मैंने कहा, एक बार मैंने कोशिश तो की थी। देहात में बुलाए भी थे। मेरी मुश्किल क्या हो गई कि दादा के पास पहुंचने के बाद मेरी कोई खोज नहीं रही कि मैं आगे जाउं। मुझे लगा कि मेरा मूल आ गया। मैंने उसके बारे में ज्यादा सोचा नहीं।

एक श्रोता ने आज ये पूछा है तो मैं कहूं, आप मेरे अंगत जो है। बापू, आप दादा की बात करते हैं तो उसके माता-पिता कौन थे? दादी तो अमृत माँ, इसका नाम तो पूरी दुनिया जानती है। लेकिन दादाजी के पिता का नाम रघुरामदादा और माँ का नाम था संतोष माँ। शायद वो संतोष आया। रघुरामदादा के पिता का नाम नथुरामदादा। फ़िर मुझे

पता नहीं। पिता के पिता का नाम जीवणदासदादा तक तो है लेकिन माता के बारे में विशेष जानकारी नहीं। मैं खोज तो कर सकता था, न कर सकूं ऐसी तो कोई बात नहीं। लेकिन खबर नहीं, आज तक मेरे मन में ये विचार नहीं आया कि फिर आगे कौन था? क्योंकि मुझे लगा कि उस पहचान के बाद कुछ पहचानने का शेष नहीं रहा। मुझे लगा कि बस, बात खतम हो गई! अब क्या जानना? किसको जानना? क्या शेष है? मेरे कहने का मतलब ये कि मैंने खोज ही नहीं की। खोज वहां खतम हो चुकी थी। ऐसे ही असंगता थी। तो ये पीरों की, मुर्शिदों की, महापुरुषों की चर्चा में जाता हूं तो स्वाभाविक मैं काबू में नहीं होता हूं।

तो आठ साल का था अमीर खुशरो। निज़ाम खंडहर में बैठता था। ये उसकी हवेली थी। ये सुकरात के समय में भी कैसे मकान होंगे? कैसे रहता होगा? परवीन शाकीर का एक शे'र है। आदमी को भजन की जब आदत बन जाती है, भजन जिसका स्वभाव बन जाता है, फ़कीरों का, संतों का, परवीन कहती है-

उंगलियों को तराश दो फ़िर भी,
आदतन उसीका ही नाम लिखेगी।

प्यार बहुत नाजुक चीज़ है साहब! एक शे'र ओर सुनिए-

मैं सच कहूंगी फिर भी हार जाउंगी,
वो झूठ भी बोलेगा तो लाजवाब कर देगा।

ये अच्छा सूत्र है। मैं कोई आलोचना नहीं करता हूं। मेरी अपनी सोच है। मैं क्या करूं? ये जो 'सत्यमेव जयते।' बहुत प्यारा सूत्र है, अवश्य। लेकिन सत्य को जय और पराजय से क्या लेना-देना? सत्य में हार जाना भी बड़ी महिमावंत स्थिति है और झूठ में जीत जाना भी न के बराबर है। तो फ़कीरों की जो बात है। मस्ती में निज़ाम रहते थे। अमीर के बाप ने कहा कि बेटा, वो प्रवेश नहीं देता। मौज आये तो कहे, न आये तो! मेरा इतना घनिष्ठ रिश्ता है फिर भी वो बादशाह है। बोले, 'मुझे ले तो चलो।' तो ले जाता है। उसका बाप अंदर गया तो स्वागत किया, आओ बैठो। बेटे को अंदर लेकर नहीं गये। फिर पूछा, मेरा आठ साल का बेटा आया है। मिलना चाहता है, दर्शन चाहता है, ले आउं? बोले, नहीं! मना कर दिया। और वहां जिद्द होती नहीं। एक ही बात, खतम! बुद्धपुरुषों को बार-बार मत बुलाना। हां कह दे तो हां, ना कह दे तो ना। उसकी हां में वेद होता है, ना में वेदना होती है। ना कह दे तो बुद्धपुरुष को जितनी वेदना होती है, दुनिया में किसी को नहीं होती। मेरी प्रिय व्यक्ति को मना कर दिया मैंने! लेकिन मना करे उसमें हमारा परम कल्याण होता है, ये सूत्र मत भूलिएगा। तो दलील तो होती नहीं थी। बाहर आये कि बेटा, मना कर दिया। आठ साल का अमीर कहता है, मेरे दो शे'र ले जाओ और बादशाह को कहो कि हां कहे तो आउं, ना कहे तो न आउं। शे'र का मतलब ये है कि बाबा, मैं तो छोटा हूं लेकिन कयामत से पहले मैं कितना छोटा था? पीछे के जनम की बात करने लगे। तब से मैं सत्य का आग्रही हूं। अब आपका दरबार निश्चित करे, मैं आ सकता हूं कि नहीं आ सकता? बाप इस तरह का शे'र लेकर जाता है। पढ़ते ही आंखें डबडबा जाती है! कहता है, अंदर बुला लो। देखिये, वो अंदर आया तो निज़ाम ने कहा कि तुम जाओ। इतनी सालों से जो अंदर जाता था फिर भी पाया नहीं था और जो पहली बार गया वो पीर को पा गया साहब कि दोनों में इतनी मोहब्बत हो गई। ये गुरुजनों को समझना मुश्किल है!

एक दिन अमीर खुशरो को निजामुद्दीन कहते हैं कि वो जरा बूढ़े हो गये हैं। वो कहे कि तू मेरे लिए प्रार्थना कर। अमीर कहे कि बाबा, मैं आपके लिए प्रार्थना करूं? आप मेरे लिए कुछ कर सकते हैं। बोले, नहीं, तू मेरे लिए प्रार्थना कर, मेरी उम्र बढ़ें। निज़ाम अमीर को कहते हैं कि मैं दीर्घायु होउं इसलिए तू प्रार्थना कर। परमात्मा से मेरे लिए दीर्घायु की कामना कर। बाबा, आप बहुत जीये, ये तो मेरे लिए अच्छा है लेकिन मुझे संशय हो रहा है कि आप फ़कीर पहुंचे हुए बुद्धपुरुष है। आप ज्यादा जीने की कामना कर रहे हैं? जिजीविषा है आपकी? तो उसने कहा कि मुझे पता है कि मैं मर जाउंगा तो तू भी मर जायेगा। इसलिए मैं मरना नहीं चाहता। क्योंकि मैं गया तो मेरा अमीर भी चला जायेगा। आप कल्पना कीजिए, हर उंचाई संसार की इन बुद्धपुरुषों के पास छोटी लगती है। और फिर एक वसियत की उसने। इस्लाम के नाम वसियत की कि शरीअत में यदि व्यवस्था हो और आप लोग शरीअत के नियम बदलने में नीडर हो तो मेरे बारे में इतना लिखो कि अमीर को मेरे साथ एक ही कब्र में दफ़नाया जाय। उसको अलग न दफ़नाया जाय। ऐसे बुद्धपुरुष के पास अमीर जब पहली बार गया तब गुरूर में गया लेकिन जब उसका हो गया तो बाबा से बहुत डरता रहा कि मेरे कारण कहीं दाग न लग जाए।

नागण सहु विलाप करे छे नागने बहु दु:ख आपशे;
मथुरानगरीमां लई जशे पछी नागनुं शीश कापशे।
बेउं कर जोडीने वीनवे: स्वामी! मूको अमारा कंथने;
अमे अपराधी कांई न समज्यां, न ओळख्या भगवंतने।

तो जहां श्रद्धा होती है वहां थोड़ा डर होता है। सुकरात कहते हैं, इसका मतलब ये नहीं कि जहां डर है वहां श्रद्धा होती ही है।

यहां मुझे सुकरात को अंजलि देनी थी; सुकरात को 'मानस' के आधार पर गाना था। इसलिए मैंने जो थोड़ा कुछ देखा, सुकरात के बारे में पढ़ा, जानने की कोशिश की उसमें प्लेटो ने जो संगृहित की है उसकी कुछ बातें; इनमें एक बात मुझे ये मिली जो 'वाल्मीकि रामायण' में है।

सत्यं च धर्मं च पराक्रमं च...

'वाल्मीकि रामायण' के 'अयोध्याकांड' का ये सूत्र है और इसमें करीब-करीब अस्सी प्रतिशत सुकरात के जीवन में, उसके विचारों में, उसके दर्शन में ये सब दिखता है। इसलिए आज की कथा का प्रारंभ मुझे 'वाल्मीकि रामायण' के इस मंत्र से करना है। लेकिन भवभूति का मूल रस करुण है। ये तो साहित्य का है। मेरी तो आत्मा का रस करुण है। भवभूति तो साहित्यकार है। मैंने तो बहुत साल पहले कहा कि मेरी तो दो ही वस्तु में आस्था है। एक अश्रु, एक आश्रय, एक दृढ़ाश्रय। अश्रु और आश्रय यही है शरणागतों की संपदा। यही है एक मात्र दैवी संपदा। आपको यदि मेरी व्यासपीठ पर भरोसा हो कि मोरारिबापू धोखा नहीं दे सकता तो एक वस्तु याद रखना कि राम के चरण से अहल्या का उद्धार हो जाय, ये तो होता है लेकिन बुद्धपुरुष के चरण के स्मरण से भी अहल्या का उद्धार हो सकता है। यस, यस, यस। मुझे कोई हिला नहीं सकता इस भरोसे पर। उनको आने की जरूरत नहीं, उनके चरण की याद ही काफ़ी है। इसमें व्यक्तिपूजा नहीं है साहब! मैं व्यक्तिपूजा का आदमी हूं ही नहीं। इसलिए मैंने अपने आप को हटा लिया कि मैं कोई गुरु नहीं। मैं फ़िर एक बार कहूं कि ये डो.निखिल बैठा है। उसने एक कमरा बनाया। मैंने कभी एक कथा में कहा था कि ड्रोइंग रूम, किचन, मास्टर बेड रूम सब कुछ बनाओ पर एक रूम ऐसा बनाओ कि वहां केवल चुपचाप बैठो, ध्यान करो, बैठो जो करो। उसने ऐसे एक कमरा बनाया। वो मुझे ले गया और मुझे कहा, बापू, ये कमरा मैंने बनाया। यहां मैं कुछ नहीं रखता। बस, एक आपकी तसवीर रखता हूं और ये रखता हूं। मैंने दो-टूक पूरे जगत के सामने कहा, मैं भी तुम्हें डिस्टर्ब करूंगा। यहां से मेरी तसवीर भी निकाल दे। व्यक्ति को छोड़ो। मैं बाधा बन सकता हूं। और कोई भी व्यक्ति हो उसमें कमजोरियां होती है। इन्सान आख़िर इन्सान है।

रमतां रमतां लडी पडे भै माणस छे।
हसतां हसतां रडी पडे भै माणस छे।

-जयन्त पाठक

ठाकुर रामकृष्ण को उसके गुरु तोतापुरी ने कहा था कि कालि को भी हटा दे; ये जो बीच में कालि आती है न! काट दे उसका शरीर। माध्यम बाधा न बनना चाहिए, माध्यम मारग बनना चाहिए। गुरु मारग बन जाय। कवि काग की दो पंक्ति-

जगतने बांधनाराओ प्रथम बिस्तर बनी जाजो।
तमारा ए ज बिस्तरमां जगत आवीने बंधाशे।

और हम इधर से छूटे, इधर बंध गये! बंधन तो वो ही का वो ही रहा! जंजीरें सोने की हो या लोहे की हो क्या फ़र्क पड़ता है?

तो 'वाल्मीकि रामायण' के ये मंत्र की कुछ बातें सुकरात में दिखती है। ये मंत्र मैं ले आया हूं। हम सब उसका उच्चारण करें। फिर सुकरात के इन विचारों के साथ उसका दर्शन करें। सुकरात का थोड़ा जीवनचरित्र, कुछ उस समय की परिस्थितियां और उनके जो मूल-मूल विचार थे, उसकी जो सूत्रात्मक छोटी-सी किताब है। उसके सब सूत्र है वो मुझे ज्यादा मदद कर रही है। तो ये सब मैं देखता हूं तो उसका मूल मुझे 'वाल्मीकि रामायण' में दिखता है। बहुत प्यारा मंत्र है 'वाल्मीकि रामायण' का। 'वाल्मीकि रामायण' यानी तो क्या कहे! मुझे 'मानस-वाल्मीक' बोलना है। वैसे 'मानस-वाल्मीक' पर बोला हूं। वो तो तुलसी का जो वाल्मीक है उसके आधार कर जो चौदह स्थान है। मूल 'वाल्मीकि रामायण' उसका तुलनात्मक अभ्यास, साहित्यिक भाषा में बोल रहा हूं! उसकी भी बातें करने का मुझे मनोरथ है। मनोरथ तो करता रहता हूं। हो तो हो, न हो तो न हो! वाल्मीकि का मंत्र बोलीए-

सत्यं च धर्मं च पराक्रमं च
भूतानुकम्पा प्रियवादितां च।
द्विजातिदेवातिथिपूजनं च
पन्थानमाहु स्त्रिदिवस्य सन्त:।।

वाल्मीकिजी कहते हैं अपने 'रामायण' में कि परम मार्ग ये तो स्वर्ग का मार्ग है। यानी परम पंथ कौन-सा? जिसमें इतनी वस्तु हो और लक्षण जिसमें हो, इतने सद्‌गुण जिसमें हो, संतगण कहते हैं, वो स्वर्गपंथी है। बिल्कुल इतना सरल श्लोक है; इतना सरल मंत्र है। उसको भाषा में बदलने की जरूरत ही नहीं पड़ती। पहला सूत्र है, 'सत्यं च', सत्य ये स्वर्ग का मार्ग है यानी ये शुभ पंथ है, परम प्राप्ति का मार्ग है। ये मंत्र इसीलिए मैं लिखकर लाया हूं। सुकरात के बारे में क्या कहूं? इसका मार्ग सत्य का था। यही तो महान पंथ है सत्य। मैं निवेदन करके आगे बढ़ूं, हर वक्त कहता हूं कि यदि हमारी कोई मजबूरियां है अथवा तो हमारा स्वभाव बन गया है, हम झूठ बोलते हैं। सत्य नहीं बोल पाते तो प्लीज़, इतना तो जरूर करिएगा, कोई सत्य कहता हो तो उसके सत्य का स्वीकार करना। सुकरात का दैवी मार्ग था, सुकरात का शुभ पंथ था जो संतों ने कहा, वो है सत्य। सुकरात को इसीलिए हम याद करते हैं, ये आदमी सत्य का उपासक रहा। धर्म दूसरा मार्ग है। मुझे अच्छा लगता है, यहां केवल धर्म लिखा है। हिन्दुधर्म, मुस्लिमधर्म, इसाईधर्म उस समय ऐसा कुछ था ही नहीं। केवल एक ही विचारधारा चल रही थी। वाल्मीकि का काल। धर्म का पंथ, न्याय का पंथ, नीति का पंथ, प्रामाणिकता का पंथ, ईमानदारी का पंथ। एक अर्थ में देखे तो सुकरात का था न्याय का पंथ। मुझे यहां इतना अभिप्रेत है कि सुकरात का मार्ग नीति का है, ईमानदारी का है, प्रामाणिकता का है, न्याय का है। तो वाल्मीकि के विचारों से बात बैठती है।

सत्यं च धर्मं च पराक्रमं च...

पराक्रम; किसी भी परिस्थिति के सामने हिंमत न हारना और पराक्रमी बनकर के उसके सामने डटे रहना ये शुभ मार्ग की निशानी संत बताते हैं। और सुकरात का पराक्रम! कौन उसके सामने उंगली उठा सकेगा? मैं फ़िर एक बार दोहरा रहा हूं, उसको छूट दी गई थी कि आप एथेन्स छोड़ दो। कोई ऐसी जगह जा कर निवास करो, आपको कोई चिंता नहीं, जीवन व्यतीत करो। लेकिन हिंमत से वो डटा रहा। अथवा तो बोलना बंद कर दो, ये बात भी तो आई। संतों ने जिस मार्ग को स्वर्ग कहा है, शुभ कहा है वो पराक्रम है, जो सुकरात में भी दिखता है। 'भूतानुकम्पा।' जीवमात्र के प्रति करुणा-दया; अनुकम्पा-करुणा। सत्य, प्रेम, करुणा की बात कोई नई नहीं मोरारिबापू की। वो तो मैंने पकड़ लिया, मेरे जीवन का सूत्र बना लिया ये ओर बात है लेकिन विनोबाजी ने सत्य, प्रेम, करुणा की बात की है। मैं बार-बार कहता हूं। आपने विनोबाजी की कोई किताब देखी हो तो वो अपने हाथ में सत्य, प्रेम, करुणा लिखते रहते। लेकिन मुझे 'मानस' के आधार पर ये तीन सूत्र मिले हैं। मैंने अपने तुलसी के तीन पत्ते उठाये हैं, बिल्वपत्र उठाये हैं- सत्य, प्रेम, करुणा। अपने आंगन का ये बिल्वपत्र है।

युवान भाई-बहन, सत्य अपने लिए रखना। लोग कहते हैं, सामनेवाला कहां सत्य बोलता है? सत्य अपने पास रखो। प्रेम दूसरों के लिए और करुणा सब के लिए। 'भूतानुकम्पा।' ये मारग है स्वर्ग का, ये मारग है परम तत्त्व का। 'प्रियवादितां च', प्रिय बोलना। सुकरात के वचन जरा कठोर भी है। थोड़ा उसको जोश भी है और ये सत्य के कारण ही हो सकता है। 'द्विजातिदेवतातिथिपूजनं च।' तीन की पूजा, तीन को आदर। द्विज-ब्राह्मण; केवल वर्णवाचक ब्राह्मण की बात नहीं है। ब्राह्मण कौन? बुद्ध को पूछना पड़ेगा, महावीर को पूछना पड़ेगा। जिसने ब्राह्मण की बिलग-बिलग परिभाषाएं की है। ब्राह्मण कौन? ये हमारे शास्त्र को भी पूछना पड़ेगा। जहां ब्राह्मणत्व है उसको जो आदर देता है ये स्वर्ग का मार्ग है। जिस ब्राह्मण को आप आदर दो, वो ब्राह्मण ही आपको न समझे तो फ़िर क्या करे! सुकरात को दंड देने में तीन प्रकार के लोगों ने काम किया। एक तो ये जो कलावाले लोग थे, राजकारणी लोग। दूसरा कवि लोग। कवि लोगों ने विरोध किया है! तीसरा अलंकारवादी लोग, विद्वद्‌लोग; ये तीन लोग, तीन समाज थे जिसने ऐसे एक पृथ्वी के फूल को विष देकर खतम कर दिया! कितना प्यारा फूल खिला था एथेन्स की बगियां में! जतन नहीं कर पाये! खुद चढ़ गया शुभ विचारों के लिए।

तो जिसमें ब्राह्मणत्व है, द्विजत्व है, जिसमें प्रज्ञा है, उसके प्रति आदर। 'देवतातिथि', देवताओं को जो आदर दे और अतिथि, आंगन आया अतिथि। सुकरात के एक शिष्य ने एक बार सोक्रेटिस को कहा, मालिक, हमारे बारे में जो तीन प्रकार के समाज जुल्म सिद्ध करने की कोशिश कर रहे हैं इनमें से एक आदमी आपके द्वार आना चाहता है। इरादा क्या है, खबर नहीं हैं। तो आने दे कि न

आने दे? सुकरात कहता है, मेरे घर पे आता है तो मेरा अतिथि है। अतिथि पूजन होना चाहिए। यह 'वाल्मीकि रामायण' का जो विचार है यहां तक पहुंचा है। ये मंत्र 'अयोध्याकांड' का है। 'अयोध्याकांड' एथेन्स पहुंचा है! 'पन्थानमाहु स्त्रिदिवस्य सन्त:।' स्वर्ग के यह रास्ते हैं, ऐसा संत लोग कहते हैं। तो वाल्मीकि के सूत्र भी सुकरात के जीवन में दिखते हैं। ऐसा एक विचारवान पुरुष जिसको केन्द्र में रखकर हम उसके बारे में वार्तालाप कर रहे हैं।

एक-दो सूत्र ओर हम जान लें सुकरात के। मौत सभी मानवीय आशीर्वादों में सब से बड़ी चीज़ है। इसका मतलब सुकरात मृत्यु को सब से बड़ा आशीर्वाद समझते थे। ये भारतीय दर्शन है। ओशो ने कभी कहा, मैं मृत्यु सिखाता हूं। मृत्यु को महोत्सव माना; मृत्यु को उत्सव माना। उसने तो जीवन में कर के दिखा दिया। मृत्यु बड़ा आशीर्वाद है। हम मरे ही न तो आप कल्पना तो करे, जगत की व्यवस्था क्या होगी? ये पूरी व्यवस्था बिगड़ जाती। मौत मानवीय आशीर्वादों में सब से बड़ा आशीर्वाद है।

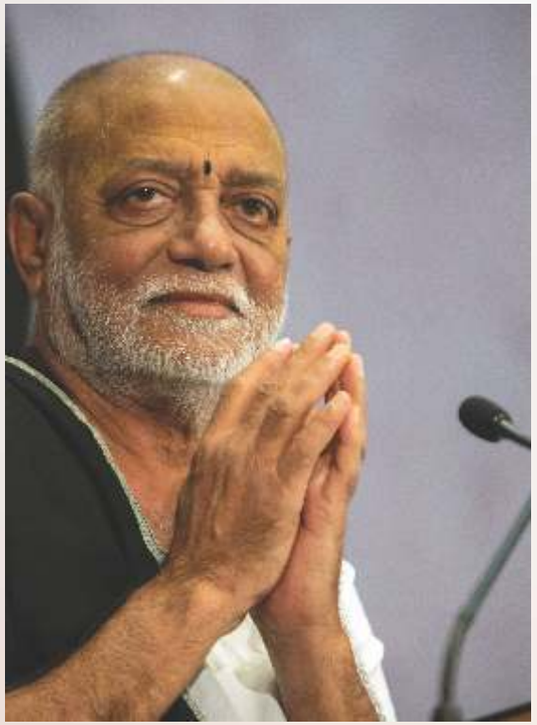

हमनें मृत्यु को केवल मृत्यु नहीं समझा, कपड़ें बदलने की एक प्रक्रिया मात्र समझी है। पुराने कपड़ें छोड़कर नये कपड़ें पहनने आवश्यक है। मृत्यु को इतनी सहजता से भारतीय दर्शन ने लिया। और सुकरात ने उसको मानवीय आशीर्वादों में से एक आशीर्वाद कहा।

तो ये सूत्र मुझे अच्छा लगा। एक ओर सूत्र हम समझें। गहरी इच्छाओं से ही अक्सर घातक नफ़रत प्रगट होती है। गहरी इच्छाओं से आदमी में घातक नफ़रत का जन्म होता है। बहुत ठीक है। अनंत ऐषणाएं आदमी के पास हिंसा कराती है। गहरी अपेक्षाएं, मैं ये प्राप्त कर लूं! फिर येन-केन प्रकार गहरी इच्छाएं पूरी करने के लिए आदमी क्रूर बन जाता है। एक-दूसरे मुल्कों को जीतने के लिए लाखों-लाखों लोगों को नहीं मार दिया गया? कितनों को भट्ठीओं में भूंज दिया गया! ये पशु भी नहीं करते ऐसा मानव ने किया है अपनी गहरी अपेक्षाओं के कारण! ठीक पकड़ रहा है सुकरात।

एक सूत्र और उठाये। सुकरात कहते हैं कि वो सब से अमीर व्यक्ति है जो प्रकृति की दौलत का कम से कम उपयोग करता है। आदमी ने पर्यावरण का काम किया। जितनी जरूर है इतने पानी का उपयोग करता है। प्रदूषित नहीं करता है वातावरण। प्रकृति ने तो उदार हाथ से दे दिया है हम सब को। लेकिन कम से कम जरूरत में जो अपना जीवन व्यतीत करता है वो अमीर है। अच्छा है। अकिंचन, असंग, अनिकेत फ़कीरों की ईष्या जितनी सम्राटों को होती है इतनी किसी को नहीं होती। क्योंकि इसको लगता है कि हमारे पास सब कुछ और ये आदमी सीधा-सादा फिर भी इतनी मौज क्यों कर रहा हैं? इतना आनंद क्यों कर रहा है? हम आनंद करेंगे और कई लोग आलोचना भी करेंगे! क्योंकि लोगों को तकलीफ़ ये है कि ये लोग इतनें खुश क्यों है? तकलीफ़ यहां है! ये जो मानवीय मन है। कथा उस पर काम करती है। तो जो अनिकेत है, असंग है, अकिंचन है, उसके प्रति हमारे मन में ऐसा होने लगता है क्योंकि ये प्रकृति की देन का कम से कम उपयोग करते हैं। अमीर तो वो है जो प्रकृति के तत्त्वों को कम से कम उपयोग करे।

सुकरात का आख़िरी विचार कल लाया था लेकिन रह गया। कल दो बात उसकी मुझे करनी थी। मैंने

कहा कि बुद्धिमान वो है सुकरात कहता है, जो बच्चे की तरह रहता है। दूसरी बात, ईमानदार वो है जो बच्चे की तरह जीता है। बच्चें को कोई प्रपंच नहीं है। ईमानदार को प्रपंच करने की जरूरत क्या है? जिसको ज्यादा नेटवर्क बनाना पड़े तो समझना कि बेईमान है पूरा! बेईमानी छोड़ दो तो सब से बड़ी बंदगी है। याद रखो, बेईमानी से कुछ मिल भी जाय तो पैसों के रूप में मिलेगा, परमेश्वर के रूप में कुछ नहीं मिलेगा। सीधे-सादे सूत्र हैं जिस पर इन फ़कीरों ने अपना बलिदान दिया। कोई सरमद चढ़ा गया। कोई जिसस को लटका दिया गया। सुकरात को जहर पिलाया। महम्मदसाहब को हिज़रत करनी पड़ी। मूल में देखो तो इन्सान के द्वेष से अतिरिक्त कुछ भी नहीं। करबला के मैदान में इस बहत्तर आदमी को बिना पानी मारे इनमें छोटे-छोटे बच्चे थे! अब क्रूरता की तो चरमसीमा थी! और कोई इतना बड़ा कारण नहीं था। प्रत्येक धर्म ने लडाईयां की है उसके मूल में छोटे-छोटे वो कारण है! बिना सोचे, बिना समझे बहत्तर लोगों को करबला के मैदान में क्रूरता से रहेंस डाला! पानी-पानी हुआ! और मैं हिन्दु-मुस्लिम की तकरीर में साफ़ कहता हूं, मैं मौलाना को कहता हूं, आप इतिहास तपासो कि जो करबला में मरे हैं उसमें हिन्दु कोई मारने नहीं गया। तुम्हारे खुद ने ही मारा! हिन्दु के क्षेत्र में जितने मरे उसमें कोई मुसलमान मारने नहीं आया था! क्यों लड़ते हो? क्यों मरते हो? बेईमानी आदमी को बड़ा बना देती है। तो सुकरात जैसी एक प्यारी शख्सियस एक धरती का अलंकार है। पूर्णाहुति के दिन मुझे ओर कुछ कहना ही नहीं। आज एडवान्स में बोलूं, मैं एथेन्स को थेन्क्स करूंगा। एथेन्स, हम यहां आये, यहां के एक बुद्धपुरुष के विचारों का हमनें स्वाध्याय किया। उसके बारे में कोई उपदेश नहीं था। हम मिलकर के चर्चा कर रहे थे। थेन्क्स एथेन्स, थेन्क्स।

तो बाप! मूल्यवान सूत्र, जैसे माँ का दूध हम पी लेते हैं ऐसे सरल सूत्र सुकरात के जो कभी वेद से भी छू लेता है, कभी 'वाल्मीकि रामायण' से दिखता है, कभी महावीर की वाणी में नज़र आता है। ज्ञान-विराग-विचार के रूप में 'मानस' के साथ जुड़ जाता है। ऐसा 'मानस-सुकरात' की चर्चा हम इन दिनों में कर रहे थे। सुकरात को बराबर समझ लोगे तो रोज आप अपने भीतर को कहोगे, सुखरात। सुखमयी रात, सुखरात। सुकरात हमारे जीवन में सुखरात पैदा कर सकता है। सुखरात मानी एक विश्राम।

श्री अयोध्या में राम प्रभु का प्रागट्य हुआ। इसी तरह सुमित्रा ने दो पुत्रों को जन्म दिया। कैकेयी ने एक पुत्र को जन्म दिया। अयोध्या में परमानंद और उत्सव चल रहा है। एक महिना बीत गया। उसके बाद नामकरण संस्कार के लिए गुरु वशिष्ठजी आये। कौशल्यानंदन का नाम राम रखा। कैकेयी के पुत्र का नाम भरत रखा। सुमित्रा के दो पुत्र, एक का नाम शत्रुघ्न और दूसरे का लक्ष्मण रखा। यहां राम-भरत-शत्रुघ्न और लक्ष्मण के जो नाम है वो नामकरण विधि तो है ही लेकिन गुरु मंत्र देता है। यहां वशिष्ठजी ने कौशल्या के पुत्र का राम नाम रखकर विश्व को राममंत्र दिया। और राममंत्र के साथ तीन विधाएं बताई कि राममंत्र जपो तो भरत बनकर जपना। दूसरा नाम भरत। भरत मानी दूसरों का पोषण करना, शोषण मत करना। राम जपनेवाला दूसरे को भरे, शोषण न करे। तीसरा पुत्र शत्रुघ्न। राममंत्र के साथ सुमित्रा के पुत्र का नाम शत्रुघ्न रखा मतलब राम जपनेवाला अपने मन में किसी के प्रति शत्रुता न रखे। अंदर से शत्रुता का नाश कर दे। दुनिया भले शत्रुता रखे लेकिन भजनानंदी को किसी के साथ शत्रुता न रखनी ये शत्रुघ्न नाम की विधा है। और लक्ष्मण ये सकल जगत आधार है। ये वशिष्ठजी ने मानो मंत्र की विधा बताई विश्व को।

जैसे माँ का दूध हम पी लेते हैं ऐसे सरल सूत्र सुकरात के जो कभी वेद से भी छू लेता है, कभी 'वाल्मीकि रामायण' में दिखता है, कभी महावीर की वाणी में नज़र आता है। ज्ञान-विराग-विचार के रूप में 'मानस' के साथ जुड़ जाता है। ऐसा 'मानस-सुकरात' की चर्चा हम इन दिनों में कर रहे थे। सुकरात को बराबर समझ लोगे तो रोज आप अपने भीतर को कहोगे, सुखरात। सुखमयी रात, सुखरात। सुकरात हमारे जीवन में सुखरात पैदा कर सकता है। सुखरात मानी एक विश्राम।

रामनाम जपो तो सब का आधार बनकर जपना। पूरी दुनिया की फसल तो मेघ बरसे तब हो सकती है लेकिन हमारे आंगन में जितने गमले हैं इतनी सिंचाई तो हम कर सकते हैं। हम से जितना हो दूसरों का आधार हो। हम दूसरों के प्रति कटुता न रखे। और हम किसी का शोषण न करे, पोषण करे। ये है राममंत्र के साथ जुड़ी अनिवार्य तीन विधाएं।

चारों भाई को यज्ञोपवित संस्कार हुआ। वशिष्ठजी के आश्रम में गुरुगृह विद्या प्राप्त करने के लिए गए हैं। प्रभु के श्वास में वेद हो उसको क्या पढ़ना? लेकिन विश्व को बताया कि किसी आचार्य के पास जाकर विद्या अर्जित करनी चाहिए। अल्पकाल में विद्या प्राप्त कर ली है। लौट आये। उपनिषद पढ़े हैं। उपनिषद का अर्थ जीवन में उतारने लगे। चारों भाई बड़े होते चले।

एक दिन भगवान विश्वामित्रजी पधारे हैं। उसने राम की मांग की यज्ञरक्षा के लिए। राजा को कहा कि राजन्, तुम्हें चार पुत्र यज्ञ की कृपा से मिले हैं तो यज्ञ की रक्षा के लिए चार में से दो देना आपका कर्तव्य है। दो पुत्र मुझे दे दो। राम-लक्ष्मण विश्वामित्र को दिये है। तीनों की यात्रा हुई। रास्ते में ताडका आयी। ताडका को निर्वाण देकर प्रभु ने अपने अवतारकार्य का श्रीगणेश किया। पहले स्त्री को मारी और ताडका के पुत्र को बाद में निर्वाण दिया। इसका मतलब ये हुआ कि दुर्गुण जहां से पैदा होते हैं इसकी भूमिका को पहले नष्ट करना चाहिए। एक दिन पूरा हुआ। दूसरे दिन राम ने कहा कि आप यज्ञ का आरंभ करो। जिस हेतु हमें ले आये हैं। विश्वामित्र ने कहा कि आपको पाना था, आप मिल गए, अब यज्ञ का क्या अर्थ? बोले, नहीं, यज्ञ का आरंभ करो। यज्ञ का आरंभ हुआ। मारीच आया। बिना फने का बाण मारकर सत जोजन दूर फेंक दिया रामजी ने और सुबाहु को अग्निबाण से निर्वाण दे दिया।

कुछ दिन रहे और विश्वामित्र के कहने पर राम-लक्ष्मण जनकपुर की यात्रा करते हैं। रास्ते में गौतमऋषि का आश्रम आया। शून्य आश्रम को देखकर राम ने जिज्ञासा की है, बाबा, ये किसका आश्रम है? और विश्वामित्रजी ने वहां अहल्या की कथा सुनाई। राघव, गौतमऋषि के श्राप से ये अहल्या पथ्थरदेह बन चुकी है। सब इसको छोड़कर निकल गए। भूल हुई है। कौन भूल नहीं करता? लेकिन राघव, आपको पतित पावन होना है। आपकी चरणरज चाहती है। आप उसमें फिर से चैतन्य भर दो। और विश्वामित्रजी के कहने पर भगवान राम की चरणरज अहल्या को छूती है और अहल्या प्रगट होती है। मैं इतना ही कहकर आगे बढ़ जाउं कि मेरे युवान भाई-बहनों, भूल सब से होती है। लेकिन जिस भूल के कारण हम पीड़ित है उसके बाद इतना निर्णय करे कि हम ये भूल बार-बार न करे। और जिस चंचलता ने भूल करवा दी उस चंचलता को चट्टान की तरह स्थिर कर के बैठ जाये। तो अयोध्या जाना नहीं पड़ेगा, अयोध्या के राम को तुम्हारे पास आना पड़ेगा। आज राघव धन्य करने के लिए आये हैं।

अहल्या का उद्धार हुआ। समाज में विचारक बहुत होते हैं। लेकिन केवल विचारक होते हैं। उद्धारक होते हैं लेकिन स्वीकारक नहीं होते। राम तीनों काम करते हैं। राम विचारक भी है, उद्धारक भी है, स्वीकारक भी है। पतितों का उद्धारक भी है और जिसका उद्धार किया हो उसको समाज में फिर स्वीकार हो इसलिए राम स्वीकारक भी है। इसलिए कृष्णावतार में कृष्ण ने भी यही काम किया। इतनी स्त्रियां जो बंदी बन चुकी थी। कृष्ण जैसा विचारक कौन? 'कृष्णं वन्दे जगद्गुरुं।' और कृष्ण उद्धारक है। और कृष्ण इस महिलाओं का उद्धार कर के स्वीकारक भी बन गये। तो राम ने ये काम किया। पतितपावन बिरुद प्राप्त हुआ है। अहल्या का उद्धार कर के राम आगे बढ़े। गंगा आई। जिज्ञासा की, ये कौन नदी? विश्वामित्रजी ने राम के सामने गंगा अवतरण की कथा सुनाई। प्रभुने स्नान किया। तीर्थ के देवताओं को दान दिया। और राम जनकपुर पहुंचे। सचिव सह आचार्यगणों को ले कर विश्वामित्र का सन्मान करने के लिए जनकजी आए। महाराज और विश्वामित्र मिले। राम-लक्ष्मण आये। जनकजी राम को देखकर स्तंभित हो गये! पूछने लगे कि महाराज, ये कौन है? ये तो विदेहनगर है। देह को मिथ्या माननेवाली ये नगरी है। लेकिन राम के रूप की ओर जनकजी आकर्षित हो जाते हैं। जनक बहुत प्रसन्न हुए। सब को 'सुंदर सदन' में ठहराया। 'मानस' में स्पष्ट लिखा है, उसके बाद 'करि भोजनु बिश्रामु।' सब ने दोपहर का भोजन किया। मैं भी आप को छोडूं। आप भोजन करे। भाग्य में हो तो विश्राम करे।

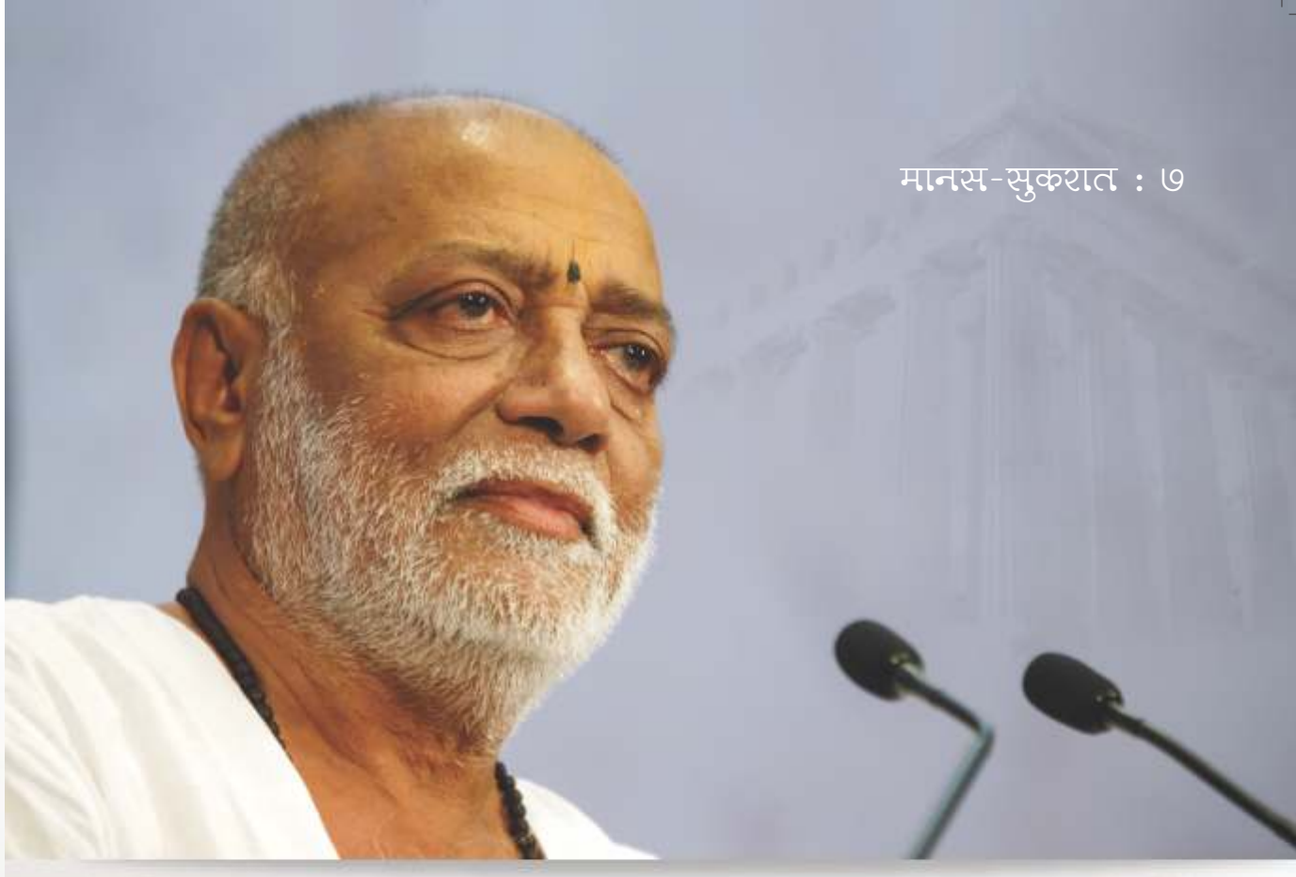

महापुरुषों के जीवन की कथाएं दर्दीली होती है

'मानस-सुकरात', जो कथा का केन्द्रबिंदु है उसमें प्रवेश करें इससे पहले कल जो संध्या प्रस्तुत की गई उसके बारे में मेरी प्रसन्नता व्यक्त करूं। एक सुंदर-सात्त्विक वाचिकम् जो यहां प्रस्तुत हुआ उसके लिए मैं प्रसन्नता व्यक्त करता हूं।

तो बाप! सुकरात का एक सूत्र, बंधन में है वो पामर है और मुक्त है वह परम है। ये 'पामर' और 'परम' शब्द मैंने लिए है। वो अपनी बोली में बोले हैं। कितना प्यारा सूत्र है! ये कोई नई बात नहीं है। 'पाशबद्धस्तथा जीवः पाशमुक्तः सदाशिवः।' उपनिषदकार कहते हैं, जो बंधन में है वह 'जीव' है और जो मुक्त है वो 'सदाशिव' है। स्कन्दोपनिषद का ये मंत्र है। ये मूल उपनिषद है और शाखा एथेन्स में ऊतरी। सुकरात के मुख से अस्तित्व ने बुलवाया। तुलसी भी लिखते हैं, 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।' दूसरे को बंधन में रखना हिंसा है और दूसरे को अपने निज में जीने देना ये अहिंसा है। ये ही बात उपनिषदकारों ने बताई है। नया कहां से लाया जाये? कोई भी दादुर-मेढ़क पहली बारिश होते ही निकल पड़ते हैं इसका मतलब है, दादुर-मेढ़क कुछ महिने मिट्टी में उसकी चेतना दबी रहती है। वर्षा होते ही चेतना पुनः सचेत हो जाती है। वैसे यह विचार, सूत्र, सद्गुरु ऐसी विशिष्ट चेतनाओं में दबी रहती है। ईश्वर अनुग्रह की वर्षा होती है और उसी समय ये सूत्र प्रकट होने लगते हैं।

हम परम की खोज करते हैं, लेकिन अपने अगल-बगल में ही उसे खोजा जा सकता है। संग से पता चले कि ये आदमी स्वतंत्र रहता है। अपने मन से भी, बुद्धि से भी, चित्त से और अहंकार से भी स्वतंत्र है, ऐसी व्यक्ति किसी भी रूप में परमतत्त्व है। हमारी और आपकी दशा ये है कि मन में आबद्ध है, बुद्धि में आबद्ध है, चित्त जनम-जनम का संस्कार लिए हुए

हमारे साथ खड़ा है और अहंकार तो बंधन है ही। अब एक प्रश्न उठता है। सुकरात की यही तो रीत थी। कोई आकर उसे कुछ पूछे तो सुकरात उनको सामने प्रश्न पूछते हैं। एक युवक ने आकर कहा, 'सुकरात, आप बताईए, सद्गुरु किसे कहते हैं?' सुकरात ने तुरंत प्रश्न पूछा, तेरे मन में सद्गुरु की व्याख्या क्या है? यही उसकी पद्धति थी। मेरे युवान भाई-बहन, ये छोटी-छोटी बातें सुकरात से सीखने जैसी है। मैं खुद सीख रहा हूं।

एक युवक सुकरात से प्रश्न पूछने आता है, तो सुकरात ने कहा, उससे पहले तीन प्रश्न मैं तुझे पूछुं। पहला प्रश्न, 'जो बात तू मेरे से करने आया है, वह सत्य है?' युवक ने कहा, 'बात सच्ची है।' दूसरा प्रश्न, 'ये अच्छी है कि हल्की है?' युवक ने कहा, 'अच्छी नहीं है।' तीसरा प्रश्न, 'ये मेरे लिए उपयोगी है?' युवक ने कहा, 'नहीं।' तो सुकरात ने कहा, तुम जाओ। तुम लाख सच्ची बात करते हो पर हल्की है और मेरे लिए उपयोगी नहीं है तो सुकरात के आंगन में उसका स्वीकार नहीं है। युवान भाई-बहन, हम भी ये सीखें। बात अच्छी नहीं है तो हमारे काम की नहीं है। तो ये पद्धति बहुत अच्छी है। सुकरात की पद्धति यही रही कि हेतु कथन निकाला जाए। पहली सीख हम ये ही ले सुकरात से कि बात सच्ची हो पर अच्छी ना हो तो सुने ही नहीं। सुनना बड़ा विज्ञान है। भागवतजी में श्रवण को प्रथम भक्ति माना है। जो लोग कहते हैं, 'कथा सुनते रहते हो, सुनने से क्या?' बहुत काम सुनने से होता है। गुरु नानक तो कहते हैं, 'सुनिये दुःख पाप का नाश।' आप सुनो और आपके पाप मिटेंगे। सुनने से प्रसन्नता इसीलिए आती है कि हमारे पाप विसर्जित हो रहे हैं।

सुकरात कहते हैं, ऐसे लोगों का संग करना, जो तुम्हारे दर्द को समझे। केवल तुम्हारी वाह-वाह करे और आह को ना पहचाने उसका क्या संग करना? मुनव्वर राणा का शे'र है -

जिसको अहसास गम नहीं होगा।
वो संग होगा, सनम नहीं होगा।

सनम तो वो है जो दूसरे की पीड़ा को जानता है। तुलसीदासजी इसी संग को भक्ति कहते हैं -

प्रथम भगति संतन कर संगा।
दूसरी रति मम कथा प्रसंगा।।

तो सज्जन लोगों का संग भक्ति है। और 'मानस' कहता है, नरक में निवास बेहतर है दुर्जन के संग में रहने से। ब्रह्मा ने ये संसार बनाया तो तुलसीदासजी ने प्रारंभ में ब्रह्मा की वंदना की।

बंदउँ बिधि पद रेनु भव सागर जेहिं कीन्ह जहँ।
संत सुधा ससि धेनु प्रगटे खल बिष बारुनी।।

तुलसीदासजी कहते हैं, जिसने भवसागर बनाया वो ब्रह्मा को मैं प्रणाम करता हूं। किसी ने पूछा, इस भवसागर से क्या निकला? तुलसी ने कहा, 'साधु सुधा', साधुरूपी अमृत निकला। उसका संग किया जाए। संसार में से जो विष वारुणी निकला उसका त्याग कीजिए।

एक युवक ने पूछा है, 'बापू, मैं चाहते हुए भी अच्छा नहीं बन पाता। कथा के माहोल में है तब तो विचार ठीक रहते हैं।' हमारी मानसिकता बिगड़ती है उसका एक कारण संग है। जिसका संग अच्छा न लगे उसकी ओर उदासीन हो जाओ। जहां से शुभ विचार मिले, ले लो। वेद भी कहता है, 'आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोः।' मैं बार-बार कहता हूं, जीवन की खिड़की खुल्ली रखो।

राशिद किसे सुनाउं गली में तेरी गज़ल,
उनके मकां का कोई दरीचा खुला न था।

कबीर कहते हैं, मुझे गला फ़ाड़कर गाना है। सूफ़ी कहते हैं, मुझे नाचकर दुनिया को संदेश देना है। लेकिन किसको सुनाउं? मैं जहां जाता हूं लोगों ने अपनी खिडकियां बंद रखी है! जहां जाने से तुम्हारी बुद्धि बिगड़े वो अच्छा कार्यक्रम हो तो भी तुम्हारे लिए कुसंग है। अच्छा कार्यक्रम शायद न हो और आपकी चेतना को प्रेरणा मिल जाए तो संत्संग है।

सुकरात कहते हैं, अति व्यस्त जीवन की दरिद्रता से सावधान रहो। तुम इतने व्यस्त न रहो कि अपनी आत्मा के बारे में भी सोच न पाओ। वेद से लेकर आज के मनीषियों ने पैसा कमाना बुरा होता है ऐसा कहा ही नहीं है। ये हम लोगों ने बीच में डाला है! पुनित महाराज भी कहते थे, माया छोड़ो और आचरण में लाओ। हमारे वेदों ने कहा, तुम खूब कमाओ लेकिन एक शर्त भी रख दी कि तुम

दो हाथों से कमाओ, लेकिन चार हाथों से बांटो। कमाते समय तुम नर रहो और बांटते समय तुम नारायण हो जाओ। 'भगवद्गीता' में अर्जुन कहता है, 'हे प्रभु! तू ऐसा परमात्मा है, न तेरा अंत है, न मध्य है, न आरंभ है।' नारायण जन्मता नहीं, नारायण बनना पड़ता है। लोगों को अपनी कमाई का दसवां हिस्सा तो निकालना ही चाहिए। कोई तेजस्वी छात्र यदि बिना फ़ीस के कारण अपनी उच्च शिक्षा चुक जाता है, उसकी पढ़ाई के लिए देना चाहिए। मानव मंदिर जीर्ण हो जाए और उसका जीर्णोद्धार आपकी कमाई से न हो तो ओर मंदिर किस काम के? मेरे श्रोता मेरी ये बात मानकर निकालते भी है। जिसके पास अक्ल हो वो अपनी अक्ल का दसवां हिस्सा समाज को मार्गदर्शन देने में निकाले।

आप अपनी भाषा संभालिए। अपने घर में हिन्दी, गुजराती, पंजाबी जो आपकी भाषा हो वह बोलो। व्यस्त रहकर जरूर पैसे कमाए, लेकिन दसवां हिस्सा तो निकाले ही। एक शिक्षक को हफ्ते में एक बार कोई गरीब छात्र को पढ़ाना चाहिए। वकील हो उसे गरीब का केस लड़ना चाहिए। डोक्टर हो तो उसे दस मरीज़ों में से एक गरीब का इलाज मुफ़्त में करना चाहिए। ये दशांश हम सब करने लगे तो बहुत बड़ा धर्म माना जाएगा। जब समय आपके पास आएगा तो शरीर भी ऐसा नहीं रहेगा कि हम कुछ कर पाए।

सुकरात का एक जटिल और क्लिष्ट सूत्र मैं लिखकर लाया हूं, 'तुलनात्मक और भावनात्मक मूल्यों पर आधारित नैतिक प्रणाली भ्रम है।' सुकरात बहुत वास्तविक है। उसको सामने चाहिए सब। तुलनात्मक मूल्यों या भावनात्मक मूल्यों पर नैतिकता का निर्णय नहीं करना चाहिए। ऐसे मूल्यों का हम ठीक से तभी अभ्यास कर सकते हैं जब हमारे में अध्यात्म का प्रवेश हो।

आज ही एक युवक की जिज्ञासा है, 'बापू, आपकी दृष्टि में विज्ञान और अध्यात्म में फ़र्क क्या है?' विज्ञान सदैव प्रयोग करके कबूल करेगा और अध्यात्म को प्रयोग नहीं करना पड़ता, वह स्वयंसिद्ध है। अध्यात्म के मेरे तो तीन ही सूत्र है- सत्य, प्रेम, करुणा। तो नैतिकता का भावनात्मक अभ्यास भ्रम की सृष्टि कर दे, वास्तविकता बहुत जरूरी है। सूत्र के रूप में तो अच्छा लगता है कि जगत मिथ्या है। सुकरात की रुचि उसी में है कि दर्शन वास्तविक हो। सुकरात के इन सूत्रों से हमारा जीवन अधिक प्यारा बन जाता है। तुलसी की कई पंक्तियों से मैल बैठ जाता है इस महापुरुष का। तब फ़िर मुझे कहना पड़ता है, 'सभी सयाने एक मत।' 'रामचरित मानस' में तो मुझे 'सुकरात' शब्द मिलनेवाला नहीं था इसलिए मैंने 'सुकरित' शब्द लिया। 'सुकृत' शब्द से शुरू होनेवाली चौपाईयां चार से पांच ही है। कभी-कभी लगता है, सुकरात सुकरित का पर्याय है।

सुकरात कहते हैं, जो पवित्र है, उसे देवता कुबूल करते हैं। कभी-कभी कबीर के करीब पड़ता है ये आदमी। लेकिन देवता ने कुबूल कर लिया इसका मतलब ये नहीं कि तुम अपनेआप को पवित्र मान लो। 'कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक।' इन सूत्र को समझाना भी कठिन है। कोई बुद्धपुरुष आपको सामने से बुलाये, तो समझना उसने आपमें कुछ पवित्रता देखी है, लेकिन आप बलात् किसी बुद्धपुरुष के पास चले जाओ तो इससे आपकी पवित्रता सिद्ध नहीं होती। लोग कहते हैं, मैं इस महापुरुष से बहुत क्लोझ हूं, लेकिन मैं हंमेशा कहता हूं, महापुरुष के पास कई क्लोझअप होते हैं। वो आरपार दृष्टि रखता है। हरीन्द्रभाई दवे ने मुझसे पूछा, 'बापू, कई लोग ऐसा कहते हैं कि मैं बापू के बहुत क्लोझ हूं, तो आपका क्या जवाब है?' मेंने कहा, मुझे ऐसा लगता है जो बुद्ध है, महावीर है, तुलसी है, महाप्रभुजी है, जो सही में महापुरुष है उसका क्लोझ कोई नहीं होता और वे किसी से दूर कभी नहीं होते। ये सूत्र समझ में आ जाए तो सुकरातवाला सूत्र भी समझ में आ जाएगा।

मेरे पास कोई कथा लेने आता है, तो भी कहता हूं, किसी को बीच में रखकर मत आना, वर्ना कथा नहीं मिलेगी। कबीर, सुकरात हमें अपने ही लगते हैं। सुकरात मुझे इतना अच्छा क्यों लगता है, पता नहीं? नागर लोग यहां से आये हैं वो कहते हैं इसलिए? मूल तो हम भी नागर से आए हैं। नरसिंह मेहता मुझे क्यों प्रिय है? जूनागढ मुझे क्यों प्रिय है? मूल तो नागर है। हमारा मूल पुरुष

जीवणदास महेता मूल में नागर थे। वो ध्यानस्वामीबापा के पास पहुंच गए, मुझे शादी नहीं करनी है, दीक्षा लेनी है। ध्यानस्वामी बापा ने दीक्षा तो दी लेकिन कहा, मेरे से दीक्षा ली है तो अब मैं कहता हूं, तू शादी कर। जीवणदास मेहता ने ब्याह किया और उसी की परंपरा में हम सब आए। जीवणदास बापू की समाधि आज भी तलगाजरडा में है। तो ये नाता भी हो सुकरात से। नरसिंह मेहता गज़ब का नागर! मैंने तो कहा था, तलाजा में नागरों को कुछ करना चाहिए और नरसिंह महेता के चौरे पर भी कुछ करो। मेरी व्यासपीठ तो आपके साथ होगी ही।

तो बुद्धपुरुष अपने नेटवर्क में सबको रखता है। अपने अहंकार से कोई नेटवर्क से बाहर चला जाए ये ओर बात है। तो जो पवित्र होता है, उसका स्वीकार देवता करता है, लेकिन देवता उदार होते हैं। हम जबरदस्ती घूस गए और उसने मुस्कुराकर आदर दे दिया तो उसका मतलब ये नहीं कि हम पवित्र सिद्ध हो गए।

अब जो समय है उसमें थोड़ा कथा का क्रम ले लूं। ये सुकरात भी मेरे लिए रामकथा है। विष्णु से भी ज्यादा वैष्णव की कथा महत्त्व की है। भगवान कृष्ण कहते हैं, मुझसे प्यार करे उससे ज्यादा कोई मेरे वैष्णवों से प्यार करे तो वो मुझे पसंद होगा। सुकरात अपने ढंग का वैष्णव है। कथा के क्रम में प्रवेश करूं इससे पहले हरिनाम का संकीर्तन -

जय राधा माधव, जय कुंजबिहारी।

चैतन्य महाप्रभुजी का एक वाक्य है कि हरिनाम के बिना सब विद्या विधवा है। कोई भी आदमी के पास कोई भी विद्या हो, लेकिन परमात्मा का नाम न ले तो सभी विद्या विधवा है। जिन-जिन महापुरुषों ने अस्तित्व की व्यवस्था के रूप में अवतरण किया है उनका जीवन पढ़ने योग्य है। स्वामी रामतीर्थ ने जब वेदांत की दीक्षा ली और उसकी पत्नी और बच्चे उसको युनिवर्सिटी में मिलने जाते हैं। महापुरुषों के जीवन की कथाएं दर्दीली होती है। और बिना दर्द कोई जागता कहां है?

गौरांग महाप्रभु ने सार निकाला, 'हरिबोल।' बाप! मैं भी यही कहूं, बातें तो बहुत होती रहेगी, लेकिन सार है हरिनाम। मैंने एक थियोसोफिस्ट से कहानी सुनी थी। न्यूयोर्क में चार छात्र पढ़ रहे थे। रविवार के दिन चारों शोपिंग करके आए थे। चारों छात्र शोपिंग करके बिल्डिंग में प्रवेश कर रहे थे तो एक सूचनाबोर्ड था कि 'आज पूरा दिन पावर कट है। जिसे अपने फ्लेट में जाना है उसे सीढ़ियां चढ़कर जाना होगा।' चारों युवक ने एक युक्ति निकाली कि सीढ़ियां चढ़ते-चढ़ते हम एक-दूसरों को कहानी सुनाएं। एक छात्र ने एक कहानी सुनाई और वो दस मजले चढ़ गए। दूसरे ने कहानी सुनाई और दस मजले ओर चढ़ गए। तीसरे ने लंबी कहानी सुनाई और करीब-करीब वे चालीसवें मजले पर पहुंचनेवाले थे। केवल तीन-चार सीढ़ी बाकी थी अपने फ्लेट के दरवाजे से। चौथे को कहा कि तेरी बारी बाकी है। चौथे ने कहा, अब तो केवल तीन ही सीढ़ी बाकी है। दोस्तों ने कहा, सबको कहानी कहनी ही पड़ेगी। अब तेरी बारी। हां-ना कहते-कहते केवल एक ही सीढ़ी बाकी थी। चौथे ने कहा, मेरी कहानी बहुत छोटी-सी है, फ्लेट की चाबी हम कार में भूल गए हैं! कहीं ऐसा नहीं कि हम बहुत तरक्की कर ले और हरिनाम की चाबी खो जाए!

सुखावसाने इदमेव सारं दुःखावसाने इदमेव ज्ञेयम्।
देहावसाने इदमेव जाप्यं गोविंद दामोदर माधवेति।।

जिन्हों ने प्रेम किया, भजन किया वो हस्तियां बिलग है। राज कौशिक का एक शे'र है -

कभी रोती कभी हंसती कभी लगती शराबी-सी।
महोब्बत करनेवालों की निगाहें ओर होती है।

सुकरात के लिए भी लोग एक शब्द बोलते थे, 'अंगूर आंखें'; उसकी आंख मानो अंगूर भरी हो, शराब हो बश करनेवाली। मैं युवानों को कहता हूं, तुम्हें नौकरी करनी है, पढ़ाई करनी है, तरक्की करनी है, लेकिन पांच मिनट तो निकालो गोविंद को याद करने के लिए। सभी यात्रा श्रम हो जाएगी। विश्राम कब होगा? इसीलिए हरिनाम।

श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेश गोपाल गोवर्धननाथ विष्णो।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविंद दामोदर माधवेति।।

कल तक की कथा हमने जनकपुर में राम रुके थे वहां तक रखी थी। सायंकाल को राम-लक्ष्मण गुरु की

आज्ञा लेकर जनकपुर के दर्शन करने के लिए जाते हैं। इरादा था कि जनकपुर के लोग के नेत्र सफल किए जाए। जनकपुर में एक महिला है, सुनयना। जिसका अर्थ है जिसके नेत्र सुंदर हो। राम को इच्छा थी नगरदर्शन से सबको सुनयना बना दो। गली-गली में एक ही चर्चा कि ये दोनों राजकुमार कौन है? पुरुषगण परिचय नहीं कर पाए। राम के समवयस्क राम का हाथ पकड़कर परिचय देते हैं जनकपुर का। मिथिलानी महिलाएं मर्यादा से अटारी में से झूककर राम के दर्शन में डूब जाती है। मेरी व्यासपीठ व्याख्या करती है कि जनकपुर के पुरुष ज्ञान है। ज्ञान देखता तो है पर 'हम किसी से प्रभावित हो गए', ऐसा ज्ञानीलोग बताने नहीं देते। इसीलिए राम के प्रति आकर्षण तो बहुत हुआ पर कुछ बोलते नहीं। बच्चे निखालस है, वो राम को छू भी लेते हैं। जिसस ने कहा था, जो बच्चे की तरह होगा वो ही मेरे राज में प्रवेश पाएगा। कल का ही सूत्र था सुकरात का कि 'इमानदार आदमी बच्चों की तरह होता है।' माताएं भक्ति स्वरूपा मानी जाती है। धन्य है मिथिलानी महिलाएं जो अटारी में से राम के दर्शन करती हैं। तुलसी कहते हैं -

हियँ हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि बृंद।

भक्ति ज्यादा परिचय प्राप्त कर लेती है। एक मिथिलानी स्त्री दूसरों को कहने लगी, ये जो आगे चल रहा है वह कौशल्या का पुत्र है। और जो दूसरा तेजस्वी और गोरा है वह सुमित्रा का पुत्र लक्ष्मण है। दोनों अवधपति के पुत्र है। विश्वामित्र के साथ आए हैं। हमारी जानकी का धनुषयज्ञ देखने आए हैं। सब ये सुनकर खुश हो गए। राम तो मर्यादा पुरुषोत्तम है। तीन कदमों से दूरी पर देखते भी नहीं थे। मिथिलानी स्त्रियां अपनी अटारी से फूल राम के सिर पर गिराती है। और फूल गिरने से राम उपर देखते हैं और स्त्रियां दर्शन कर लेती है। एक संत ने कहा, फूल इसलिए गिराये कि तुम्हारे चरण बहुत सुकोमल है। हमारे जनकपुरी की भूमि कठोर महसूस होती हो तो हम फूल बिखेर रहे हैं, आप फूल पर चलो। एक सखी तो बहुत शरारती थी। उसने संकेत किया कि आप बहुत सुंदर है माना। पूरी नगरी आपकी दीवानी हो चुकी है। लेकिन आप से भी सुंदर हमारी किशोरीजी जानकी है। उसे देखना है तो ये फूल जिस पुष्पवाटिका के है, वहां आना; दर्शन करा देंगे। एक संत कहते हैं, सुमन का अर्थ सुंदर मन भी होता है। सखियां अपनी सुंदर मानसिकता राम को दिखा रही है। 'मय्येव मन आधत्स्व।' तेरा मन मुझे दे, तेरी बुद्धि मुझे दे। ऐसा 'भगवद्गीता' में लिखा है।

त्रिकमदासजी बापू मुझे सुनाते थे कि मिथिला में नई-नई ब्याहकर एक स्त्री आयी थी। बड़ी शालीन थी और रामप्रेमी थी। वो अपनी अटारी से राम के दर्शन कर रही थी तो अपना घूंघट जरा हटा लिया रामदर्शन के लिए। सास मंदिर में दर्शन करने गई थी और जिसका दर्शन करना है वह साक्षात् नंगे पैर मिथिला में घूम रहे हैं। उसकी बहु भाग्यवान है कि प्रभुदर्शन कर रही है। इतने में सास आ गई और चिल्लाकर कहा, अरे बहु! रास्ते में इतने बड़े बुज़ुर्ग खड़े हैं और राजकुमारों को घूंघट खोलकर के मर्यादा तोड़कर देखती हो? हमने कभी मर्यादा का त्याग नहीं किया और तू कल आई हो और ये सब? दो बार सास ने कहा लेकिन बहु दर्शन में डूब गई इसलिए अनसुनी हो गई। सास क्रोध से आगबबुला हो गई तब बहु ने कहा, माँ, मुझे माफ़ करो। माँ, ये बुज़ुर्ग लोग तो राम को देखने में व्यस्त है। भाग तो तेरे फूट गए हैं कि तू मुझे देखने में डूब गई हो! हरि को देख ले।

भगवान धनुष्ययज्ञ की भूमि देखकर सायंकाल को लौटते हैं। प्रभु को थोड़ा डर लगा कि संध्याकाल का समय हो गया है! गुरु नाराज़ तो नहीं होंगे? गुरु को प्रणाम किए। संध्यापूजा की। रात का भोजन हुआ। कुछ वेदांत की चर्चा हुई और विश्वामित्रजी सोने गए तो राम-लक्ष्मणजी गुरु के चरण दबाते हैं। गुरु ने आज्ञा दी तब रामजी बिश्राम कर रहे हैं और लक्ष्मणजी राम की सेवा करते हैं। पहली रात्रि जनकपुरी में पूरी हुई।

दूसरे दिन सुबह दोनों भाई गुरु की आज्ञा प्राप्त करके गुरुपूजा के लिए पुष्पवाटिका में पुष्प चुनने गए। बड़ा रसमय प्रसंग है। जहां महिलाओं को ही प्रवेश था वहां राम-लक्ष्मण आए। मालिगण भी महिलाएं थी। राम का स्वागत किया और कहा, आपके लिए फूल हम चुनकर देते हैं। राम ने कहा, पूजा के फूल लेने हैं, हम खुद ले लेंगे।

दोनों भाईयों ने फूल चुने हैं। और गोस्वामीजी कहते हैं, यहां से रामकथा में किशोरीजी का प्रवेश हुआ है। जानकीजी अपनी अष्टसखियों को लेकर सुनयना माँ की आज्ञा पाकर सरोवर के तट पर जो गौरी का मंदिर है, वहां आई है। सरोवर में सखियों के साथ जानकी ने स्नान किया और मंदिर में गौरी की पूजा की और सुभग बरदान प्राप्त किया। उनमें से एक सखी बाग देखने के लिए पीछे रह गई और वो राम के दर्शन कर लेती है और सोचती है, ये वो राजकुमार है जो नाम-रूप को मिथ्या माननेवाली जनकपुरी को अपने रूप में डूबा दिया। भाव में डूबी सखी दौड़कर मंदिर में आई और सीताजी को कहती है, गौरीपूजा बाद में भी होगी। पहले राजकुमारों के दर्शन करने चलो। सीताजी ने कहा, मैं आऊं तो सही, पर दोनों राजकुमार कैसे दिखते हैं? सखी कहती है -

स्याम गौर किमि कहौं बखानी।

एक श्याम और एक गौर है। मैं कैसे बखानुं? जानकीजी ने कहा, तू देखकर आई है ना? सखी ने कहा, जीभ बोल सकती है, पर जीभ को आंख नहीं है ना? और आंख ने देखा है मगर आंख को जीभ नहीं। यानी परमतत्त्व का रूप ऐसा है जो इन्द्रियों से ग्राह्य नहीं है। ये सखी गुरु है। गुरु मैं उसको कहता हूं, जिसने राम के दर्शन किए हैं वो ही हमें करा सकता है। जो बाग में जाएगा। 'बाग' याने संत की सभा। फिर सरोवर में स्नान करे, गौरी की पूजा करे तो उसको कोई ना कोई गुरु मिल जाएगा। जानकी अपनी सखी को कहती है, तू आगे चल। सब हम जैसों के लिए मार्गदर्शन है। जो हमें ईश्वर का अनुभव करवाए ऐसे गुरु को हमें आगे रखना चाहिए। सखी को अग्र करते सीताजी जाती है तब सीताजी के पैर के नूपुर, हाथ के कंगन और कटिभाग की करधनी आवाज़ करती है। और गोस्वामीजी इस रव को लिख लेते हैं-

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि।

सीता के आभूषण की आवाज़ राम ने सुनी। मेरी व्यासपीठ का मानना है, कंगन याने समर्पण। लाख सोना-चांदी आप पहनो लेकिन कभी किसीको कुछ दिया नहीं तो भूषण भुजंग है। समर्पण की भी एक आवाज़ होती है जो ईश्वर को भी आपकी और देखने के लिए मजबूर कर देती है। तुम मौन रहो, समर्पण को बोलने दो। कटिभाग की करधनी याने कटिभाग को संयम माना गया है। आदमी के संयम की एक ध्वनि होती है, जो हरि सुन लेता है। पैर के नूपुर याने सदाचरण। समर्पण, संयम और सदाचरण ऐसे आभूषण है कि परमात्मा इसको देखने के लिए बेताब होता है। इसीलिए रामजी लक्ष्मण को कहते हैं, कौन आया?

तमारां अहीं आज पगलां थवानां,
चमनमां बधांने खबर थई गई छे.
झुकावी छे गरदन बधी डाळीओए,
फूलोनीये नीची नजर थई गई छे.

रामजी ने जानकीजी को देख लिया और लक्ष्मणजी को कहते हैं, 'तात जनकतनया यह सोई।' लक्ष्मण, ये जनक की कन्या जानकी है, जिसके कारण धनुष्ययज्ञ हो रहा है। हम रघुवंशी है, हमारा मन कभी कुपंथ पर नहीं जाता लेकिन आज जानकी को देखकर मेरा सहज पवित्र मन उसकी ओर खींचा जा रहा है। राम वो ही है जो हर स्थिति को जैसा है वैसा बोल दे। 'जासु बिलोकि अलौकिक सोभा।' राम कहते हैं, सीता की शोभा अलौकिक है और मेरा मन पवित्र है। पवित्र मन को अलौकिक शोभा में डूबना ही चाहिए। राम की आरपारता यहां पे दिखती है। आज युगों बीत गये फ़िर भी मंदिरों में राम की आरती ऊतरती है। लक्ष्मणजी ने सोचा कि रामजी का पवित्र मन जानकीजी में आकृष्ट होता जा रहा है तो जानकीजी भी उनकी ओर खिंची चले इसके लिए कुछ करूं। इसीलिए राम को लतामंडप में ले जाकर लक्ष्मणजी राम का शृंगार कर रहे हैं। इतने में लतामंडप में से दोनों भाई बाहर आए। अपनी आंखों से राम की छबि को हृदय में बिठाकर सयानी जानकी ने अपने आंखों के किवाड़ बंद कर दिए। वो सयानी सखी जानकी को कहती है, तुम गौरी का ध्यान कर रही हो? जानकी आंखें खोलती है और राम जानकी के पवित्र रूप को अंकित कर लेते हैं। इस तरह दोनों का प्रथम मिलन भक्ति और भगवान का मिलन हुआ फ़िर सखी जानकी को कहती है कि 'अब हम चलें। कल फिर आयेंगे।' गुरु को साथ में रखो तो वो हमारे भाव की स्विच अपने पास रखकर कंट्रोल करेगा।

भवानी के मंदिर में जानकीजी आई और गौरी स्तुति की। मैं मेरे देश की बहन-बेटियों को प्रार्थना करूं कि 'रामचरित मानस' में जो गौरी स्तुति है वो गाओ। फल क्या मिले मैं प्रलोभन नहीं दे सकता लेकिन भाव से गौरी की स्तुति करोगे तो जीवनसाथी अच्छा मिलेगा। विनोबाजी को पूछा गया कि इस देश में कन्याओं को ही व्रत करना पड़ता है, लड़कों को क्यों नहीं? विनोबाजी कहते हैं, लड़कों को अच्छी कन्या ही मिलनेवाली है लेकिन कन्या को अच्छा वर नहीं मिलनेवाला है इसलिए वो व्रत करती है। बाग तो उस समय भी थे और लड़का-लड़की बाग में जाते थे लेकिन मक्सद भिन्न था। लड़कियां जाती थी गौरीपूजा के लिए और लड़के जाते थे गुरु की पूजा के फूल चुनने के लिए। जानकीजी जगदंबा की स्तुति करती है और मेरे गोस्वामीजी लिखते हैं -

जय जय गिरिबरराज किसोरी ।
जय महेस मुख चंद चकोरी ।।

हे हिमालयपुत्री, तुम्हारी जय हो। हे महेशमुखचंदचकोरी, तेरी जय हो। गणेश और कार्तिकेय की जननी, तुम्हारी जय हो। न तेरा आदि, न तेरा मध्य, न तेरा अंत है। तेरे अमित प्रभाव को वेद भी नहीं जान सकता। जानकीजी ने स्तुति की और तुलसी लिखते हैं, 'मूर्ति मुस्कुराई।' मूर्ति बोली और भवानी अपनी गले की माला जानकी पर डाल देती है। मूर्ति बोले, मुस्कुराए। ये बुद्धिगम्य नहीं है, लेकिन जानकी स्तुति करे और मूर्ति बोले उसमें मुझे कोई आश्चर्य नहीं है। हमारे से नहीं बोलती है, इसलिए सिद्धांत मत बना लो की मूर्ति बोले ही ना। अपवाद होते हैं। हमारे साथ तो पडोशी भी नहीं बोलते! घर में पति-पत्नी दो हो वो भी एक-दूसरे से नहीं बोलते तो मूर्ति क्या बोले? कथा सुनकर दिनभर की घटनाओं का समाधान रात्रि में सोने से पहले करके मुस्कुराकर सोना। मूर्ति बोल सकती है। उसकी भाषा बिलग हो सकती है। वो संकेतो में बोले। माँ पार्वती बोली और तुलसी ने लिख दिया -

सुनु सिय सत्य असीस हमारी।
पूजिहि मनकामना तुम्हारी।।
नारद बचन सदा सुचि साचा।
सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा।।

'जानकी, नारद ने जो बचन कहे थे वो सत्य होंगे। तेरे मन में जो सांवरा बस गया वो राघव तुम्हें मिलेगा।' माँ पार्वती का आशीर्वाद सुनकर जानकी का हर्ष समाया नहीं जाता और गोस्वामीजी कहते हैं, मंगल संकेत होने लगे। जानकी का वाम अंग फिरकने लगा। जानकी सखियों के संग अपने निज घर आई और माँ सुनैना के सामने दिल खोलकर कहा, माँ, हमे थोड़ी देर हुई। वो राजकुमार बाग में फूल लेने आए थे हम उसे देखने के लिए ठहरे थे। और यहां राघव-लखन पुष्प लेकर विश्वामित्र के पास आए। राम ने गुरु की पूजा की और 'सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही।' तुलसी को किसी ने पूछा, बाग में तो फल भी थे, फूल भी थे। राम विश्वामित्र को केवल फूल ही क्यों देते हैं? राम को भी यह प्रश्न पूछा गया तो राम ने कहा, शिष्य तो गुरु को फूल ही देता है। फल तो गुरु ही देता है। 'जो दायक फल चारी।' दोनों भाईयों ने आशीर्वाद प्राप्त किए। दूसरे दिन धनुषयज्ञ की कथा आती है। उसकी चर्चा हम कल करेंगे। आज की कथा को यहां विराम देता हूं।

चैतन्य महाप्रभुजी का एक वाक्य है कि हरिनाम के बिना सब विद्या विधवा है। कोई भी आदमी के पास कोई भी विद्या हो, लेकिन परमात्मा का नाम न ले तो सभी विद्या विधवा है। जिन-जिन महापुरुषों ने अस्तित्व की व्यवस्था के रूप में अवतरण किया है उनका जीवन पढ़ने योग्य है। स्वामी रामतीर्थ ने जब वेदांत की दीक्षा ली और उसकी पत्नी और बच्चे उसको युनिवर्सिटी में मिलने जाते हैं। महापुरुषों के जीवन की कथाएं दर्दीली होती है। और बिना दर्द कोई जागता कहां है?

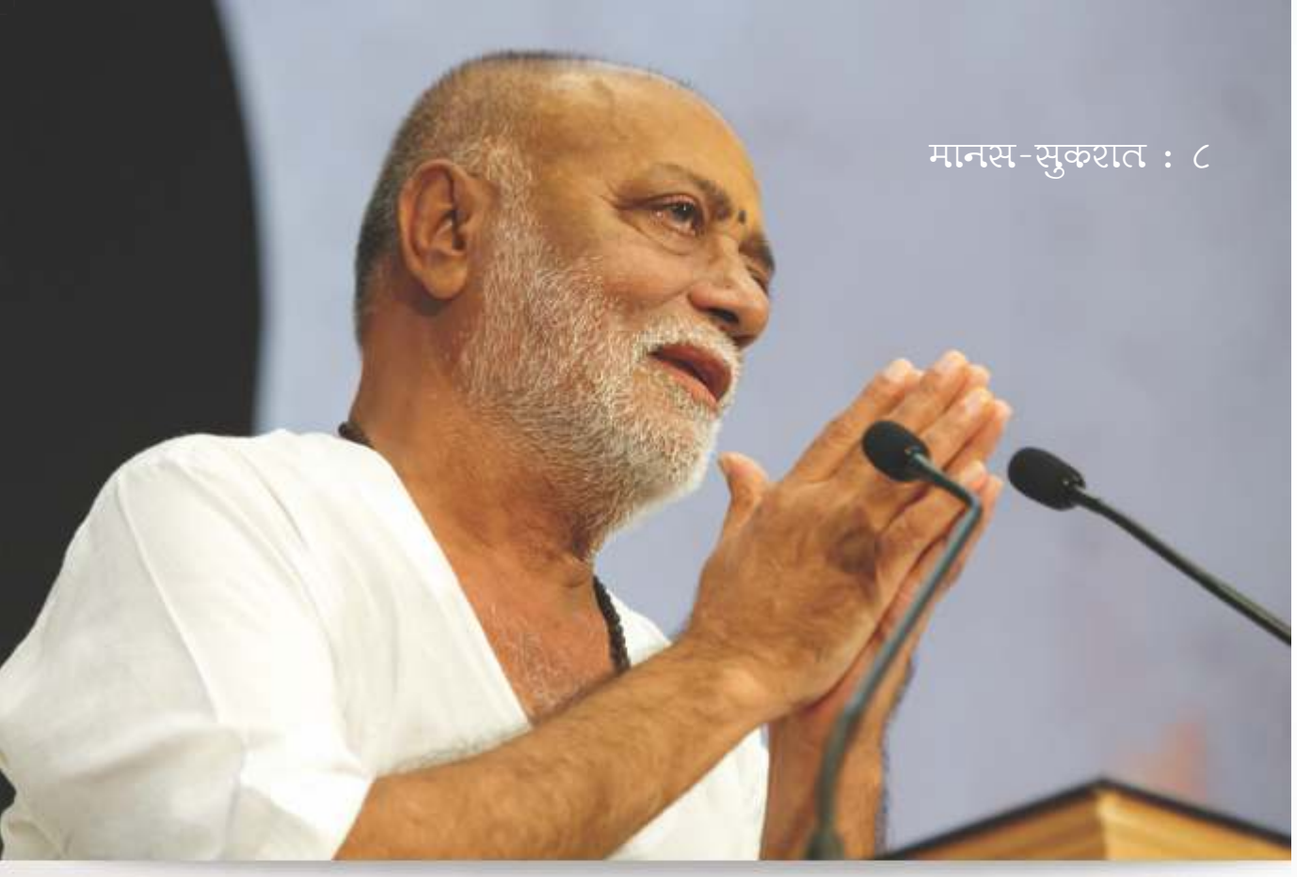

जब आदमी खुद को सुनाता है तब ही खुदा कबूल करता है

'मानस-सुकरात', जिसकी कुछ सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा हम संवाद के रूप में कर रहे हैं। क्योंकि रामकथा संवाद की कथा है। आप जानते हैं कि रामकथा में चार संवाद है। शिव पार्वती से संवाद कर रहे हैं रामकथा को केन्द्र में रखकर। परमविवेकी याज्ञवल्क्य भरद्वाज ऋषि के साथ रामकथा को केन्द्र में रखते हुए संवाद कर रहे हैं। बाबा कागभुशुंडि खगपति गरुड के साथ संवाद कर रहे हैं और कलि पावनावतार पूज्यपाद गोस्वामीजी रामकथा को केन्द्र में रखते हुए अपने मन के साथ और संतगण के साथ संवाद कर रहे हैं। मेरा भी आपके साथ संवाद हो रहा है। रामकथा में कोई दुर्वाद, अपवाद नहीं है। रामकथा की दुर्वाद और अपवादवाली कथा को तुलसी ने सविनय हटा दिया है और संवाद को ही स्थापित किया है। विश्व को बहुत जरूरत है संवाद की।

सुकरात को जब सजा घोषित की गई कि उसे ज़हर मिलाकर मृत्युदंड दिया जाए, तब एथेन्सवासियों को सुकरात ने जो अंतिम संदेश दिए हैं, बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसमें मूल बात यह कहता है कि मेरे एथेन्सवासी भाई-बहन, मैंने मेरे जीवन में आपके साथ संवाद किया है। मेरा कोई इरादा नहीं था कि किसी से मैं विवाद करूं। यद्यपि कुछ अलंकारवादियों ने, कुछ राजकारणी लोगों ने, कुछ कवियों ने मेरे इस संवाद को विवाद का रूप दे दिया। ये उनकी जिम्मेवारी है। लेकिन मैंने पूरे जीवनभर संवाद किया है। आखिर में पूरे समाज को संदेश देकर जाता है तब चार बस्तु बताता हैं, जो प्लेटो ने संगृहित किया है।

युवान भाई-बहन, बड़ी मूल्यवान बात है बाप! मैं आपके साथ हूं। कोई उपदेशक नहीं हूं। मैं आपको आदेश देनेवालों में भी नहीं हूं, क्योंकि मुझे मेरे देश के उपनिषद के बारे में पता है कि आदेश तो वेद या उपनिषद दे सकते हैं। तो

बाप! हम सबको सीखने जैसी बात है जब सुकरात आख़िर में बोला है कि मेरे परिवार में मेरे बच्चों के पास संपत्ति आए और मैंने जिंदगीभर जो बातें कही वो मेरे बच्चों में न आए तो मेरी तरह मेरे बच्चों को भी दंड देना। ये है सुकरात। ये है बुद्धपुरुष होने के योग्य। ये है परिवार का मुरब्बी होने के योग्य। गुजराती में कहते हैं -

खरीदो, खरीदो ओ दुनियाना लोको,
अमारे अमारां भुवन वेचवां छे।

जैसे कोई फेरिया निकले, सब्जीवाला निकले बेचने। और वो तो बेचते हैं। सुकरात ने बेचा नहीं, बांटा। क्या फ़कीरी होगी! मुझे बहुत निकट पड़ता है सुकरात। जो आदमी सुबह से निकल जाता है दिल की झोली भरकर। कल मुझे सुमनभाई बता रहे थे कि बापू, गली में सुकरात निकलता वहां के अलंकारवादी लोग ने युवानो पर प्रतिबंध लाद दिया कि इस गली में मत जाना, जहां से सुकरात गुज़रे। किसीको पता न लगे वैसे युवान आ जाते थे! या फिर युवान जहां थे वहां सुकरात जाता था। जिसके पास ज्ञान की संपदा हो वह बांटे बिना नहीं रहता। नदी का प्रवाह तभी आगे बढ़ सकता है जब बीच में आए हुए गड्ढे को भर न दे। आपके पास संपदा है, समझ है, बुद्धि है, किसी भी प्रकार की क्षमता है तो उसको प्रवाह बनाना और जो अभावग्रस्त है उसको भरते जाना। नरसिंह मेहता ने भी ऐसी ही बात कही है। वो तो जब भी केदार गाते थे, कृष्ण साक्षात्कार हो जाता था! नरसिंह मेहता का जीवन प्रमाणित माना जाना चाहिए, क्योंकि ज्यादा सालें नहीं बीती। छः सौ साल हुए है। तो ये एक करुण मांग भी एक बाप की कि नरसिंह जैफ़ हो गया था और शारीरिक पीड़ा भी थी। ऐसा कभी मत सोचना कि बुद्धपुरुषों को रोग नहीं होता। दुनिया में जितने बुद्धपुरुष हुए हैं, सबको रोग थे। ठाकुर रामकृष्ण को केन्सर हुआ। रमण को भी तकलीफ़ हुई। बैलगाडे से बैल छूट जाता है तब गाडा लड़खड़ा जाता है, वैसे किसी भी बुद्धपुरुष देह से आत्मा को बिलग कर देता है तो उसकी काया लड़खड़ा जाती है। ये बात भी सच है कि जब करुणा फूट जाए तो वो किसी की बीमारी ले भी लेता है। इसीलिए समर्पित शिष्य गुरु को अपनी बीमारी की बात नहीं कहते। फ़िर भी मना तो नहीं है। आश्रित कह सकता है। यह एक आध्यात्मिक विज्ञान है, एक चैतसिक विज्ञान है।

विमला ताई एक विद्वान महिला और उसको कान का बहुत बड़ा रोग हुआ था। विनोबाजी और कृष्णमूर्ति के विचारों का प्रभाव उन पर रहा। विमला ताई में मूल में 'रामायण' के संस्कार थे। कृष्णमूर्ति ने उसके जिस कान में दर्द था उस पर केवल हाथ रखा और विमला ताई कहती है, उसके कानो में बहुत राहत हुई थी। अष्टावक्र जैसा बुद्धपुरुष विकलांग था, जिसके शरीर में अष्ट वक्र थे। लेकिन आध्यात्मिक जगत में व्यवस्था तो है। किसीका चिंतन काम कर सकता है। दूर-दूर बैठे हुए के मन में विचार आए तो उसकी चेतना काम कर सकती है। ये चमत्कार नहीं है। ऐसी घटना आपके जीवन में कभी बन भी जाए तो इसका प्रचार मत करना। दुनिया तो फिर गतानुगति करेगी। तुम्हारी संपदा तुम रखो। ये प्रचार की वस्तु नहीं है, ये प्रतीति की बस्तु है।

नरसिंह का देह लड़खड़ाया होगा। ये बहुत करुण प्रसंग है। लेकिन आखिरी बार उसके जीवन में कृष्णदर्शन होते हैं, उसके बाद महेता को संसार छोड़ के जाना है और कृष्ण बड़ी करुणा से कहता है, मेहता! आज आप मेरे से कुछ मांग लो। नरसिंह बोले, नहीं भगवान! तूने देने में क्या कमी रखी है? कृष्ण कहते हैं, मेरी इच्छा है, तू कुछ मांग। और क्या मेहता ने मांगा था? गोविंद! तू सुहृद है। 'गीता' में कृष्ण को सुहृद कहा है।

गतिर्भर्ता प्रभु साक्षी निवासः शरणं सुहृत्।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययं।।

मेहता ने मांगा था कि मेरा वंश न रहे। क्योंकि मेरे वंश में आया कोई यदि कृष्णभक्ति चुक जाएगा तो वैष्णवी भक्ति जगत में बदनाम हो जाएगी। वंश न रहे जगत में कोई बात नहीं, कृष्णभजन रहना चाहिए।

नारायणनुं नाम ज लेतां वारे तेने तजीए।

सुकरात भी इसलिए दंड की बात करते हैं। क्यों आज सुकरात प्रासंगिक लगते हैं? 'शिवसूत्र' में लिखा है, 'दानं ज्ञानं दक्षिणा।' सबसे बड़ी दक्षिणा तो ज्ञान है। तो सुकरात अपनी आख़िरी बातों में कहता है कि मेरे विरोधियों के प्रति मेरे मन में कोई कटुता नहीं है। मेरे लिए जिसने दंड घोषित किया उसके प्रति भी दुर्भाव नहीं है। यद्यपि मेरे प्रति इन्होंने दुर्भाव रखा है। आज भी ये बचन समकालीन है।

सुकरात कहते हैं, मेरे एथेन्सवासियों, पूरे जीवन की मेरी बातों में आपने ध्यान दिया हो कि न दिया हो ये आपकी स्वतंत्रता है, पर मैं जा रहा हूं तब मेरी बात पर ध्यान दीजिएगा। 'खास बात यह है कि उत्तम मानवीय गुण विकसित किए जाने चाहिए।' अब सीधा प्रश्न आता है, उत्तम मानवीय गुण कौन? 'उत्तम मानवीय गुण है समझदारी।' बिलकुल सरल-तरल बात की है सुकरात ने। मेरे युवान भाई-बहन को कहूं, मेरी समझ में समझदारी ये है कि आपके बच्चो में भी ये तीन गुण आए तो उसके सामने आत्मा से झूक जाना। हमारे यहां 'न च लिङ्गम्, न च वयम्।' उम्र और लिंग नहीं मानी जाती। यहां समझदारी की पूजा होती है। जिस व्यक्ति में बोलने का, चलने का, बैठने का, खाने-पीने का, एक-दूसरे से व्यवहार करने का विवेक हो वो समझदार। 'रामचरित मानस' में तो बोलने की चार विधा बताई है। 'भगति प्रताप तेज बल ग्यानी।' जिस बोली में भक्तिभाव हो, प्रताप हो। वेद में भी वाणीरूपी गाय के चार आंचल बताये हैं। कामदुर्गा गाय ये कथा है और उसके चार आंचल मुझे कहना है तो भगति, प्रताप, तेज, बल ज्ञानी। जिसकी बानी में तेज हो, जो हमारे भ्रम का निवारण करता है। और जिसकी बोली में आचरण का बल हो, चरित्र का बल हो।

दूसरा लक्षण, मर्यादा। प्रत्येक व्यक्ति में परमात्मा ने स्वाभाविक मर्यादा प्रदान की है।

'हुं करुं, हुं करुं' ए ज अज्ञानता,
शकटनो भार ज्यम श्वान ताणे.

जीवन की किसी भी परिस्थिति में हम संताप से मुक्त रह सकते हैं। उसके लिए सत्संग करो। धृतराष्ट्र ने 'महाभारत' में विदुर से पूछा, 'मेरा बल क्षीण होता जा रहा है। मैं तेरे विचारों से सहमत हूं। लेकिन दुर्योधन को देखता हूं तो मेरे विचार बदल जाते हैं।' ये बड़ा प्रसिद्ध वाक्य है 'महाभारत' का। तब 'महाभारत' में व्यास की कलम से, विदुर की जीभ से बुलवाया गया, हे राजन्! संताप करने से चार वस्तु क्षीण होती है। संताप से आदमी का रूप क्षीण हो जाता है। वैदर्भी दमयंती बहुत सुंदर है। उसका नल त्याग कर देता है और वो संतापग्रस्त हुई तो 'महाभारत'कार कहते हैं, उसका रूप धीरेधीरे क्षीण हो गया। आख्यानकारों ने लिखा है, 'वैदर्भी वनमां वलवले।' रूप मानवीय देह की संपदा है, उसको संभालो। रूप शाप नहीं है, अस्तित्व के आशीर्वाद है। कृष्ण कितना सुंदर है!

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।

गोविंद कितने सुंदर है! और मेरा राम भी कुछ कम नहीं है। स्वामी रामतीर्थ लाहोर में निकले तो वहां की नृत्यांगना लोगों को आकर्षित करने के लिए सजधज के खड़ी है। रामतीर्थ वहीं से गुज़रते हैं और उसका ध्यान गया अटारी पर। स्वामीजी टकटकी लगाए इस रूप को देखते हैं। एक संत की आंख को नृत्यांगना सह नहीं पाई। लोग भी इकठ्ठे होने लगे कि संन्यासी भ्रष्ट हो गया। नृत्यांगना ने स्वामीजी को कहा, हे स्वामीजी-

हुश्न को जो बदनजर देखते हैं।
वो पहले अपना सर कलम देखते हैं।

तब संन्यासी ने हास्य करते हुए कहा, गलत अर्थ कर दिया तूने!

न तेरे रूप से गरज, न मुझे तुझसे गरज।
मैं तो मेरे मुकव्ववर की कलम देख रहा हूं।

मैं तो मेरे कृष्ण की पींछी देखता हूं वो कितना खूबसूरत होगा! तू तो एक चित्र है तो तेरा चित्रकार कैसा होगा! रूप का आंखों से शिकार भी मत करो।

मैं युवान भाई-बहनों को कहता हूं कि आप अच्छे कपड़ें पहनो, गहनें पहनो, अच्छा भोजन करो। तुलसी कहते हैं -

तुम्हहि निबेदित भोजन करहि।
प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहि।।

कृष्ण तो छप्पन भोग खाता है। जो भोजन आप अपने इष्टदेव को भोग मैं धर सको उसे अच्छा भोजन कहते हैं। आज-कल लोग आंगन में तुलसी रखते हैं और फ्रीज़ में अंडे रखते हैं! आज कितना फ्रूट मिलता है! कितना अच्छा दूध मिलता है! वो खाओ ना। पुराने काल की बाते छोड़ो ना। ग्रंथों में भी मृगया की, आमिष की बातें आती है। लेकिन अब क्या है? आदमी पूरा सुंदर हो तो भी अंश है। पूरा सुंदर तो वो है।

श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन, हरण-भव-भय दारुणं
नवकंज-लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पद-कंजारुणं ।।

कंदर्प अगणित अमित छबि, नव नील नीरद सुंदरं ।
पट-पीत मानहु, तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ।।

राम का शरीर मानो कमल का वन है। जनकराज राम का रूप देखकर के आकर्षित नहीं हो गए? वेदांती आदमी जनक ने राम का रूप जनकपुर में देखा तो कहते हैं -

इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा।
बरबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा।।
सहज बिराग रूप मन मोरा।
थकित होत जिमि चंद चकोरा।।

राजकुमार को देखकर मेरे दिल में इतना प्यार क्यों उमड़ रहा है? मेरा मन निरंतर ब्रह्म में लगा रहता था वो इस रूप में क्यों लग गया? मेरे मन में सहज वैराग्य है, लेकिन इस राम को देखकर जैसे चांद को देखकर चकोर की टकटकी लग जाए वैसे मेरी आंखे इस रूप में डूब गई। कल मैं जानकी की भी चर्चा कर रहा था।

जासु बिलोकि अलौकि सोभा।
सहज पुनीत मोर मनु छोभा।।

जिसके मन मलिन है वही आंखें बंद रखते हैं। इसी रूप मधुर है। इसीलिए श्रीमन् महाप्रभुजी कहते हैं-

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।

गुरु की चरणरज से नेत्र विवेकी हो गए हो तो रूप मधुर लगता है, वर्ना मुश्किल।

तीसरा लक्षण, संताप से दूर रहना। विदुर कहता है, संताप से रूप कम होने लगता है।

संतापाद् भ्रश्यते रूपम्। संतापाद् भ्रश्यते बलम्।

धृतराष्ट्र! राजन्, आप कहते हैं, आपका शरीर क्षीण होता है, तो संताप के कारण बल क्षीण होता है। संताप से आदमी कमजोर हो जाता है। 'संतापाद् भ्रश्यते ज्ञानं।' विदुरनीति कहती है, संताप के कारण आदमी का ज्ञान क्षीण होने लगता है। जो सही में ज्ञानी है, वो कभी शोक नहीं करते। संताप के कारण आदमी की आयु कम होने लगती है अथवा तो जिंदगी से आदमी उब जाता है। संताप के कारण कई मनोरोग और शारीरिक रोग प्रकट होते हैं। बड़ा मनोवैज्ञानिक श्लोक है ये। भरत भजनानंदी पुरुष है, पर भरत को कोई संताप नहीं है। लेकिन उसको एक ही संताप है कि मेरे कारण सीता-राम वन में दु:खी है। इसीलिए गोस्वामीजी ने इसकी असर उसके शरीर पर दिखाई है 'मानस' में।

देह दिन्हुँ दिन दूबरि होई।
घटई तेजु बलु मुख छबि सोई।।

संताप के कारण नंदिग्राम में भरत का शरीर कृश हो रहा है।

'रामायण' का संदर्भ आ गया तो एक बात ओर कहूं। एक बार प्रभु ने चित्रकूट से जब पूरी अयोध्या को बिदा दी। पादुका लेकर भरतजी लौट रहे हैं। सबकी आंखें डबडबा गई है। माताएं रो रही है। भरत बहुत पीड़ित है। 'प्रभु करि कृपा पांवरी दिन्ही।' गोस्वामीजी लिखते हैं, 'संपुट भरत सनेह रतन के।' पादुका इसीलिए दी थी कि 'जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के।' प्रजा के प्राण की रक्षा के लिए भगवान ने भरत को पादुका दी। सबसे आखिर में रामजी शत्रुघ्न को मिले। शत्रुघ्न तो मौन पात्र है 'मानस' का, सबसे छोटा है। प्रभु के चरण पकड़े हैं भरत ने। आजानभुज राघव ने उठाकर सीने से लगाया। अपने आंसू से भरत के सिर को अभिषिक्त कर दिया। प्रभु के थरथराते हुए लबों को देखकर कम बोलनेवाले शत्रुघ्न कहते हैं, 'ठाकुर! आप मुझे कुछ कहना चाहते हैं?' राम ने कहा, 'शत्रुघ्न, मैंने भरत को पादुका दी इसमें तू ये वाक्य याद रखना, अयोध्या के लोगों के प्राणों की रक्षा के लिए दो चौकीदार मैंने दिए हैं। ये पादुका प्रजा के प्राण की रक्षा कर पाएगी। भरत के प्राण की भी रक्षा नहीं कर पाएगी। ये मेरे बश की बात नहीं कि भरत जैसा प्रेमी मेरी चिंता में कब प्राण छोड़ दे!' शत्रुघ्न ने कहा, 'महाराज! जिस प्राण की रक्षा आप न कर सको तो कौन कर सकता है?' राम ने कहा, 'शत्रुघ्न! ये दायित्व मैं तुझे सौंपता हूं। यदि चौदह साल के बाद मैं आऊं और भरत के प्राण की रक्षा न हुई तो जिम्मेवार तू माना जाएगा।' प्रभु यहां थोड़े कठोर दिखे। प्रेममारग बहुत कठिन है साहब! प्रेम अखबारों में नहीं छपता, एतबारों में छपता है। शत्रुघ्न ने कहा, 'मैं कैसे भरतजी के प्राण की रक्षा करूं?' रामजी कहते हैं, 'मुझे भविष्य दिखता है कि अयोध्या जाने के बाद भरत निरंतर रोता रहेगा। ऐसे समय में तू रोना मत। जो भी रोए अयोध्या में उसके सामने तेरे आंसू पी जाना और इस तरह भरत को तू संभाल पाएगा।' शत्रुघ्न ने ही भरत के प्राणों की रक्षा की। तो संताप आदमी के बल को, रूप को, ज्ञान को, क्षीण करता है।

यहां सुकरात अपने आखिरी समय में जो चार सूत्र कहता है कि मानवीय नैतिकता के स्तंभ की पहली जिम्मेदारी है समझ। दूसरी है मर्यादा। और तीसरी है संताप से दूर रहना। और ये तब होगा जब जितना हो सके आप सत्संग में जाओ। सत्संग करने से ही संताप कम होगा। हम और आप 'मानस' के सत्संग में है तो गम पीड़ा नहीं दे रहा है। कथा के सूत्र को हम और आप संबल के रूप में याद रखेंगे तो संताप से दूर रहने की कोई न कोई कुंजी हमारे पास रहेगी। जब तुम्हारे बस की कोई बात न हो तो नियति पर छोड़ देना। गांधारी ने स्वयं डांटा कृष्ण को महाविनाश के बाद कि हे कृष्ण! तू ये युद्ध नहीं रोक सकता था? मैं एक माँ हूं। और आप जानते हैं, गांधारी शाप भी दे देती है, 'मेरे सामने इतनों का नाश हुआ है, तेरे सामने तेरे यदुकुल का नाश होगा!' और कृष्ण नतमस्तक इस शाप को स्वीकार करते हैं। लेकिन शाप देने के बाद गांधारी रो पड़ी और कृष्ण को कहती है, मेरे शाप झूठे हो जाए। मैं बोल पड़ी। गांधारी बोली, 'तू चाहता तो ये महाविनाश नहीं रोक सकता था?' कृष्ण ने कहा, 'माँ, नियति को बदलना बड़ा मुश्किल है। और तू जो बोली है वो होकर रहेगा। मैं भी मेरे कुल का नाश देखूंगा।' नियति नहीं छोड़ती। कठिन काल बीतेगा साधु के पास जाने से और केवल हरिनाम से। साधु के पास जाने की भी जरूरत नहीं है, स्मृति हो जाए बस है। अहमद फराज़साहब का एक शे'र लाया हूं मैं।

हमारे दूर रहने का एक सबब है फराज़।
सुना है रोज मिलनेवालों को वो याद नहीं करते।

कहे प्रभु को, हमे कृष्ण नहीं चाहिए, कृष्ण का स्मरण चाहिए। हमें राम नहीं चाहिए, रामनाम चाहिए। खुदा तो अमूर्त है, निराकार है। खुदा का नाम चाहिए। इसीलिए फराज़ कहते हैं, हम दूर स्मृति में रहते हैं। स्मृति की संपदा में सातत्य ज्यादा होता है। आप समीप बैठे हो और कोई दूसरा आए तो आप विवेक से पीछे चले जाओगे। स्मृति में किसी की मजाल नहीं कि दूर कर सके। स्मृति हमारी निजी संपदा है। 'श्रीमद् भागवतजी' में नंद कहते हैं उद्धवजी को, उद्धव, हमारे पास कुछ नहीं बचा है, 'इति संस्मृत्य संस्मृत्य।' केवल कृष्ण स्मृति हमारी संपदा है। उसका मुस्कुराना, उसका भूख लगे तब कहना, माँ, मुझे खाना दो। उसको रस्सी से माँ ने बांधा था तब कितने दिनों तक माँ से कहता था कि रस्सी बांधी थी वहां मुझे दर्द होता है। दो ही स्मृति काम आएगी बच्चों। एक साधुस्मृति, दूसरी हरिनाम की स्मृति। हम संसारी जीव है, इसीलिए खरे समय पर स्मृतिभंग होता है। संताप स्मृति को क्षीण कर देता है।

सुकरात कहते हैं, दूसरा, उत्तम मानवीय गुण विकसित किये जाने चाहिए। पहला समझदारी, दूसरा निष्पक्षता। निष्पक्षता यानी समता। व्यवहार में विषमता हो सकती है। 'भगवद्गीता' सम पर बल देती है।

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्।
सम: शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयो:।

जैसे तथागत बुद्ध ने 'मध्यम मार्ग' बताया। भगवान कृष्ण दिखते हैं पांडवों के पक्ष में और कहकर गये, एक ओर मैं अकेला निहत्था ओर दूसरी और मेरी नारायणी सेना। दुर्योधन तो अंकगणित का आदमी था। उसने कहा, निहत्थे आदमी का क्या काम? सेना ही ले ली जाए। दुर्योधन ने सेना रख ली। उसी समय ओशो रजनीशजी ने अच्छा निवेदन किया कि दुर्योधन ने सेना पसंद की और पांडवों ने अकेले कृष्ण को पसंद किया तभी युद्ध जीता गया था। केवल औपचारिकता बाकी थी। कृष्ण बिल्कुल मध्य में है। 'महाभारत' में अर्जुन ने ही कहा कि 'हे गोविंद! मेरे रथ को सेना के मध्य में रखो।' क्योंकि कृष्ण मध्यममार्गी थे। कृष्ण का इरादा था कि बीच में खड़े रहकर ही 'गीता' सुनाउं। काश! सामनेवाले भी सुन ले! कर्ण 'गीता' सुन लेता तो अर्जुन से भी ज्यादा 'गीता' पचा सकता। लेकिन दुर्भाग्य ये था कि उसके कवच और कर्ण कुंडल फरेबी इन्द्र ने छिन लिए थे। एक श्रवणविज्ञान उसका छिन लिया था। अर्जुन को कृष्ण ने सात सौ श्लोक सुनाए और ये आदमी प्रश्न किए जा रहे हैं! कृष्ण ने कहा, अब तुझे समझ जाना चाहिए।

कवि काग अपने भजन में कहते हैं, हम निसरणी बनकर रहे पर कोई चढ़नेवाले ही नहीं, क्या करे? गंगाजी ने ब्रह्मलोक छोड़ा; पतित को पावन करने के लिए धरती पर आई। लेकिन कोई गंगा को झेलनेवाला नहीं था। मुझे लगता है, कृष्ण ने 'गीता' कृष्ण को ही सुनाई है, अर्जुन को नहीं। मैं भी कथा आपको नहीं सुना रहा हूं, मुझको सुना रहा हूं। तभी मेरी कथा की सार्थकता है। आपको कथा में आनंद आता है, लेकिन मैं बोलाता हूं और मैं अपने आपको सुनता हूं इसीलिए आनंद आता है। अर्जुन को कृष्ण ने 'गीता' कैसे सुनाई? इसका जवाब दसवें अध्याय 'विभूतियोग' में है, 'पांडवानां धनंजय:।' पांडवों में अर्जुन मैं हूं। तो कृष्ण ने कृष्ण को ही 'गीता' सुनाई। जब आदमी खुद को सुनाता है तब ही खुदा कबूल करता है। व्यासजी स्वयं उर्ध्वबाहु होकर कहते हैं, मेरी बात सुनो। वेद के विभाग किए, अठारह पुराण दुनिया को दिए लेकिन मुझे सुनो। ये व्यास को कहना पड़ा। शायर के अच्छे शेर पर लोगों की दाद मिले उससे पहले अंदर से दाद आने लगती है। यही विद्या की सार्थकता है। 'गीता' कान में नहीं की है। कृष्ण ने जो पांचजन्य उद्घोष किया था वो तो उपकरण है। पांचजन्य 'गीता' ही तो थी। लेकिन कान नहीं थे लोगों के पास! और आवाज़ इतनी आ गई थी कि कचरे के कारण 'गीता' नहीं सुन पाए थे। गानेवाला कान एक मात्र ठीक था। कृष्ण भी तो 'कान' है। उसको हमने गुजराती में तलपदी भाषा में 'कान' कहा। उसके पास कान है इसीलिए उसकी जीभ ने उसके कान को कथा सुनाई।

सुकरात का तीसरा संदेश, मानवीयगुण विकसित किए जाने चाहिए, समझदारी, निष्पक्षता और आत्मसंयम। आत्मसंयम जरूरी है। तीन प्रकार का आत्मसंयम माना गया है शास्त्रों में - काम, क्रोध और लोभ। क्रोध जरूरी है जीवन में। क्रोध पित्त है। पित्त आयुर्वेद के अनुसार सम्यक् होना चाहिए, वर्ना आदमी की तबियत बिगड़ सकती है। 'काम बात कफ लोभ अपारा।' काम ये वात है। कफ ये लोभ है। और क्रोध पित्त है। द्वेषमुक्त चित्त से क्रोध जरूरी है। द्वेष नहीं होना चाहिए। कई लोग आते हैं मेरे पास और कहते हैं, क्रोध बहुत आता है। क्रोध के कारण कितने सच्चे हो, परिणाम सदैव नुकसान करता है। अत्यंत कामना सच्ची हो फ़िर भी परिणाम उदासीनता ही है। अत्यंत लोभ करे, लोभ का कारण सही हो, लोभ अपार होता है। तुलसीदासजी ने आयुर्वेदिक भाषा में लोभ को कफ कहा है। फक नाक में, आंख में, कान में, कंठ में, सीने में और नाखून में भी रहता है। नख को जितना कांटे उतने ही बढ़ते हैं। 'रामायण' में एक पात्र है शूर्पणखा, जिसके नख बहुत बढ़े हैं। लोभ अपार है इसीलिए दसवां हिस्सा निकालो, थोड़े नाखून कांटो। कफ आंखों में भी होता है। लोभी की आंखों में लोभ दिखाई पड़ता है। तुम्हारे लोभ का कारण सच्चा भी हो तो भी तुम्हें यश और कीर्ति नहीं मिलेगी। लोभी को यश और कीर्ति प्राप्त करने की खेवना भी होती है। इन तीन को जो संयमित करे उसे मेरी व्यासपीठ आत्मसंयमी कहती है। और सुकरात आत्मसंयम को तीसरा स्थान देता है।

सुकरात का चौथा सूत्र, दूसरों को सन्मान। ये 'उत्तरकांड' है, सुकरात के हृदय का और सत्यरूपी 'मानस' का। सुकरात का एक सूत्र है, बुद्धि आश्चर्य से शुरू होती है। तो सुकरात के बारे में हम मिलकर बातचीत कर रहे हैं। और कोई सूत्र, कोई संदेश हम तक पहुंच जाये तो अच्छी बात है। कवि दादल का एक लोकगीत है कि डाकिया के थेले में शादी की कंकोतरी भी होती है और किसी के मरण का खत भी होता है। डाकिया को कोई लेना देना नहीं। न उसको हर्ष है न शोक है। उसका काम है सही पते पर संदेश भेजना।

तो बाप! 'मानस-सुकरात'; उपसंहार सूत्रों की कल चर्चा करेंगे। जो शेष समय है उसमें कथा का थोड़ा क्रम ले लूं। कुछ जिज्ञासा पढ़ लूं और फिर भगवान नाम लें। जब मैं स्कूल में पढ़ाता था तब एक कहानी आती थी और आप सबने भी पढ़ी है, 'तृषातुर कौआ।' कौआ बहुत प्यासा है। जग है पर उसमें तले पर पानी है। उसकी चोंच पानी तक नहीं पहुंचती। चतुर कौए ने एक युक्ति निकाली।

मुझे लगता है, कृष्ण ने 'गीता' कृष्ण को ही सुनाई है, अर्जुन को नहीं। मैं भी कथा आपको नहीं सुना रहा हूं, मुझको सुना रहा हूं। तभी मेरी कथा की सार्थकता है। आपको कथा में आनंद आता है, लेकिन मैं बोलाता हूं और मैं अपने आपको सुनता हूं इसीलिए आनंद आता है। अर्जुन को कृष्ण ने 'गीता' कैसे सुनाई? इसका जवाब दसवें अध्याय 'विभूतियोग' में है, 'पांडवानां धनंजय:।' पांडवों में अर्जुन मैं हूं। तो कृष्ण ने कृष्ण को ही 'गीता' सुनाई। जब आदमी खुद को सुनाता है तब ही खुदा कबूल करता है।

बगल में पड़े हुए कंकड पानी में डालता है और पानी उपर आ गया तो पानी पीके गाता-गाता उड़ गया। जीवन एक जग है और हम सब जीवात्मा प्यासे कौए है। जीवन का जो सत्त्व-तत्त्व है वो गहराई में तले पर है, उपर नहीं है। चतुर कौए की तरह कोई कंकड डाले तो जल उपर आ जाये। और जीवन के जग में अमृत मिल जाए इसीलिए कंकड नहीं, मणि डालने हैं। वो मणि है रामनाम। जीवात्मारूपी कौआ इस अमृत को पीकर गाता-गाता उड़ जाए।

भगवान पुष्पवाटिका में गए। सीयाजु और राम का प्रथम मिलन हुआ। दूसरे दिन धनुष्ययज्ञ हुआ और कोई धनुषभंग नहीं कर पाया। भगवान राम ने धनुष तोड़ा और जानकी ने जयमाला पहनाई। इस कथा का आध्यात्मिक महत्त्व है। शंकर का धनुष्य अहंकार है, क्योंकि शास्त्रों में शिव को समष्टि का अहंकार कहा है। जो अहंकार को तोड़ दे उसीको ही भक्तिरूपी सीता प्राप्त होती है। बहुत राजे-महाराजे आए थे पर कोई धनुष्य तोड़ नहीं सके थे। राम सबमें छोटे थे फिर भी धनुष्य तोड़ पाए। जो राजे-महाराजे आये थे वो अकेले आए थे और राम आये अपने गुरु के साथ। अहंकार का धनुष्य अपने गुरु की कृपा से टूटता है। सीयाजू ने राम के कंठ में जयमाला पहनाई। जयजयकार हुआ। फिर परशुराम आये। अहंकार मिट जाने के बाद भक्ति मिल जाये लेकिन अहंकार जाने से आदमी सरल हो जाता है। सरल आदमी को लोग सतायेंगे बहुत इसलिए तुलसी कथा इस ढंग से कहते हैं कि आध्यात्मिक जीवन के रहस्य खुलते जायेंगे। परशुराम क्रोधी है। चंद्रमा वक्र होता है, तो राहु उसको ग्रसता नही, पूर्ण होता है तब ग्रसता है। वैसे सरल आदमी को ही लोग सताते हैं। सरल राम के पास क्रोध बनकर परशुराम आए लेकिन जिसके कंठ में भक्ति ने माला अर्पित करके वरण कर लिया उसके पास क्रोध करनेवाले भी जब प्रभाव जान लेंगे तो उसकी शरण में प्रणाम करके अवकाश प्राप्त कर लेंगे। जयजयकार करते परशुराम अपना अवतारकार्य पूरा करके तपस्या के लिए चले जाते हैं।

विश्वामित्र ने कहा, आपकी प्रतिज्ञा के अनुसार सब हो गया। अब वंशव्यवहार के मुताबिक करो, दूत भेजो। दशरथ बारात लेकर आये और लोकरीति तथा वेदरीति से अपनी बेटी का कन्यादान करो। महाराज दशरथजी बारात लेकर मिथिला आते हैं। मंगलमूल लग्न का दिन तय हुआ। मागशीर्ष शुक्ल पंचमी जिसको हम 'विवाह पंचमी' कहते हैं। भगवान राम देवताओं को, ब्राह्मणों को आदर देकर कनक सिंघासन पर बिराजमान हुए। अष्टसखियों जानकी को दुल्हन के रूप में ले आई। वशिष्ठजी ने जनक से कहा, आपके छोटे भाई की दो कन्या उर्मिला और श्रुतकीर्ति और आपकी कन्या मांडवी कुंआरी है। तो जानकी राम को अर्पित हो रही है। वैसे मांडवी भरत को, उर्मिला लक्ष्मण को और श्रुतकीर्ति शत्रुघ्न को अर्पण कर दी जाए। चारों भाईयों का लोकरीति और वेदरीति से विवाह हुआ। कन्यादान हुआ। उसके बाद बहुत दिन बारात रुकी, क्योंकि स्नेह के रज्जु से जनक ने बारात को बांध रखी थी। दिन बीते और महाराज जनकजी को खबर करवा दी कि महाराज दशरथजी अब बिदा लेना चाहते हैं। पूरी जनकपुरी में उदासी छा गई।

सीताजी, श्रुतकीर्ति, मांडवी, ऊर्मिला के लिए डोलियां सजी है। सबको प्रणाम करके चारों कन्या आशीर्वाद प्राप्त करती है। बारात बिदा हुई। महाराणी सुनैना, जनकजी, कुशध्वज, शतानंद सब बारात को बिदा दे रहे हैं। सीयाजु को देखकर जनक रो पड़े। हिमालय जैसा अचल-स्थिर भी उमा को बिदा देते समय रो पड़ा था। कवि कालिदास के 'शाकुंतल' की शकुंतला जब पालक पिता कण्व के आश्रम से बिदा लेती है, तब अनासक्त कण्व को भी आंसू आ गए थे। सीताजी माँ को ढ़ाढ़स देती है। और सीयाजु भी रो पड़ती है। जानकीजी ने संकेत किया पिताजी पर कि पिता का ध्यान रखियेगा। रास्ते में निवास करते-करते बारात पहुंची। बड़ा उत्सव अयोध्या में हुआ।

दिन बितने लगे। अतिथिगणों ने बिदा ले ली है। विश्वामित्र महाराज राजा से बिदा मांग रहे हैं कि राजन्, मुझे बिदा दो। अब मैं मेरी तपस्थली की ओर जाऊं। मुझे ये रसम बहुत प्यारी लगती है। साधु को गृहस्थ के काम में जाना चाहिए लेकिन गृहस्थ का काम पूरा हो जाए तो साधु पुन: भजन में विरक्त हो जाए। विश्वामित्र पैदल आए थे। राम-लक्ष्मण को भी पैदल ले गए थे पर बिदा के समय दशरथ के रथ में नहीं गए। राम के रूप को सराहते हुए, राजा की भक्ति को याद करते हुए, जनकपुर के उत्सवों का आनंद महसूस करते हुए, मन ही मन स्मृतियों को सराहते हुए महर्षि विश्वामित्र पैदल चले गए।

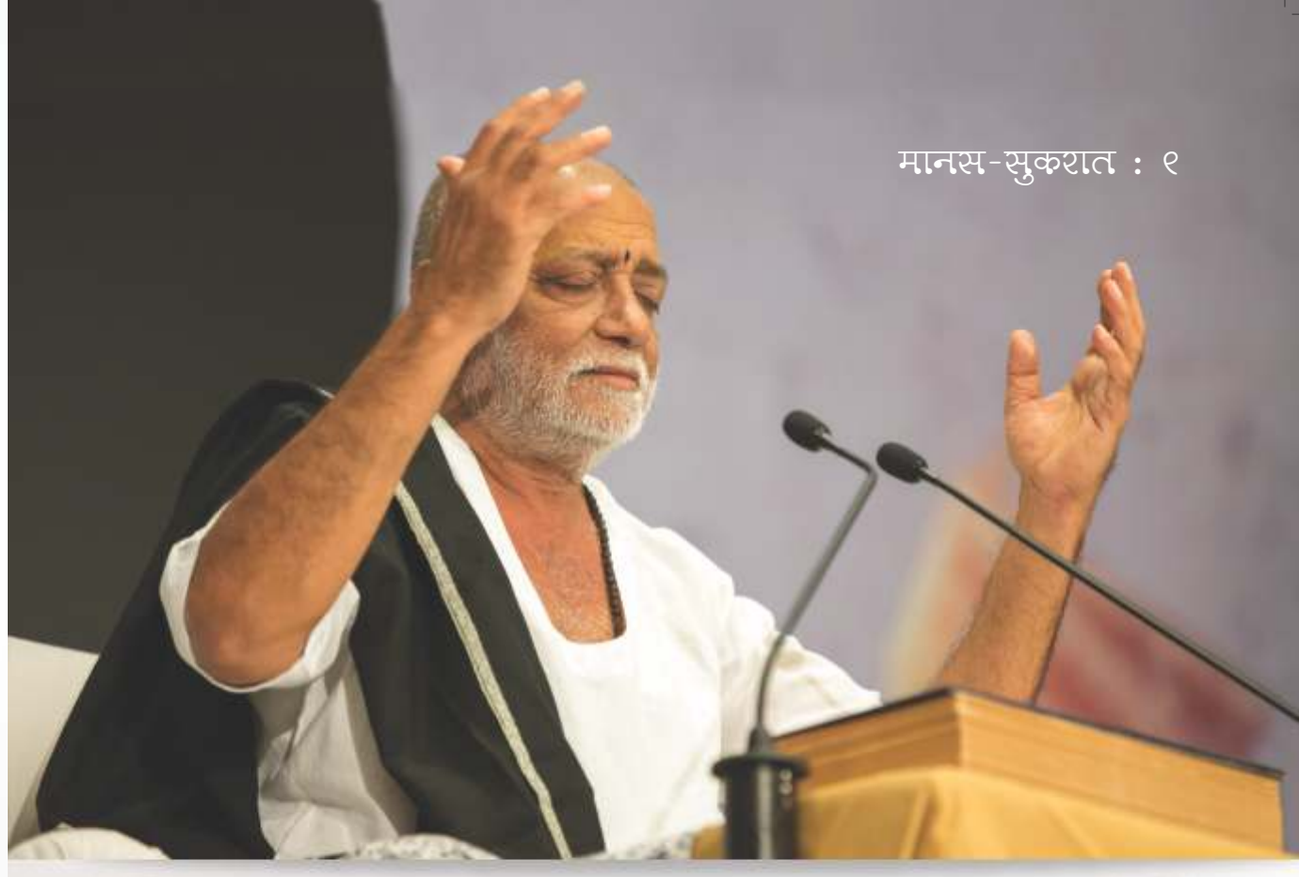

आदमी की खोज सच्ची हो तो लंका में भी संत मिल सकता है

बाप! एक महान विचारक की भूमि पर चल रही और आज पूरी होने पर है, नव दिवसीय रामकथा में आज के दिन के आरंभ में बापा ने कल की कथा का सारांश सुनाया। प्रणाम। कथा में उपस्थिति आदरणीय वडीलगण, युवान भाई-बहन और अन्य सभी को व्यासपीठ से मेरा प्रणाम। अभी हरीशभाई ने जो खबर सुनाई और हम सभी ने दो मिनट का मौन रखकर अखंड सौभाग्यवती रश्मिताबहन को श्रद्धांजलि समर्पित की। आदरणीय सुमनभाई रामकथायात्रा में जब से कथायात्रा करते रहे, करीब-करीब बहन साथ में भी रहती थी। कल सायंकाल को सुमनभाई आए और मुझे ये खबर सुनाई कि बापू, ऐसा हुआ। और रश्मिताबहन भी स्वस्थ थी। मेरे से भी रश्मिताबहन की बात हुई थी लेकिन -

हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ।

ये जो विधाता के हाथ की बात है। कल अचानक अहमदाबाद में उनका निर्वाण हुआ। रश्मिताबहन कथा बहुत सुनती थी। एक रामकथा और व्यासपीठ पे जिसकी श्रद्धा थी ऐसी व्यक्ति का निर्वाण हुआ। मैं व्यक्तिगत रूप से और व्यासपीठ से जुड़े आप सब रश्मिताबहन के निर्वाण को प्रणाम करें, श्रद्धांजलि समर्पित करें और पूरे परिवार को हम सबकी ओर से दिलसोजी प्रकट करें।

तो बाप! आइए, आज कथा का नववां दिन याने कि समापन का दिन, विराम का दिन। और सुकरात की जो बात मैंने कल आपके सामने रखी थी कि उसके लिए मृत्युदंड घोषित हुआ, उसके बाद का संबोधन एथेन्सवासियों को किया है, सुकरात के इन अंतिम शब्दों का संवाद हम मिलकर कर रहे थे। आज भी कुछ उनके अंतिम भाषणों में से कुछ भाषण जो हमारे लिए उपयोगी हो सकता है, उसका थोड़ा संवाद करेंगे। लेकिन उसमें हम प्रवेश करें उससे पहले कथा का क्रम ले लूं।

कल हमने अति संक्षेप में रामकथा का प्रथम सोपान 'बालकांड' पूरा किया। 'अयोध्याकांड' बहुत बड़ा कांड है। यूं समझो 'बालकांड' और 'अयोध्याकांड' में करीब-करीब आधा 'रामचरित मानस' है। और बाकी का पिछले सोपानों में है। 'अयोध्याकांड' के बारेमें रामायणी या 'रामचरित मानस' के उपासक है, उनका ऐसा मानना है कि 'बालकांड' का आरंभ, 'अयोध्याकांड' का मध्य और 'उत्तरकांड' का अंत जो पूरा जान ले वो संत। ऐसी कहावत अयोध्या में चलती है। मेरी समझ में रामकथा का आरंभ सत्य है। क्योंकि राम सत्य है। रामनाम सत्य है। रामकथा सत्य है। 'अयोध्याकांड' का मध्य और आखिरी भाग प्रेम से परिपूर्ण है, जिसमें राम के प्रेम की मूर्ति भरत का चरित्र है। और 'उत्तरकांड' करुणा है। ख़ासकर के युवानों के लिए 'अयोध्याकांड' मार्गदर्शक है, क्योंकि जवानी में ही सबसे ज्यादा समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बचपन में तो हमारी समस्याओं का सामना माता-पिता करते हैं। युवानी में सभी समस्याओं का सामना हमें ही करना पड़ता है।

'अयोध्याकांड' के प्रारंभ में सुख का बहुत वर्णन किया है। जब से राम ब्याह के अयोध्या में आए हैं, तब से इतना सुख है मानो दुनिया में ओर कहीं नहीं। लेकिन उसी सुख कुछ समय के बाद दु:ख में परिणित हो जाता है। और उतना ही दु:ख आता है। तो सुख अच्छी बात है। अल्लाह करे, सबको मिले। लेकिन अति सुख ये दु:ख को जन्म देता है। अतिवृष्टि फिर दु:ख का कारण बन जाती है। सुख सम्यक् होना चाहिए। 'अयोध्याकांड' हमें यही सीख देता है। अति सुख दु:ख को जन्म देता है। इसीलिए 'अयोध्याकांड' में रामवनवास की विषादपूर्ण कथा आई। महाराज दशरथजी दर्पण में सफेद बाल देखते हैं और उनको विचार आया कि राम को राज्य सौंप दूं। तुरंत ही ये निर्णय कर लेते हैं, लेकिन एक रात में पूरी बाजी पलट जाती है! और देवताओं को अपना स्वार्थ था। उन्होंने सरस्वती को प्रेरित किया। सरस्वती ने मंथरा की बुद्धि को घूमा दी। मंथरा ने कैकेई की बुद्धि घूमा दी इसलिए राम को वनवास हुआ। मैं युवानों को इतना ही कहूं, सज्जन का संग हो तो अच्छी बात है, लेकिन कुसंग बड़े-बड़े की बुद्धि घूमा देता है। तुलसी का सूत्र है, 'रहई न नीच मति चतुराई।' तो संग की बहुत महिमा है। 'गीता' तो कहती है, संग से काम जगता है। काम में बाधा होती है तो क्रोध प्रकट होता है। क्रोध एक अंधेरा है। इसीलिए एक सम्मोह, एक बेहोशी प्रकट होती है। सम्मोह से बुद्धि भ्रष्ट होती है और आदमी विनाश की ओर गति करता है। किसी की उपेक्षा न करे, लेकिन संग करने योग्य न हो उसे उदासीन हो जाए तो अच्छा रहेगा। कैकेई की बुद्धि घूमती है और दो वरदान मांगती है। आखिर में रामवनगमन निश्चित हुआ। भगवान राम कौशल्या की अनुमति लेने गये कि मुझे जाना है माँ। तो कौशल्या राज्याभिषेक की जल्दी करवाती है तब राम कहते हैं, माँ, मेरे पिता ने एक रात में मुझे प्रमोशन दे दिया। 'चौदह बरिस रामु बनवासी।' इस बात को राम हकारात्मक लेते हैं। 'पिताँ दीन्ह मोहि काननराजू।' पिता ने मुझे राज दे दिया। वनवास को राम ने राज समझ लिया। और कोई भी सत्ताधीशों को समझना चाहिए कि राज केवल पाटनगर में नहीं होता। दूरदराज़ वनवासी आदिवासी, वंचित, उपेक्षित, दलित जो बेचारे समाज से बिछड़े हुए हैं वो सच्चा राज्य होता है। राजभवन को सत्ता न माना जाए, वन को सत्ता माना जाए।

'रामायण' में त्याग करने की स्पर्धा शुरू हुई कि कौन ज्यादा त्याग करे? लक्ष्मणजी को रामने कहा, तू सुमित्रा माँ की आज्ञा ले। मुझे आपत्ति नहीं, तू मेरे साथ चल। लक्ष्मणजी माँ के पास जाकर कहते हैं, भगवान राम वन जा रहे हैं। मुझे क्या आदेश है? सुमित्रा कहती है, तू तो रात-दिन कहता है, जानकी मेरी माँ है और राम मेरे पिता है। तुझे आज्ञा लेनी है तो माता-पिता की लेनी चाहिए, मुझे पूछने क्यों आया? तुझे तुरंत निकल जाना चाहिए। जानकीजी भी कहती है, क्या सूर्य को छोड़कर प्रभा बिलग हो सकती है? चांद को छोड़कर चांदनी अलग हो सकती है? और शरीर को छोड़कर उसकी छाया बिलग हो सकती है? मुझे कैसे आप बिलग कर सकते हैं? राम के साथ वन जाने के लिए जितने तर्क जानकी के सामने रखते हैं, जानकी सभी तर्क को उतनी ही शालीनता से काटती है। और अंत में राम को राजी होना पड़ा कि आप मेरे संग चलिए। हमारे पर ऐसे कौन दु:ख आते हैं यारो? राज्यारोहण होनेवाला था और एक रात में बाजी पल्टी और वनवासी वेश धारण करना पड़ा! इसीलिए नरसिंह मेहता कहते हैं -

सुखदु:ख मनमां न आणीए, घट साथे रे घडियां;
टाळ्यां ते कोईना नव टळे, रघुनाथना जडियां।

वन का साज सजकर तीनों निकले। पिता बेहोश है। पूरी अवध रो रही है। सरजू के तट पर आते हैं। महाराज जागृत हुए तो सुमंत को कहा, तू रथ लेकर जा। तीनों को रथ में बिठाकर तीन-चार दिन वन में घूमाकर ले आ। रथ लेकर सुमंत आते हैं। पूरी अयोध्या को प्रभु समझाते हैं। और आख़िर में रथ लेकर अयोध्या से निकले। पूरी अयोध्या पीछे गई। तमसा तट पर प्रथम रात्रि रोकाण हुआ है। लोग शोक और श्रम के कारण सो गए। मध्यरात्रि के बाद राम ने सुमंत को कहा कि रथ इस तरह चलाओ कि लोग हमारा पीछा न कर सके। रथ में बैठकर तीनों निकल गए। सुबह होती है। राम विहीन तमसा तट देखकर जल के बिना जैसे मछली हो, अयोध्या की जनता अपने आपको धिक्कारने लगी। समझदार लोगों ने समझाया कि प्रभु से यदि हमें प्यार है तो परमात्मा की इच्छा में हमारी इच्छा हो। लोग अवध लौटे।

भगवान राम का रथ शृंगबेरपुर पहुंचता है। गुहराज, कोल, किरातों को प्रभु मिले। भगवान राम केवट से नांव की मांग करते हैं और वो चरण धोकर भगवान को गंगा पार कर देते हैं। भगवान छोटे आदमी की छोटाई को मिटा देते हैं और बड़े आदमी के बड़प्पन को रोक देता है। ये राम का स्वभाव है। जिस केवटों को लगता था कि इस संसार में हमारा तो कोई उपयोग ही नहीं, वहां जाकर राम ने नौका मांगकर कहा कि तू भी दे सकता है और एक सम्राट का पुत्र भी तेरे से मांग सकता है। गंगापार के बाद यह गरीब आदमी भगवान से कुछ भी नहीं लेता। बार-बार राम कहते हैं, उतराई लो। केवट ने सुंदर युक्ति बनाई कि चौदह साल के बाद लौटो तो यहीं से लौटना और हमें उतराई देते जाना। केवट का इरादा है, प्रभु का दूसरी बार दर्शन हो। भगवान गंगा के तट एक दिन रुके। और यहां से पदयात्रा शुरू हुई। दूसरे दिन भरद्वाज ऋषि के आश्रम में आए। वहां रात रुके। भरद्वाजजी को कहा, हमें मार्गदर्शन दो जो हमें रास्ता दिखाए। जिसका नाम हमें भवाटवी में रास्ता दिखा देता है उसीने मार्गदर्शन मांगा। इसका अर्थ है, कोई छोटा आदमी भी हमारा मार्गदर्शक बनता है। गुहराज तो साथ में था और भरद्वाज ऋषि के चार शिष्य मार्ग दिखाने जाते हैं।

राम, लक्ष्मण, जानकी आगे यात्रा करते हुए वाल्मीकि के आश्रम में आते हैं। एक रात राम वाल्मीकि के आश्रम में रहे। फिर राम वाल्मीकि को पूछते हैं कि हम कहां रहे? वाल्मीकि हंस पड़े, महाराज! आप ये बताइए कि आप कहां नहीं हो? आपके सिवा कोई जगह हो तो हमें बताईए। आप तो ब्रह्म है। फिर रहने के चौदह स्थान बताये। ये चौदह स्थान भी भक्ति के ही है। इसका मतलब है राम, आप चौदह ब्रह्मांडों में निवास करते हैं। और फिर अंत:करण की आध्यात्मिक चर्चा हुई। जिसके कान समुद्र के समान हो, कथा सुने फिर भी कान तृप्त न हो उसके हृदय में आप निवास करो। जिसकी आंखें आपके दर्शन करने में थके नहीं वहां निवास करे। फ़िर कहा, आप चित्रकूट जाइए। वाल्मीकि के आश्रम से राम चित्रकूट आते हैं। वहां राम तेरह साल रहे हैं।

भगवान को चित्रकूट पहुंचाकर के तुलसीदासजी सुमंत को शृंगबेरपुर से अवध ले आते हैं। सुमंत लौटता है। अयोध्या बिलकुल भयावह लगती है। सूर्यास्त हुआ तब अंधेरे में सुमंत ने प्रवेश किया। धीरे-धीरे सब कथा सुनाई। महाराज समझ गए कि चौदह साल पहले कोई आनेवाला नहीं है। तब आखिरी क्षण आई। पूरी अयोध्या समझ गई कि महाराज की स्थिति ठीक नहीं है। महाराज ने प्राणत्याग किया। पूरी अवध शोक में डूब गई। और भरत को लेकर धावनलोग आते हैं। पिता के निष्प्राण शरीर के सामने गिर पड़ते हैं। कौशल्याजी समझाती है। वशिष्ठजी आए। पितृक्रिया हुई। फिर राजकीय चर्चा चली कि अब क्या किया जाए? सबने कहा, पिता जिसको राज दे, वो वारसदार। पिता की आज्ञा मानकर राम वन गए, तो अब भरत राज करे। चौदह साल के बाद राम लौटे तो दोनों भाई निर्णय कर लेना। भरत ने बहुत प्रेमपूर्ण तर्क रखे हैं कि मेरा यदि आप हित चाहते हैं तो मैं तो यही कहूंगा कि हम सब मिलकर चित्रकूट जाए। भगवान राम के पास जाकर आत्मनिवेदन कर दूं। फिर मेरा ठाकुर जो कहेगा वो मैं करूंगा। भरत कहते हैं, मैं सत्ता का आदमी नहीं हूं, सत् का आदमी हूं। मैं पद का आदमी नहीं हूं, पादुका का आदमी हूं। आखिर में राम की पादुका लेकर भरत लौटे।

पादुका को सिंघासन पे रखी और पादुका को पूछकर राजकाज करते हैं। आख़िर में भरत भी वल्कल धारण करते हैं। नंदिग्राम में पृथ्वी में गड्डा बनाकर के तपस्वी का जीवन जीने लगते हैं। और इस तरह चौदह साल भरत रहे। वहां 'अयोध्याकांड' को भरत के प्रेम की सराहना करते हुए पूरा किया।

'अरण्यकांड' में भगवान करीब-करीब तेहर साल चित्रकूट में रहकर अब राम को लगा कि सब लोग पहचानने लगे हैं और मेरा ईश्वरत्व प्रकट हो जाएगा तो मैं मानवलीला नहीं कर पाऊंगा। इसीलिए प्रभु ने स्थलांतर करने का सोचा। राम, लक्ष्मण, जानकी आगे की यात्रा करके महर्षि अत्रि के आश्रम में आए और अत्रि ने राघवेन्द्र की स्तुति की।

नमामि भक्त वत्सलं । कृपालु शील कोमलं ।।
भजामि ते पदांबुजं । अकामिनां स्वधामदं ।।

'रामायण' की कुछ स्तुतियां बहुत अच्छी है। 'रामायण' की सत्ताईस स्तुतियों को 'मानस' केमर्मज्ञ लोग 'मानस' के आसमान के सत्ताईस नक्षत्र बताते हैं। अत्रि ने प्रभु की स्तुति की। उसके बाद प्रभु आगे बढ़े और शरभंग, सुतीक्ष्ण आदि संतों को मिलते कुंभजऋषि के आश्रम में आए। कुंभज से विचार-विमर्श करके भगवान राम, लक्ष्मण, जानकी गोदावरी के तट पर पंचवटी में निवास करने लगे।

एक दिन पंचवटी में भगवान बैठे हैं और लक्ष्मणजी ने प्रभु को पांच प्रश्न पूछे। ये पांच प्रश्न बहुत महत्त्व के है। उसके बाद शूर्पणखा आती है। उसको दंड़ित किया गया। उसने खर-दूषण को उकसाया और खर-दूषण राम पर हमला करते हैं और भगवान राम चौदह हजार राक्षस को निर्वाण प्रदान करते हैं। शूर्पणखा लंका गई और रावण की सभा में रोने लगी कि धिक् है तेरे पौरुष के बल

को! तेरे होते हुए तेरी बहन की ये दशा? रावण मारीच के पास गया। स्वर्णमृग की योजना बनी और पंचवटी में संन्यासी बनकर आया। राम मृग के पीछे गए। लक्ष्मणजी राम के पीछे गए। साधु के वेश में रावण सीता के पास आया। साधु का वेश बनाने से भक्ति नहीं मिलती, साधु की वृत्ति लाने से भक्ति मिलती है। जानकी अग्नि में समा चुकी थी। ये तो उसका प्रतिबिंब था। उसका बलात् अपहरण किया। लंका में ले जाकर रावण ने अशोकवृक्ष के नीचे जानकी को बंदी बनाकर रखा।

मृग को निर्वाण देकर राम लौटे तब जानकी विहीन आश्रम देखकर राम प्राकृत लीला करके रोने लगे। जटायु मिलता है और जटायु ने सब कथा कही। भगवान राम ने जटायु को अपनी गोद में लिया और पितातुल्य आदर देकर जटायु का अग्निसंस्कार किया। कबंध नामक राक्षस का उद्धार करके प्रभु शबरी के आश्रम में आए। भगवान शबरी के सामने नौ प्रकार की भक्ति की चर्चा करते हैं। शबरी योगाग्नि में अपने देह को विलय करके जहां से कभी लौटना न पड़े वहां गई। और प्रभु पंपा सरोवर के तट पर गए। वहां नारद और राम का संवाद है। आखिर में नारद के पूछने पर प्रभु ने संतों के लक्षण की चर्चा की। और राम ने कहा, मैं कितने भी संत के लक्षण बताऊं लेकिन श्रुति और शेष भी संत का लक्षण नहीं बता सकते। 'अरण्यकांड' पूरा।

'किष्किन्धाकांड' में सुग्रीव पर्वत पर से राम को देख लेता है और भयभीत होकर हनुमानजी को भेजता है कि कौन है वो लोग मुझे खबर दो। और यहीं से रामकथा में श्री हनुमानजी का प्रवेश होता है। ब्राह्मण के रूप में श्रीहनुमानजी आते हैं। आख़िर में हनुमानजी राम को पहचान लेते हैं। युवान भाई-बहन, सीखने जैसी बात है कि हनुमानजी ने राम को मिलते ही प्रणाम किए लेकिन दंडवत् नहीं किया। जब हनुमानजी पूरी तरह से प्रभु को पहचान गए तब जाकर प्रभु के चरण पकड़े। मैं आपको बिनती करूं कि बिना जाने, बिना सोचे किसी के चरण मत पकड़ लेना। आदर दो, नमस्कार करो लेकिन नखशिख परिचय हो जाए फिर पैर पकड़ना। पकड़ने के बाद कभी कुछ कहे तो भी छोड़ना मत। आदर सबको दे लेकिन शरणागति तो उसकी ही लेनी चाहिए, जिसे हम पूरी तरह पहचान ले। हनुमानजी को उठाकर ठाकुरजी ने अपने सीने से लगा लिया। हनुमानजी ने कहा कि पर्वत पर कपिराज सुग्रीव रहता है। आपका वह दास है। अपनी पीठ पर राम-लक्ष्मण को लेकर हनुमानजी सुग्रीव के पास पहुंचते हैं। सुग्रीव और राम की मैत्री हुई। कोई संत और सद्गुरु के माध्यम से हम जैसे जीवों को हरि मिलते हैं। प्रभु ने अपनी कथा सुनाई। सुग्रीव ने अपनी व्यथा सुनाई। और वाली को निर्वाण दिया। सुग्रीव को राजा बनाया। अंगद को युवराज बनाया। दुनिया में कन्यादान के प्रसंग है, लेकिन कुमारदान के प्रसंग कम है। वाली ने अपने कुंवर का दान किया। सुग्रीव के हाथ में नहीं दिया, हरि के हाथ में दिया। वाली निर्वाणपद को प्राप्त करता है।

भगवान चातुर्मास करने के लिए प्रवर्षण पर्वत पर गए। सुग्रीव भोग के कारण प्रभु का कार्य भूल गया। प्रभु ने थोड़ा भय दिखाकर सुग्रीव को सचेत किया। जानकीजी की खोज का अभियान चला। बंदर-भालूओं को सब दिशा में भेज दिया। जिस टुकड़ी का नायक अंगद है, मार्गदर्शक जामवंत है और हनुमानजी सबसे पीछे रहते हैं उस टुकड़ी को दक्षिण में भेजने का फैंसला हुआ। सब भगवान को प्रणाम करके जाते हैं। हनुमानजी सबसे पीछे प्रणाम करते हैं। भगवान ने सोचा, काम तो ये ही करेगा। और प्रभु ने हनुमानजी को मुद्रिका दी। अभियान चलता है। सबको तृषा लगी। स्वयंप्रभा के पास पहुंचे। गुफा में स्वयंप्रभा ने अपनी बात कही और सब समंदर पे संपाति के पास आये। संपाति ने कहा, मैं जटायु का भाई हूं। मेरी आंख बराबर है पर पांख कमज़ोर है। मैं यहां बैठकर देख सकता हूं कि सीता अशोकवन में बैठी है। आपमें से कोई शतजोजन सागर नांघकर जाए तो जानकी मिल सकती है। जामवंत बूढ़े हो गए है, कैसे जाए? किसी ने कहा, हम जाए तो सही लेकिन लौटे नहीं तो! हनुमानजी चुप है तब जामवंतजी ने कहा, आपका बल तो पवन के समान है और रामकार्य के लिए आपका अवतार हुआ है, आप चुप क्यों है? 'रामकार्य के लिए अवतार हुआ है', ये सुनकर हनुमानजी पर्वताकार होते हैं। गर्जना करने लगे। हनुमानजी ने जामवंत की सिखावन स्वीकार की। यहां 'किष्किन्धाकांड' पूरा हुआ। 'सुन्दरकांड' शुरू -

जामवंत के बचन सुहाए।
सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।

हनुमानजी लंका के लिए तैयार हुए। रास्ते में आए विघ्न को पार करके हनुमानजी लंका में प्रवेश करते हैं। हरएक मंदिर देखते हैं पर सीता नहीं पाई। विभीषण के भवन में हनुमानजी गए। वहां तुलसी का क्यारा है, रामनाम अंकित गृह है। भगवान का मंदिर थोड़ा भिन्न बताया है। हनुमानजी को लगा कि लंका में वैष्णव कहां से आया? आदमी की खोज सच्ची हो तो लंका में भी संत मिल सकता है। खोज सच्ची होनी चाहिए। सुकरात यही तो कहता है कि मैं तुम्हें खोज सीखा रहा हूं। दूसरों के आविष्कार पर अपनेआप को आधारित मत करो, तुम स्वयं खोजो। विभीषण युक्ति बताते हैं सीता तक पहुंचने की। हनुमानजी अशोकवाटिका में आते हैं। बीच में रावण आता है और जानकी बहुत दु:खी है तब हनुमानजी प्रकट होते हैं। रामकथा सुनाते हैं। जानकी को भरोसा होता है और उसके बाद हनुमानजी को आशीर्वाद दिए। हनुमानजी ने अशोकवाटिका के मधुर फल खाए। राक्षसों को मारे-पिटे। रावण का बेटा अक्षयकुमार आया। उसका निधन हो गया। उसके बाद इन्द्रजित आया। हनुमानजी को बांधकर लंका के राजदरबार में ले जाता है। रावण कुपित होकर हनुमानजी को मृत्युदंड का एलान करता है। विभीषण ने आकर कहा, दूत को मृत्युदंड न दिया जाए। हनुमानजी की पूंछ जलाने की योजना बनी। पूंछ का अर्थ है प्रतिष्ठा। लोग प्रतिष्ठा जलाने की बहुत कोशिश करते हैं और संत की पूंछ ऐसी होती है कि जितनी तुम जलाने जाओ उतनी बड़ी होती है, प्रतिष्ठा बढ़ती जाती है। हनुमानजी की पूंछ को जलाई। पूरी लंका को उलट-पुलटकर भस्म कर दी! एक विभीषण का घर नहीं जलाया। पूंछ बुझाई। जानकी ने चूडामणि दी।

माँ को ढ़ाढ़स देकर हनुमानजी लौटते हैं। सब सुग्रीव के पास पहुंचे। जामवंत ने हनुमानजी के पराक्रम की कथा सुनाई। सब भगवान राम के पास आये और जब हनुमानजी की बात सुनी तो प्रभु हनुमानजी को गले लगते हैं कि मेरा पूरा रघुकुल तेरे करजे से कभी मुक्त नहीं होगा। भगवान की सेना समंदर के तट पर आई। यहां रावण की सभा में चर्चा हुई। विभीषण ने दो-टूक बातें कही कि राम को जानकी सौंप देनी चाहिए। रावण ने विभीषण को चरण प्रहार किया और विभीषण अपने मंत्रियों को लेकर राम की शरण में आता है। और शरणागत वत्सल भगवान विभीषण को आश्रय देते हैं। फिर विभीषण की सलाह ली कि अब क्या किया जाए? विभीषण ने कहा, 'महाराज, आप तीन दिन अनसन कीजिए, समंदर यदि हमें मारग दे तो बल का प्रयोग न करे।' रामजी तीन दिन बैठते हैं। समंदर ने कोई जवाब न दिया तब प्रभु ने कहा, 'लक्ष्मण, धनुष लाओ।' और समंदर के उपर तीर चढ़ाया प्रभु ने तब खलभली मच गई सागर में! जलचर अकुलाने लगे और ब्राह्मण का रूप लेकर समुद्र प्रभु की शरण में आया, महाराज, आप तीर चलाओगे तो असंख्य जीवों का नाश होगा। आपकी सेना में नल-नील नामक दो भाई है, उसके छूने से पथ्थर तैरेंगे। आप सेतु बनाइए। मैं भी आपको मदद करूंगा। प्रभु ने कहा, जोड़ने की बात ये तो मेरा प्रधान विचार है। समुद्र का प्रस्ताव माना गया। 'सुन्दरकांड' को विराम दिया।

'लंकाकांड' के आरंभ में काल देवता का वर्णन है। उसके बाद भगवान सेतुबंध की रचना करते हैं। प्रभु ने कहा, बड़ी उत्तम यह धरनी है। मेरी इच्छा है, यहां भगवान शिव की स्थापना हो। ऋषिमुनियों को बुलाए गए और भगवान राम के हाथों से सेतुबंध की स्थापना हुई। रामेश्वर के आशीर्वाद प्राप्त करते हुए प्रभु लंका पहुंचते हैं। सुबेल पर डेरा डाला। किन्नर, गंधर्व, अप्सरा आई, मेहफ़िल जमी और अखाडे में सुंदर कार्यक्रम पेश किया जा रहा है। भगवान राम सुबेल पर से महारस भंग करते हैं और रावण लौट गया। दूसरे दिन रावण की राजसभा में अंगद ने संधि का प्रस्ताव किया। रावण और अंगद की चर्चा होती है। संधि नहीं हुई और युद्ध अनिवार्य हुआ। भीषण लड़ाई लड़ी गई। आख़िर में इन्द्रजित, कुंभकर्ण सब वीरगति को प्राप्त कर गए। अंत में इकत्तीस बाण चलाकर भगवान राम ने रावण को भी निर्वाण दिया। निर्वाण के समय 'राम कहां है?' ऐसा बोलते-बोलते रावण धरती पर गिरता है। प्रभु दौड़कर रावण के पास आते हैं और रावण का तेज प्रभु के चेहरे में समा गया। यहां मंदोदरी आई। प्रभु की स्तुति की। रावण की क्रिया हुई। और विभीषण का राज्याभिषेक कर दिया गया। प्रतिबिंब जलाकर सीताजी मूल रूप में प्रकट होती है। अपने मित्रों को पुष्पक विमान में बिठाकर प्रभु अयोध्या की ओर यात्रा का आरंभ करते हैं। श्रीहनुमानजी को अयोध्या भेज दिया गया। जानकीजी को रणांगण दिखाया। रामेश्वर का दर्शन करवाया। कुंभज आदि मुनियों से मुलाकात करवाई। भगवान का विमान शृंगबेरपुर निषादों के बीच गरीबों की बस्ती में ऊतरा। केवट को कहा, तेरी ऊतराई बाकी है, क्या दूं? केवट ने कहा, ये तो सिर्फ़ बहाना था। ऊतराई देनी है तो इतना करो, मैंने आपको नौका में बिठाया था, आप मुझे विमान में बिठाओ। और प्रभु विमान में अयोध्या ले जाते हैं। यहां 'लंकाकांड' पूरा होता है।

'उत्तरकांड' के आरंभ में विरह के लम्हे हैं। बड़ी विकट परिस्थिति है कि भरत का क्या होगा? एक ही दिन बाकी है और फिर श्रीहनुमानजी आ जाते हैं और भरत को कहते हैं, प्रभु सकुशल आ रहे हैं। पूरी अयोध्या में बात फैल गई कि प्रभु आ रहे हैं। विमान सरजू के तट पर उतरता है और प्रभु विमान से उतरे। 'रामचरित मानस' की कई सारभूत बातें हैं। पुष्पक में वानर-भालू बैठे लेकिन उतरे तब 'धरे मनोहर मनुज सरीरा।' रामकथा ये मनुष्य बनाने की विधा है। प्रभु धरती को प्रणाम करके गुरुदेव के चरणों में हथियार रखकर दंडवत् करते हैं। भरत और राम मिले तब कोई निर्णय न कर पाया कि दोनों में कौन बनबास गये थे! अमित रूप धारण करके प्रभु सबको मिले। प्रभु सबसे पहले कैकेई के भवन गए। माँ का संकोच निवारा। सुमित्रा से मिले और कौशल्या के पास पधारे। सबने स्नान किया और वशिष्ठजी ने ब्राह्मणों को कहा, अगर आप कहो तो आज ही राजतिलक कर दे। और आज्ञा हुई कि आज ही राजतिलक कर दिया जाए। अब कल का भरोसा न करे। एक ममता की रात बीच में आ गई तो रामराज्य रुक गया था।

दिव्य सिंघासन मंगवाया। भगवान को आदेश हुआ कि आप बिराजिए। पृथ्वी को प्रणाम किया। सूर्य को प्रणाम किया। दिशाओं को प्रणाम किया। माताओं को प्रणाम किया। जनता को प्रणाम किया। गुरुजनों, ब्राह्मणों सबको प्रणाम करके भगवान सीता सह सिंघासन पर बिराजमान हुए और तुलसी विश्व को रामराज्य देते हुए बोले-

प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा।
पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा।।

त्रिभुवन में जयजयकार हुआ। माताएं पुलकित होकर आरती कर रही है और गोस्वामीजी कहते हैं, साक्षात् शिव कैलास से राजदरबार में स्वयं पधारे। शिव स्तुति करके, भक्ति का वरदान प्राप्त करके कैलास गए। भगवान ने अपने मित्रों को निवास दिए। छ: मास के बाद प्रभु ने सभी मित्रों को बिदा दी। एक हनुमानजी रहे। समय बीतते जानकीजी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। रघुवंश के वारिस का नाम बता दिया। उसके बाद सीता का दूसरी बार का त्याग सब कथा रोक दी। राम-जानकी की छबि लोकहृदय में स्थापित रहे ये तुलसी चाहते थे।

यहां रामकथा की बात पूरी हो जाती है। उसके बाद कागभुशुंडिजी का चरित्र। आखिर में गरुडजी के सात प्रश्न और उसके जवाब है। गरुड के सामने बाबा भुशुंडि कथा पूरी करते हैं। यहां याज्ञवल्क्य पूरी करते हैं या नहीं ये नहीं लिखा है। शंकर भगवान भी पार्वती के सामने कथा पूरी करते हैं। फिर तुलसी कथा पूरी करते हैं। मैं कथा पूरी

हनुमानजी रास्ते में आए विघ्न को पार करके लंका में प्रवेश करते हैं। हरएक मंदिर देखते हैं पर सीता नहीं पाई। विभीषण के भवन में हनुमानजी गए। वहां तुलसी का क्यारा है, रामनाम अंकित गृह है। भगवान का मंदिर थोड़ा भिन्न बताया है। हनुमानजी को लगा कि लंका में वैष्णव कहां से आया? आदमी की खोज सच्ची हो तो लंका में भी संत मिल सकता है। खोज सच्ची होनी चाहिए। सुकरात यही तो कहता है कि मैं तुम्हें खोज सीखा रहा हूं। दूसरों के आविष्कार पर अपनेआप को आधारित मत करो, तुम स्वयं खोजो।

करूं इससे पहले 'मानस-सुकरात' का अंतिम उपसंहारक सूत्र संक्षेप में ले लूं। सुकरात के बचनों के भाषांतर को पढ़कर सुनाऊं। एथेन्सवासी भाई-बहन, एक हजार तरहम जुर्माना में चुका सकूं तो मैं मृत्यु से बच जाऊं। लेकिन मैं गरीब हूं। मैं ये जुर्माना नहीं दे सकता। और दे सकूं तो भी मैं मरना ज्यादा पसंद करूंगा। मैं ये नहीं करने के लिए राजी हूं इसीलिए इस आदमी ने मुझे मौत की सजा सुनाई है। पर ओ एथेन्सवासियों, मैं अपने आपको क्या दंड दूं? यह स्पष्ट नहीं कि मैं किस लायक हूं। क्या मैं कष्ट भोगने लायक हूं या अर्थदंड के लायक हूं? क्योंकि अपने जीवनकाल में मैं खामोश नहीं रहा। मैंने उन सब बस्तुओं की उपेक्षा की है, जिसके पीछे अधिकांश लोग भागते-फिरते हैं। पैसा कमाना, घर गृहस्थी की चिंता करना। इन सबकी मैंने उपेक्षा की है। मैं ठहरा बहुत सच्चा और सीधा आदमी। अगर ऐसी हरकतों में लिप्त रहता तो आज में जितना सुरक्षित हूं उतना सुरक्षित नहीं होता। इसीलिए इन बातों के पीछे मैं कभी भागा नहीं। अगर ऐसा करता तो मैं आपके किसी काम में न आता और मैं अपने खुद के काम में भी न आता। लेकिन आप में से प्रत्येक को व्यक्तिगतरूप से लाभान्वित करने के लिए मैंने ये लक्ष चुना है। आपमें से हर एक को प्रेरित करूं कि वह अपने मामलों पर या नगर के मामलों पर ध्यान देने से पहले वह देखे कि वह नगर के अतिरिक्त अन्य मामलों में भी कैसे सर्वाधिक समझदार हुए कि नहीं। मैं तो ऐसा ही आदमी हूं फिर भी कैसा सुलुक किया जाना चाहिए? एथेन्सवासियों, कोई पुरस्कार यदि मुझे मिले तो वो मेरी मृत्यु के समान नहीं हो सकता। विष आ गया है। मैं मरूंगा, आप जीवित रहोगे। फायदा किसको होगा ये केवल ईश्वर ही जानते हैं।

सुकरात का ये आख़िरी टुकड़ा मुझे बहुत स्पर्श कर गया। सुकरात ने ये भी कहा, मैं जब भी कोई निर्णय करता हूं, मुझे देवी की आवाज़ सुनाई देती है। मृत्युदंड मेरे हित में न होता तो देवी जरूर मुझे सलाह देती, लेकिन आज वो चुप है क्योंकि जानते हैं कि सुकरात को ऐसा ही करना चाहिए। ऐसा कहकर उसने अलविदा कर दिया। इस मर्त्यलोक से बहुत प्यारी रोशनी थी वो बुझ गई। फैल गई। रोशनी महारोशनी में समा गई। देह तो गया लेकिन कौन माँ का लाल होगा जो सुकरात के बिचारों को दंड दे सके?

ऐसे एक दैवीपुरुष की स्तुति में हमने एथेन्स में रामकथा प्रारंभ की थी। डोलरभाई पोपट और उसका पूरा परिवार निमित्त बन करके इस कथा की सेवा कुबूल की और हम नव दिनों से आनंद और प्रसन्नता महसूस कर रहे हैं। तो सुकरात के इन अंतिम शब्दों के साथ मैं 'मानस-सुकरात' को यहां रोक रहा हूं। तो 'मानस' की संवाद पीठ के चारों आचार्य ने कथा को विराम दिया। और इन आचार्यों की आशीर्वादक छाया में बैठकर मेरी व्यासपीठ भी कथा को विराम देने की ओर जा रही है तब मैं इस पूरे आयोजन के लिए मेरी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। मैं ही क्या आपके दिल में मैंने देखा, आंखों में देखा और आप सब भी बहुत प्रसन्न रहे। समग्र आयोजन जैसा होना चाहिए ऐसा ही रहा। सुकरात का भंडारा तो ऐसा ही होना चाहिए ना! तो एक युवक और उसके परिवारजन निमित्त बन गए और सुचारु रूप से कथा संपन्न हो रही है तब कल डोलरभाई भी कह रहे थे कि पावन पर गर्व है हमें कि ऐसा बेटा मिला। पूरे सत्कर्म का फल सोक्रेटिस की चेतना को समर्पित करें। सुकरात का देहरूपी कोडिया टूट गया है, ज्योति तो अभी भी है। विज्ञानव्रत का शे'र कहना चाहूंगा -

यूं तो मैं सुकरात नहीं था,
ज़हर बचा था क्या करता?

बुद्धपुरुष खुद ज़हर पीकर अमृत पिलाते हैं। कथा का कोई सूत्र आपके दिल को अच्छा लगे तो संपदा समझकर संभालिएगा। आशीर्वाद तो क्या दे लेकिन 'मानस' के निकट बैठा हूं इसीलिए हनुमानजी के चरण में प्रार्थना करूं कि परमात्मा सबको प्रसन्नता प्रदान करे, सबको संपन्न रखे और किसी बुद्धपुरुष के चरणों में प्रपन्नता भी प्रदान करे। खुश रहो बाप! नवदिवसीय प्रेमयज्ञ 'मानस-सुकरात' यहां संपन्न होता है। जब से मैं कथा कह रहा हूं तब से कथा पूरी करते समय एक पीड़ा-सी महसूस होती है। फिर भी हम जीव है। समय की अवधि में सब संपन्न करना पड़ता है। स्मृति बनी रहे तो न उतरनेवाला नशा रहेगा। परमात्मा करे, इसी आनंद में सब डूबे रहे। 'किसी मोड़ पर फिर मुलाकात होगी।' कथा में आनंद बहुत आता है। मुझे महसूस हो रहा है कि सुकरात की चेतना भी बहुत खुश है।

मानस-मुशायरा

यूं तो मैं सुकरात नहीं था,
ज़हर बचा था क्या करता?
-विज्ञानव्रत

जिसको अहसास गम नहीं होगा।
वो संग होगा, सनम नहीं होगा।
-मुनव्वर राणा

मैं सच कहूंगी फिर भी हार जाउंगी,
वो झूठ भी बोलेगा तो लाजवाब कर देगा।
-परवीन शाकीर

इससे बढ़कर हमें क्या मिलती दादे वफ़ा,
हम तेरे ही नाम से दुनिया में पहचाने गये।
- पारसा जयपुरी

तुम्हें भी याद नहीं और मैं भी भूल गया।
वो लम्हा कितना हसीन था मगर फुझुल गया।
- जावेद अख्तर

हम बावफ़ा थे इसलिए नज़रों से गिर गये।
शायद तुम्हें तलाश किसी बेवफ़ा की थी।

●

हमारे दूर रहने का एक सबब है फ़राज़।
सुना है रोज मिलनेवालों को वो याद नहीं करते।
-अहमद फराज़

विचार ये मन का क्षेत्र है, वाणी ये परब्रह्म का क्षेत्र है

वसंतबापू हरियाणी के 'कवित-पुष्पावलि' पुस्तक के विमोचन प्रसंग पर मोरारिबापू का उद्‌बोधन

अखेगढ़ के रामजी मंदिर में बिराजित परमात्मा राम के स्वरूप को प्रणाम करके, एक समय जो 'रामायण' का था उस काल के एक बहुत महान और 'रामायण'मय जिसका जीवन है ऐसे हमारे पूज्य हरिवल्लभदासजी बापू, उनकी समाधि यहां है उस समाधि को मेरा प्रणाम करके, हाल ही में वसंतबापू ने ऐसा कहा कि मेरे 'मानस' के गुरु तो मेरे पिता श्री मणिरामबापू है, उस मणिरामबापू की समाधि को भी प्रणाम करके इस कार्यक्रम में उपस्थित खंभाळिया महंतबापू, राज्यगुरुबापा, गढ़वीसाहब, दरबारबापू, आप सभी श्रद्धेय। ये वसंतबापू हैं, ये कविता लिखते हैं यह तो बड़ी भगवद्‌कृपा ही है। परंतु वे कुछ न करे, रामकथा भी न पढ़ें, कविता न रचें, कोई प्रवचन न करें तो भी अखेगढ़ की कुटिया की महिमा इतनी बड़ी है; यह कुटिर भगतबापू का गुरुस्थान है। यह गौरव कहां मिलेगा? कि अभी ये सब लड़के बाबूभाई से लेकर सभी इस अखेगढ़ को अपना गृहस्थान मानते हैं। कागबापू के गृहस्थान में बैठना यानी उसमें सब आ गया। बापू, ये तो आप की अदा है बाकी इसमें सब आ गया। कितनी बड़ी बात है मेरी दृष्टि से! बाप! नहीं तो मेरी इच्छा थी कि अपने दोनों काव्यों के लिए बापू भी आधा घंटे बोले। और बहुत बोला भी है! कारण कि कवि के लिए एक शब्द संस्कृत में प्रयोजित है कि कवि निरंकुश होता है। यह बहुत बड़ा सम्मान है सर्जक के लिए कि वो निरंकुश होता है। कवि निरंकुश होता है पर शब्दावलि में उसे निरंकुश होने की छूट नहीं है। निरंकुश कैसे होता है ये मैं आप को कहता हूं।

बापू ने कर्ण पर सुंदर लिखा है। मैं तो इन सब साहित्य का श्रोता हूं साहब! मेरामणभाई बोलें या मायोभाई बोलें या भरतभाई बोले या ये सब कोई भी, जो जो ये साहित्य प्रस्तुत करता है उसका तो मैं एक बड़ा चाहक हूं। बापू ने कर्ण पर जो लिखा है उसमें उन्होंने वसंतबापू लिखा हो तो पता चलेगा, नहीं तो कभी कभी तो मुझको ऐसा लगता है कि नाम न लिखा हो तो ऐसा लगेगा कि डेढ़ सौ वर्ष पहले कोई राजस्थानी कवि ने लिखा होना चाहिए। वहां तक पहुंचा हुआ है ये साधु।

वैज्ञानिकों के अनुमान अनुसार ये पृथ्वी सूरज से अलग हुई उसको चार अरब वर्ष हुए हैं। ऐसा मैंने थोड़ा पढ़ाया है और पढ़ा है। चार अरब वर्ष हुए हैं। चार अरब वर्ष पहले ये पृथ्वी सूर्य से अलग हुई और फ़िर जल तत्त्व की थाह मिली। और फ़िर करोड़ वर्ष गये फ़िर एक कोषीय जीव हमें प्राप्त हुए जिसका नाम अमीबा। एक कोषी जीव हमें मिला और हमें लगा कि इस पृथ्वी पर सजीव सृष्टि विकसित हो सकती है। और फ़िर उत्क्रान्तिवादवाले पाश्चात्य विद्वान उनके उत्क्रान्ति के क्रमानुसार उसे विकसित करते-करते हमें मानव तक ले आये। राम-कृष्ण-बुद्ध तक पहुंचाए। परंतु अभी भी ऐसा कहा जाता है कि राम-कृष्ण तो अवतारी हैं

मतलब पूर्ण ही है। पर हम मानव हैं। तब अभी भी पूर्णरूपेण मानवता प्रगट होने में बहुत वर्ष लगेंगे। ईश्वर तो प्रगट हो जाता है कारण कि वो तो 'कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथा कर्तुम्' समर्थ है। पर हम जब मानव हैं तब पता नहीं यहां पूर्ण मानव कैसा होगा? जिसे विश्वमानुष की परिकल्पना वेद में है और उसमें से 'विश्वमानुष' शब्द लेकर विनोबाजी ने अपनी साधना की कि इस जगत को 'विश्वमानुष' मिलना चाहिए। ऐसे विश्वमानुष की हम सब राह देख रहे हैं। पूर्ण मानव, वो आज हमें मिलना शेष है; अवतार तो मिले पूर्ण अवश्य, भले मानव होकर आये। पूर्ण अवतार वो कर सकता है। हमारा वश नहीं है। उसे अभी समय लगेगा। दो-तीन दिन पहले समाचार पत्र में ऐसी ख़बर आई, समाचार पत्र में मैंने पढ़ा कि दूसरे ग्रह पृथ्वी के सम्पर्क में आने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसा विज्ञान ने संशोधन शुरू किया है कि अन्य ग्रहों में कुछ है और पृथ्वी के लोगों से वो संपर्क करने की कोशिश कर रहे हैं परंतु असफल है। इसका मतलब ऐसा है कि हमारी अपेक्षा से वो कहीं विकसित सृष्टि है।

ऐसा एक परमतत्त्व पृथ्वी पर आया। अर्थात् पूर्णता पाने की हमारी झंखना है पर हमें संतोष मानना चाहिए कि हम मानव बने। और फ़िर जगद्‌गुरु शंकराचार्य को याद करूं, वो ऐसा कहते हैं कि 'दुर्लभंत्रयमवैतत।' इस जगत में तीन वस्तु दुर्लभ है। एक 'मनुष्यत्वं।' मनुष्यता दुर्लभ है। दूसरा 'मुमुक्षत्वं'; मनुष्य बनने के बाद उसे मुक्त होना है। उसको किसी के बंधन में नहीं रहना है। उसे किसी की उधारी रास नहीं आती। उसे निरंकुश रहना है। और तीसरी दुर्लभ वस्तु उन्होंने कही महापुरुषों का संग। फिर साधु कविता की रचना करे तब मुझे ऐसा लगता है कि उसने सामर्थ्य को थोड़ा अधिक बढ़ा दिया कि साधु कवि बना। वो कविता की रचना करे। केवल वीररस के ही गीत लिखे, युद्ध के ही गीत लिखे, तो कविवर टैगोर ऐसा कहते हैं वो वर्णी कवि है। मैं नहीं कहता, कविवर टैगोर कहते हैं वो वर्णी कवि है। वर्णी कवि अर्थात् वो कविता के वर्ण का क्षत्रिय है कि पूरी ज़िंदगी वीररस के ही गीत लिखे। युद्ध के ही गीत लिखे। बहुत महत्त्व है, बड़ा जरूरी है। पर उसे टैगोर वर्णी कवि कहते हैं। केवल ब्रह्मत्व की बातें करे उसे टैगोर ब्राह्मण कवि कहते हैं। और समाज के क्रय-विक्रय, समाज के व्यवहार, समाज के सभी संबंधों को संभालती ऐसी सुंदर कविता प्रस्तुत करे तो उसे टैगोर वैश्यवर्णी कवि कहते हैं। और दूसरे को उजला कर देने के लिए, दूसरे को बड़ा दिखाने के लिए, उसे पूज्य बनाने के लिए जो आदमी सतत सेवा में अपना जीवन समर्पित कर देता है ऐसे वंचितों का गीत लिखनेवाले, दलितों का गीत लिखनेवाले, उपेक्षितों का गीत लिखनेवाले, उसे कवि फिर एक चौथे वर्ण का कवि गिनाता है। पर कवि की एक अपेक्षा है टैगोर की कि इस समाज को बहुत से साधु कवि मिले हैं जो वर्ण सब को संभाले फ़िर भी वर्ण से पर होता है। मेरी दृष्टि से भगतबापू साधु कवि है। 'अवतार चरित्र' के रचयिता इशरदान साधु कवि हैं। वे वीररस ललकारें फिर क्या कहना? वे समाज को शिक्षा दें कि व्यवहार कैसे करना चाहिए तब उनका क्या कहना? वे ब्रह्म की चर्चा जब चलाते हैं तब ऐसा लगता है कि उपनिषद को भी ये माथे पर रखके, कंधे पर चढ़ा के ये कवि कहीं निकला है ऐसा ब्राह्मणत्व दर्शन कराते हैं। और फ़िर वे ही जब दलितों की बात प्रस्तुत करते हो तब ऐसा लगता कि कितना चारों वर्णों का सत्कार और फ़िर भी उसमें अध्यात्म, उसमें शील, उसमें साधना उसमें निहित भजन, ये सब जब वापस अंदर दिखते हो तब ऐसे कवियों को साधु कवि कहा जा सकता है। उसमें भगतबापू आते हैं।

मुझे अपनी दृष्टि से भगतबापू का मूल्यांकन करना हो तो ये है। और उनके गृहस्थान में उनके मूल्यांकन की बात है। काग के मुहल्ले तो हम प्रत्येक वर्ष मूल्यांकन करते हैं परंतु इनके गृहस्थान में। 'हरिरस' या 'देवयान' ये साधु कवि के सिवाय संभव नहीं है। साधु यानी कोई वर्ण तो है ही नहीं। साधुकुल में जन्में तो उन्हें सब साधु कहते हैं और इसका मुझे आनंद भी है। इसका अर्थ ये नहीं कि मैं उस तरह से 'साधु' शब्द का प्रयोग कर रहा हूं। 'साधु' शब्द यानी यहां बहुत ही जवाबदारीपूर्वक का शब्द है। ऐसे साधु कवि जब हमें मिलते हैं। साधुत्व यानी कि जिसमें भजन है। भगतबापू को मैंने देखा है साहब भाद्रोळ में। मैं छोटा था। देवायत मुखी के यहां भगतबापू आते और ऐसे संध्या का समय होता तब मेरी उपस्थिति में बनी हुई घटना। वे ऐसा कहते कि देवायत मुखी, अब दो अगरबत्ती दो और मुझको बरामदे में एक आसन लगा दो। मैं अंदर जाकर बैठूंगा। आधे घंटे बाद बाहर आऊंगा। तब मैं एक साधु के रूप में पकड़ता कि ये भजन का प्रकार है साहब! मंच पर ये भजनानंदी कवि है। उसे मैं साधु कहता हूं।

तो बापू कविता रचते हैं। और वो भी उन्होंने 'रामचरित मानस' में से धर्मरथ को धर्मगीता में परिवर्तित किया। तुलसीदासजी की यहां निरंकुशता है। स्वयं मनु श्रुतिकार धर्म के दस लक्षण बताते हैं। मनु ने कहा यानी बात पूरी हो गई। परंतु तुलसीदास की साधुता है इसलिए निरंकुशता जो दिखाई दी उसे बढ़ाते हुए धर्म के लक्षण धर्मरथ में डाले हैं ये भी उनकी निरंकुशता है। मूलत: जो कहा गया है

उसकी अपेक्षा अलग जाना है। ये उनकी अद्वितीय रीति है। ये उसकी स्वतंत्रता है कवि की। और ये हमेशा होनी चाहिए। उसी तरह बापू ने भी उसमें से फिर वापस धर्मगीता खड़ी की। और अपने ढ़ंग से अपनी बोली में उनका जो भी चिंतन है, विचार है वो फिर थोड़ा निरंकुश होकर उसकी स्वतंत्रता को अबाधित रखते हुए पुन: उसमें रखते हैं। अर्थात् कवि-सर्जक को निरंकुश होने का अधिकार है। परंतु अमुक जगह अधिकतर मंच पर जो बोला जाता है तब बहुत बार ऐसा होता है कि ये निरंकुशता गलत जगह प्रकट हो रही है। तब हम को ऐसा होता है कि इस नयी चेतना ने जो मंच को भारी किया है, मंच को जो लिफ्ट कर दिया है, वजनदार कर दिया है उन सब ने मंच की महिमा खूब संभाली है।

कवि को निरंकुश रहने का खूब अधिकार है। अवश्य अधिकार है। और कोई माई का लाल उसे छीन नहीं सकता है। आप 'महाभारत' के कर्ण को लीजिए बापू। और 'कर्णभार', भास के कर्ण को लीजिए। भास कितनी स्वतंत्रता लेते हैं! उसे तुम्हें कभी पुस्तक में पढ़ जाने की बिनती करता हूं। कवि भास, कालिदास और इन सब को पंक्ति में बैठाऊं तो पहला पीढ़ा किसीको देना ये मुश्किल हो जाये। ऐसा कवि भास। और उसने कर्ण पर एक नाटक लिखा जिसका नाम है 'कर्णभार।' पूरा संस्कृत में नाटक है। परंतु उसकी निरंकुशता कि व्यास एक तरफ खड़े हो जाये। वहां व्यास का अपमान नहीं करता है भास। परंतु कवि की सर्जन करने की जो सरस्वती उसकी जीभ पर जब आती है तब वो उसे रोक नहीं सकता। वह सरस्वती को ऐसा नहीं कह सकता कि तुम्हें ऐसे ही नाचना है। उसको छूट दे देता है। और उस समय जो रचना करता है उसमें उसकी अद्‌भुत निरंकुशता मुझे 'कर्णभार' में दिखती है।

भास का कर्ण, उसके पास कवच-कुंडल लेने के लिए इन्द्र छलपूर्वक आते हैं। ये सब युद्ध से पहले हो जाता है। ये पूरी कथा आप 'महाभारत' का मूल ग्रंथ देखे तो युद्ध शुरू हो उससे पहले ये सब मांग लिया जाता है। कवि भास कहता है, व्यास ने भले कहा है, मुझको ये मंजूर नहीं। मैं निरंकुश हूं। मुझको कर्ण का कवच-कुंडल कब लेवाना है इसकी मुझे स्वतंत्रता है। दुर्योधन का दूत कर्ण के शिबिर में आता है। कवि भास ऐसा नाटक में लिखते हैं। कर्ण के घुंघराले बाल हैं और भास कहते हैं कि मुझे पता नहीं कि उस समय लोग दाढ़ी काटते होंगे या नहीं? पर मुझे कर्ण की दाढ़ी थोड़ी-थोड़ी कटी हुई दिखी। थोड़ी उसकी मूछें कटी हुई दिखी। भाथा और धनुषबाण अपने हाथ से कमर में बांधा। ये निरंकुशता कवि की। ये भास का कर्ण कैसा है? नहीं तो जब क्षत्रिय तैयार हो रहा हो युद्ध के मैदान में तब राजा को भाथा भी बांध देनेवाले आते हैं। उसका सब कुछ कर देते हैं। जैसे ही दूत आया, भास का कर्ण ऐसा कहता है कि अपना भाथा मैं अपने हाथ से बांधूंगा। हां, रथ में जो दूसरे शस्त्र सहेजने हो उन सब को तुम व्यवस्थित जमा दो। परंतु अपना भाथा अपने आप बांधूंगा।

सुबह का समय है साहब! और सुबह के प्रहर में भगवान सूर्य ने कर्ण को इस तरह से तैयार होते हुए देखा। यहां दुर्योधन के दूत ने कह दिया कि आज से सेनापतिपद आप को स्वीकार करना है। इस युद्ध का सेनापतिपद आप को दिया जाता है। शैल आप का सारथि बननेवाला है। और दुर्योधन का आप से मित्र के अधिकार से आदेश है कि जिसकी ध्वजा में वानर है उसके समक्ष जिसकी ध्वजा में हाथी है उसके मित्र के रूप में आप को लड़ना है। और फ़िर आपको कथा की तो ख़बर है साहब कि कर्ण को स्वप्न में सूर्य ने अगली रात को ही सचेत कर दिया है कि व्यास के अनुसार कोई तुम्हारा कवच-कुंडल लेने आये तो पुत्र देना मत। ऐसा बाप ने चेतावनी दे दी है कर्ण को कारण कि साक्षी होती है उसमें से एक सूर्य अपना साक्षी है। हम सब कौन-सा कर्म कब करते हैं उसका एक बड़ा से बड़ा साक्षी हो तो भगवान भास्कर हैं। ये उन्होंने कह रखा था। परंतु जब पुत्र तैयार हुआ तब अधिक प्रसन्न हुआ सूर्य। रथ पर बैठा। शैल से कहा, रथ को ले चलो। पर शूरवीरता है। गज़ब का वीररस उसने प्रस्तुत किया है! पर रथ ज्यों ज्यों चलता है, पांडवों को जब वो देखता है तब मुख सहज म्लान हो गया और शैल ने पूछा, अंगराज! क्यों मुख थोड़ा म्लान? तो बोला कि नहीं, लडूंगा तो मन लगाकर लडूंगा। पर एक पीड़ा लेकर लड़ने आया हूं। क्या? राजा का पुत्र हूं, इतना ही यदि रहने दिया होता न तो मैं दुनिया को कहां से कहां पहुंचा देता पर मुझे हमेशा मैं कुंती का पुत्र, कुंती का पुत्र! ये जो मुझे मार डाला है न! ये जब पांचों को दिखता हूं तब मुझे लगता है ये कुंती के पुत्रों हैं और मैं सब से बड़ा हूं। ये मुझे कौन्तेय कहकर मुझको मार डाला गया है। और मुझे कहना है कि इच्छामृत्यु भीष्म की नहीं। यदि कविओं को-सर्जकों को न्याय देना हो तो इच्छा मृत्यु भीष्म की नहीं। है, उसे इच्छा मृत्यु कहा गया है पर भीष्म को इच्छा मृत्यु से पहले किसीने सामने से इच्छा मृत्यु स्वीकार किया हो तो वो सूर्यपुत्र कर्ण है।

यदि निरंकुशता कवि की ली हुई छूट है। जो व्यास नहीं ले सके, उसे भास ले सकते हैं। कारण कि वह सेनापति बनकर जब बाहर आया यह पीड़ा लेकर कि मुझे कौन्तेय कह

दिया, मुझे दु:ख देता है। राधेय कहा होता तो मुझे आनंद होता। ये पहचान मुझे पीड़ा पहुंचाई। ये उसका दु:ख है। युद्ध समाप्त होने पर कर्ण आता है और फ़िर वो ब्राह्मण उसके पास से कवच-कुंडल मागने आता है ऐसी 'महाभारत' में कथा है ही नहीं। वो तो पहले आता है। पर यह कवि की निरंकुशता है कि अपने कर्ण को जब मुझे लाना होगा तभी लाऊंगा। व्यास ये चुक गये हैं। उन्हें मुबारक। मुझे मेरा कर्ण उतारना है। और इसीलिए युद्ध की तैयारी। रणसिंघा बजा और शैल ने कहा कि महाराज, एक ब्राह्मण 'भिक्षाम् देहि' कह रहा है। मैदान में? दातार तो जहां खड़ा हो और कोई न कोई पहुंच जाये। आप से ये नहीं कहायेगा कि मेरे आश्रम पर आना तब दूंगा। दातार तो खेत में खड़ा हो तो भी देना पड़ेगा। किनारे खड़ा हो तो भी देना पड़ेगा। कोई मर गया हो और किसीकी चिता जल रही हो और वहां कोई आ जाये। दानी स्वभाव अलग वस्तु है। आप को देना ही पड़ेगा। 'बुलाओ ब्राह्मण देवता को।' बुलाया। मागीए। अंगदेश दे दूं? बिलकुल व्यास से अलग पड़ता है ये आदमी। अंत में कहता है, 'अपना प्राण दे दूं?' कि नहीं, नहीं ऐसा मुझको कुछ नहीं चाहिए। 'तो आप को क्या चाहिए?' 'मुझे कवच और कुंडल चाहिए।' अब कर्ण को नहीं पता कि मेरे बचने का साधन यही है? इसलिए भीष्म तो छह महिना बाद इच्छा मृत्यु। इस आदमी ने तो इच्छा मृत्यु को स्वीकार किया कि ले जा ब्राह्मण, ये मेरी इच्छा मृत्यु है। दादा बाद में इच्छा मृत्यु उनका लड़का पहले लेता है। उसे उतारकर दे दिया।

ब्राह्मण जाता है और लौटकर आता है। वापस आकर फ़िर कहता है कि इन्द्र को बहुत ग्लानि हुइ है आप का कवच कुंडल ले लेने से। पूरी योजना बनाकर बात करता है। बहुत ग्लानि हुई है। इसलिए विमला नामक एक शक्ति आप के लिए भेजी है। ये विमला नामक शक्ति आप रखिए। कवच कुंडल चला गया इसलिए आप मुश्किल में हैं। आप की मृत्यु कभी भी हो सकती है। आपने मृत्यु को सामने से स्वीकार किया है। परंतु जब विमला नामक शक्ति आप प्रयुक्त करेंगे तब आप जिसे मारना चाहोगे उसे मार डालोगे। ये ले लीजिए। तब भास का कर्ण ऐसा कहता है कि दान देनेवाले का लेनदेन का संबंध नहीं होता। यह कोई आपसी संबंध है? कि मैंने कवच दिया और तुम मुझे विमला शक्ति दो। मैं अपने ढ़ंग से लडूंगा। मैं ये विमला शक्ति नहीं लूंगा। जाओ।

गांधीजी का एक अंत:वासी टैगोर से मिलने गया। आठ दिन इनका और फ़िर टैगोर से कहा कि बापू और आप की दोनों के बीच इतनी मित्रता है तो आप कभी-कभी चरखा कांतो न। टैगोर को सलाह दी गांधीजी के अनुयायी ने। इसलिए गुरुदेव हंसे। दो दिन बीते। फ़िर विदाई ली वो गांधीजी के अनुयायी ने। इसलिए टैगोर ने कहा कि गांधीबापू के साथ इतनी मैत्री और आप मुझे सलाह दे रहे हैं कि चरखा कांते। मेरी इतनी ही सलाह बापू को कहिएगा कि गुरुदेव के साथ आप की इतनी मैत्री, एकाध कविता तो लिखिए। उन्हें कहना कि चरखा चलाना फ़िर शुरू करें। एक कविता तो लिखकर दिखाओ महात्मा! ये, ये निरंकुशता है कवि की। ये टैगोर की निरंकुशता है। और मैं समाज से प्रार्थना करता हूं कि किसी भी सर्जक को अंकुश में न बांधिए। वो आयेगा ही नहीं। आये वो सर्जक होगा ही नहीं। परंतु समाज ग्रंथि से, प्रतिष्ठा से किसी भी सत्ता से कोई सर्जक को अंकुश में लेने की कोशिश न करे। ये उसकी निरंकुशता समाज के कल्याण के लिए है, समाज के हित के लिए है ऐसा तलगाजरडा मानता है और मानता रहेगा।

तो कर्ण ने ऐसा कहा कि ये कोई लेनदेन का संबंध नहीं है कि मैंने कवच दिया और तुम्हारा इन्द्र मुझे ये विमला नामक शक्ति दे। ये तो व्यापार हुआ। ये तो व्यवहार हुआ। यहां व्यवहार नहीं होता। ब्राह्मण को लगा कि अब क्या करना? इन्द्र ग्लानि में है इसलिए ब्राह्मण ने कहा कि कर्ण, ब्राह्मण जो दे वो प्रसाद कहलाता है और प्रसाद का इन्कार करना ये तुम्हारे जैसे सूर्यपुत्र को शोभा नहीं देता। ऐसा कहकर बांधा। और फ़िर ऐसा कहा कि प्रसाद है तो ले लेता हूं। परंतु तुम भी सुन लो, इसका प्रयोग नहीं करूंगा। यह जो निरंकुशता है वह कवि की सत्ता है। यह कवि कर सकता है।

भास की ये निरंकुशता जब सामने आती है साहब! तब मुझे लगता है कि वाह! धन्य है! इसतरह पूरा करते हैं। शैल को कहते हैं कि रथ चलाओ! मर गया हूं। दादा से पहले मैं मृत्यु पाया हूं। इसका मुझे आनन्द हैं। परम्परा तो ऐसी है कि पहले दादा मरेगा फिर पुत्र। परन्तु आज पहले पुत्र मृत्यु पाने जा रहा है। ये दादा को खबर देना। ऐसी निरंकुशता कवि की, सर्जक की रहनी चाहिए। कारण कि कवि के पास केवल शब्द नहीं है साहब! कवि के पास केवल विचार नहीं है; कवि के पास वाणी है और विचार तथा वाणी में बहुत अन्तर हैं। आप विचार करके कभी रो नहीं सकते बाप! विचार रुला नहीं सकता। वाणी रुला सकती हैं। वाणी चीख पाडती है, वाणी रुदन कराती है इसलिए वाणी की महिमा शब्द की अपेक्षा ज्यादा है। वाणी की महिमा विचार से भी ज्यादा हैं। विचार ये मन का क्षेत्र है, वाणी ये परब्रह्म का क्षेत्र हैं। और इसीसे मेरा तुलसी वापस मदद करता है कि गणेश माफ़

करना किस भी कवियों ने शास्त्रीय परंपरा में पहले 'स्वस्तिश्री गणेशाय नमः' करके प्रारंभ किया है कविता का लेकिन गणपति मुझे माफ़ करना, मैं गणेश से शुरू नहीं करता। मैं 'वन्देवाणी' प्रथम वाणी की वंदना करूंगा और बाद में 'विनायक' और ये वाणी कौन है? इस वाणी का पति कौन है? 'सुमिरि गिरा पति प्रभु धन पामी।' सीता के पति राम ये तो सांसारिक संबध हैं। जनकी की पुत्री का। बाकी तुलसी कहते हैं कि राम तो वाणी के पति हैं। गिरापति, वो गिरापति और उनके हाथ में तुलसीदासजी दूसरा कुछ नहीं लिख सकते कि 'सुमिरि गिरापति प्रभु धन पामी।' हाथ में धनुषबाण ही क्यों? पर जिसके पास वाणी है उसके पास ऐक ऐसा धनुषबाण है कि जो हिंसा नहीं करता फिरभी मुझको और आपको इतने गहरे उतार देता है कि हम हिंसा करने में समर्थ नहीं रहते। ऐसा उनके हाथ में धनुषबाण हैं। उसमें उनकी ताकत हैं। तो बाप! कवि की निरंकुशता ऐसी हैं।

मुझको बापू ने पहले ही पुस्तक दे दी, उसे मैंने देख लिया। वैसे में कविता का मूल्यांकन नहीं कर सकता। हमारी यह विसात कहां? हां पर मैंने देखा कि वसंतबापू थोड़े निरंकुश हुए हैं इसमे। और ये कहना ही चाहिए। उसमें इन्हें अपनी जवाबदारी से कहना है। भगतबापू वही 'रामायण' के प्रसंग रखते हैं। वही 'महाभारत' के प्रसंग रखते हैं और फिर भी भगतबापू की जो स्वतंत्रता है साहब! हां, तुलसी की चौपाई की जिसे खबर नहीं होती न उसे ऐसा ही लगेगा कि ये भगतबापू ने जो भजन लिखा है वही 'रामायण' हैं। वहां तक यह वस्तु दृढ़ हो गई है ऐसा मेरा अनुभव कई बार कहता हैं। बाप! भगतबापू कितना-कितना अपना सामर्थ्य प्रस्तुत करें! खुदकी स्वतंत्रता हैं। तो ये साधुता हैं। साधु ये वर्ण नहीं है, साधु ये जाति नहीं हैं। शंकराचार्य कहते हैं कि एक ऐसा दुर्लभ तत्त्व हैं। साधुसंग एक ऐसा संग,ऐसा एक दुर्लभ तत्त्व है और ऐसे साधु के घर कविता उपजी। और ये वसन्तबापू की कविता को बेल कहूंगा कि ये बेल हैं? बेल तो नहीं कह सकता कारण कि बेल में तो अधिकतर प्रेम की कविताएं होनी चाहिए। प्रेम की कविताए हों उसे हम बेल कह सकते हैं। पर ऐसा तो नहीं कह सकते कारण कि बापू में तो वीररस हैं। और तुलसीदास ने वीररस कम लिखा है साहब?

एक साधु के घर ऐसा सुंदर काव्यपर्व आयोजित हुआ उसका एक साधु के रुप में मुझे बहुत आनन्द हैं। दो चेतना खूब प्रसन्न होती होंगी आज। ध्यानस्वामी बापा का आशीर्वाद तो होगा ही परन्तु हरिवल्लभदास बाप की चेतना खुश होती होगी। और सचमुझ बापू ये आपकी प्रशंसा न होगी पर आपकी कविता मैं जितना समझ सका हूं आपको सुनसुनकर मुझे समझ आयी हैं कि आपकी कविता में कुछ हैं। ये सब कढीन है बापू। आप जो रचते हैं और रचते रहेंगे,गाते रहेंगे आप झूठ ही डरते हैं। आपसे कथा होगी कि नहीं होगी! अरे, हम सब गये। एक धन्टा सुने। तोड डाले ऐसा गाते हैं! सुर में गाते हैं। पूरे गांव को रुलाकर साधु आया! कल ऐसी कथा करके आया इसलिए मनमें थोड़ा ऐसा हो गया कि मुझसे कथा होगी या नहीं। ऐसा कुछ नहीं हैं। हां, 'मूकं करोति वाचालं' साहब! 'मुक होई वाचाल।' ये तो आपके ऊपर कृपा हैं। इसलिए 'रामायण' को मूल में रखकर सभी रसों को बहाओ बाप! और आपके मूल में 'रामायण' है ही।

बस, विशेष कुछ कहने को शेष नहीं। परन्तु बापू जलालुदीन रुमी,उसके गुरु उससे मिले तो एक वाक्य कहे कि जलालुदीन मैं अबतक दुनिया में भटकता था। पर मेरे पास बैठकर मुझे पचा सके ऐसा कोई मुझको मिला नहीं। आज पहले तू मिला हैं। हम जिसके पास बैठे हैं न उसे पचाने की ताकत हममें आये और वो खुश हो कि उसके पास बैढनेवाला पचा सका इतना हम कर सकें तो भी बहुत है। तो आपने ये ये पुस्तक नहीं दिया, एक साधु ने मस्तक दिया हैं। नहीं तो क्षत्रिय माथा दे ये क्षत्रियों का धर्म हैं। पर आज विचार के रुप में,वाणी के रुप में जो गिनो वो,आप ने समाज को मस्तक प्रस्तुत किया हैं। और मस्तक अर्पण करना अर्थात् अहंकार छोड देना। माथा काट डालना प्रांसगिक नहीं हैं। अब तो ऐसे ग्रंथ दीजिए यही कमलपूजा हैं। समाज को समय नहीं हैं। समय के अनुसार आदर्श भी बदलने चाहिए। थोड़ी बहुत फेरफार आवश्यक हैं। परंतु अहंकार छूट जाये ये बड़ी से बड़ी कमलपूजा हैं। अन्त में इतना कहकर पूरा करूंगा कि टैगोर नौका में बैठकर जिसे हम गंगा कहते हैं उस नदी में रात को एक किताब के विषय में कुछ कर रहे हैं। मोमबत्ती जल रही है। टैगोर तो रसिक आदमी थे। वो उनका पूरा हुआ इसलिए फूंकमार के मोमबत्ती को बुझा दिये। उसको बुझा दिया तब उन्हें खबर पड़ी कि जिस नाव में बैठे थे उसे पूर्णिमा के चांद ने चारों ओर से चांदनी से भर दिया था! पर ये मोमबत्ती जलती थी न इसलिए मुझे दिखती न थी! अपने हाथ से अहंकार की जो मोमबत्ती प्रकाशित की है न उसे यदि हम फूंक मारकर बुझा दें न साहब तो चांद दिखेगा।

('काव्यपर्व' कार्यक्रम में अखेगढ (गुजरात) में प्रस्तुत वक्तव्य)

सांध्य-प्रस्तुति

श्री ओसमान मीर

श्री चिंतन पंड्या

श्री जय वसावडा

श्री नगीनदास संघवी

श्री लोर्ड भीखु पारेख

श्री लोर्ड डोलर पोपट

श्री सुमन शाह

श्री के.के.खख्खर

श्री शोभित देसाई

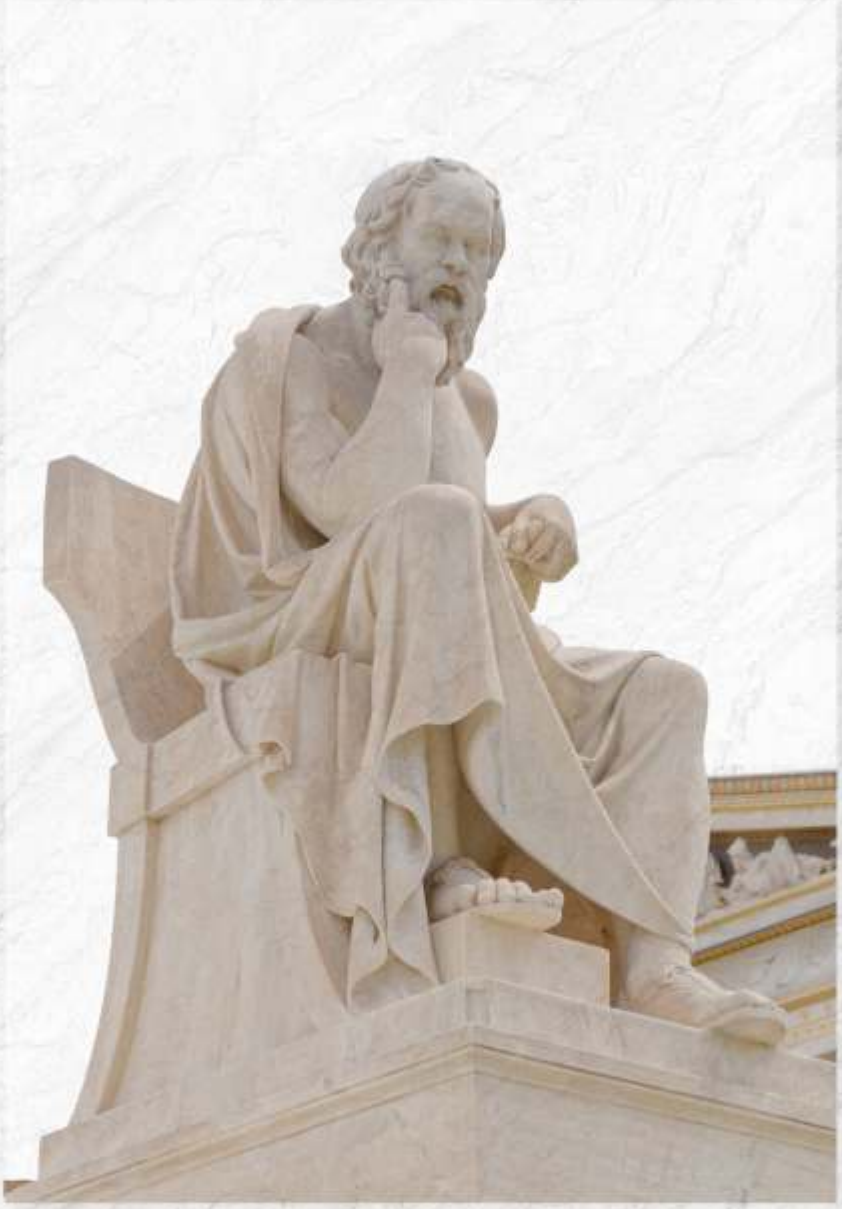

॥ जय सीयाराम ॥